VIVEKANANDA COLLEGE

UNIVERSITY OF DELHI

SUPPORTING DOCUMENTS FOR 3.3.2

The supporting documents for Metric No. 3.3.2 have been uploaded on the college website.

S.No	Author	Chapters Published	Page no.
1	Dr. Ratish Jha	Rāṣṭra Kī Saṁkalpanā III: Bhāratīya Sāhitya mein	1-4
2	Dr. Yojna Kalia	Naatak Padhane ke Karam mein	5-8
3	Dr. Saroj Kumari	Adhyaapan ki Paaramparik Vidhiyon ko Badalna Hoga	9-12
4	Dr. Saroj Kumari	Saamajik sadbhaav aur Gandhi ka Stri Vishayak Drishtikon	13-16
5	Dr. Saroj Kumari	Santkaviyon ke Stri Vishayak Drishtikon	17-20
6	Dr. Hina Nandrajog	Good Punjabi Women's: Home and Abroad	21-24
7	Dr. Hina Nandrajog	Echoes of the Flute: Songs and Stories of Love and Longing of the Gaddi Tribe	25-28
8	Dr. Sheetal	Ab Bhi Yahi Soch ki Ladka Hi Ho	29-31
9	Dr. Sheetal	Kavitaon mein Aruchi ke kaaran	32-36
10	Dr. Sheetal	Santkaviyon ke Stri Vishayak Drishtikon	37-40

11	Dr.Omvir Singh	Nai Kavita ke Paripreksshy me Agyey ka Bimbvidhaan evam kaavy	41-43
12	Dr. Deepa Varshney	Kashmir Prant ka Sangeet evam Lok Sangeet ke Vividh Aayaam	44-46
13	Dr. Sunil Kumar Verma	Values Beyond Boundary: A Theoretical Analysis	47-50
14	Dr. Pratibha Gemini	Kaavya Sikshan ke Vividh Staran	51-55
15	Dr. Rajni Jindal	Green Computing	56-61
16	Dr. Smriti Suman	The Indigenous and alternative Cosmopolitanism of Hindi cinema with a special focus on MRIGYA(1976)	62
17	Dr. Kamini Taneja	Sarjnatmak Bhasha Aevam Sanchar Bhasha	63-64
18	Dr. Hina Nandrajog	Fattu the Bard	65-69
19	Dr. Hina Nandrajog	You will Always Be My World	70-71
20	Dr. Hina Nandrajog	Come Sister Fatima	72-73
21	Dr. Hina Nandrajog	People of God translated from Allah Wale	74-78
22	Dr. Babita Kumari	Aadhunik Hindi Upanyaason mein Vargvaishamy	79-80
		Books Published	
23	**Dr. Saroj Kumari** & Dr. Yojana Kalia	Stree Lekhan ka Doosra Paridrashya	81-84
24	Dr. Saroj Kumari	Navjagran evam Chhayawad	85-87
25	Dr. Gyan Prakash	Chhayawadottar Kavya	88-89
26	Dr. Sheetal	Hindi Ke Madhyakalin Mahakavyon Mein Stree-Drishti	90-91
27	Dr. Yojna Kalia	Paarchatya Kavyashastra	92-95
28	Dr. Sheetal	Hindi Natak Aur Ekankki	96-97
29	Dr. Saroj Kumari & **Dr. Yojana Kalia**	Stree Lekhan ka Doosra Paridrashya	98-100
		Papers Published in Proceedings	
30	Dr. Saroj Kumari	Nirguniya Kavya ka Stree Paksh	101-103
31	Dr. Saroj Kumari	Stri Vimarsh ke Vividh Svar aur Facebook ki Kavita	104-106

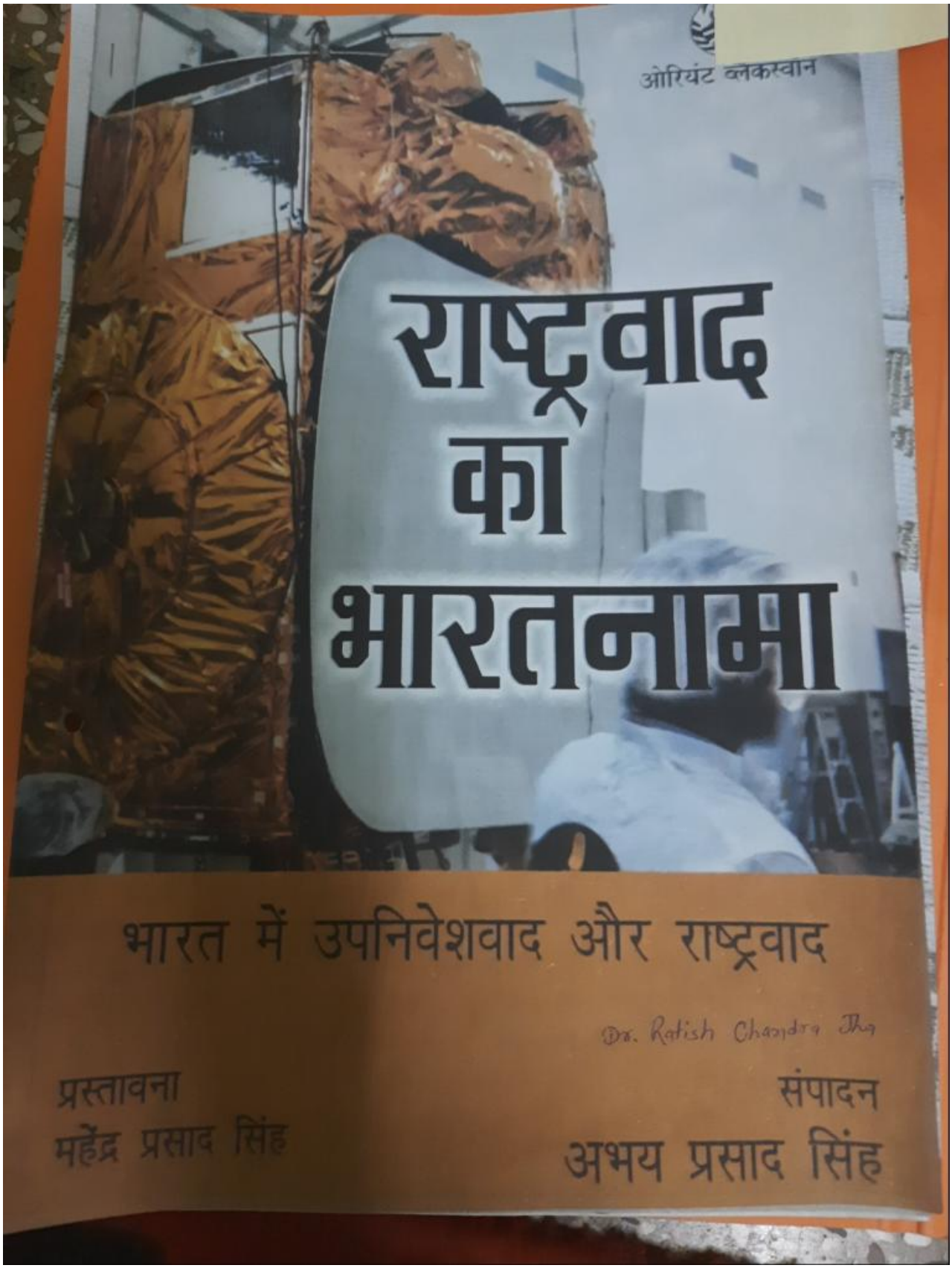
ओरियंट ब्लैकस्वान
राष्ट्रवाद
का
भारतनामा
भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद
Dr. Ratish Chandra Jha
प्रस्तावना
महेंद्र प्रसाद सिंह
संपादन
अभय प्रसाद सिंह

राष्ट्रवाद का भारतनामा : भारत में उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद

ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड

मुख्य कार्यालय

3-6-752 हिमायत नगर, हैदराबाद 500 029 तेलंगाना, भारत

ई-मेल: centraloffice@orientblackswan.com

शाखाएँ

बंगलुरू, भोपाल, चेन्नई, गुवाहाटी, हैदराबाद, जयपुर, कोलकाता, लखनऊ, मुंबई, नई दिल्ली, नोएडा, पटना, विजयवाड़ा

© ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, 2017

पहला संस्करण 2017

ISBN : 978 81 250 5889 2

पुस्तक सज्जा : ओरियंट ब्लैकस्वॉन

आवरण सज्जा : OSDATA, हैदराबाद

लेज़रटाइपसेटर

फ़िनॉमिनन टेक्नॉलॉजी, दिल्ली द्वारा वॉकमैन चाणक्य 12.5/15.5 में टंकणांकित

मुद्रक

यश प्रिंटोग्राफिक्स, नोएडा

प्रकाशक

ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड

3-6-752 हिमायत नगर, हैदराबाद 500 029 तेलंगाना, भारत

ई-मेल : info@orientblackswan.com

पुस्तक में संकलित लेखों में दिए गए विचार लेखकों के हैं। उनसे प्रकाशक की सहमति होनी आवश्यक नहीं है।

025430

31032017

Dr. Ratish Chandra Jha

विषय-क्रम

- **प्रस्तावना** : आधुनिक भारतीय राज्य की विकासवादी पृष्ठभूमि (xi)
  महेंद्र प्रसाद सिंह
- **विषय प्रवेश** : समकालीन विश्व में राष्ट्रवाद का दर्शन एवं राजनीति (xxv)
  अभय प्रसाद सिंह

1. **राष्ट्र की संकल्पना I : शास्त्रीय ग्रंथों में** 1
   दिलीप कुमार झा

   अपने-अपने राष्ट्र, राष्ट्र की अवधारणा, प्राचीन संस्कृत साहित्य में "राष्ट्र" शब्द का प्रयोग, भारत राष्ट्र, राष्ट्रीयता का स्वरूप

2. **राष्ट्र की संकल्पना II : बौद्ध ग्रंथों में** 14
   कृष्ण मुरारी

3. **राष्ट्र की संकल्पना III : भारतीय साहित्य में** 20
   रतीशचंद्र झा

4. **राष्ट्र की संकल्पना IV : ऐतिहासिक अनुशीलन में** 26
   आनन्द वर्द्धन

   राष्ट्रवाद का धर्मशास्त्रीय पक्ष राष्ट्रीय कला व स्थापत्य, राजा सर्फोजी द्वितीय का सरस्वती भंडार एवं भारतीय वांङमय का संग्रह

5. **राष्ट्रवाद के विभिन्न उपागम : भारत के संदर्भ में** 42
   अभय कुमार

   राष्ट्रवाद : एक आधुनिक संकल्पना, भारतीय राष्ट्रवाद के अध्ययन के प्रमुख उपागम, कैंब्रिज या साम्राज्यवादी स्कूल, मूल्यांकन, राष्ट्रवादी स्कूल, मार्क्सवादी स्कूल, मूल्यांकन, सबआल्टर्न उपागम

6. **भारत में अंग्रेजों का आगमन : औपनिवेशिक शासन की शुरुआत** 66
   सोनू कुमार

   अंग्रेजी सत्ता का सुदृढ़ीकरण, साम्राज्यवादी शासन : औचित्यता के प्रयास, नागरिक प्रशासन, कानून की स्थापना : संस्थागत प्रयास

7. **औपनिवेशिक भारत में आर्थिक एवं सामाजिक व्यवस्था** 87
   विनीत कुमार सिन्हा

Dr. Ratish Chandra Jha

अध्याय तीन

राष्ट्र की संकल्पना – III : भारतीय साहित्य में

Concept of Nation in Indian Literature

रतीशचंद्र झा

भारतवर्ष एक अतीव प्राचीन राष्ट्र है। आज भारत राष्ट्र की उन्नति और प्रगति वैश्विक परिप्रेक्ष्य में आत्मसम्मान का आधार है। इसकी पृष्ठभूमि में भारतवर्ष के दीर्घकालीन अनुभवप्रसूत ज्ञानभंडार का विशेष योगदान है। राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की अवधारणा को लोग प्राय: आधुनिक संकल्पना के रूप में ग्रहण करते हैं। परंतु प्राचीन भारतीय साहित्य में इसके स्वरूप, महत्त्व तथा तत्त्विषयक अनेकानेक संदर्भों से इस संबंध में भारतीय मनीष के विशद चिंतन का परिज्ञान होता है। यद्यपि पाश्चात्य विद्वान राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता की भावना को सर्वथा अर्वाचीन मानते हैं और भारत कभी भी एक राष्ट्र के रूप में विश्व के मानचित्र पर परिलक्षित नहीं होता है, ऐसा उद्घोष करते हैं; परंतु उनकी यह धारणा सर्वथा निराधार है और स्वार्थपूर्ति से ही अनुप्राणित है।

भारत सदैव एक सुसंगठित राष्ट्र के रूप में स्वयं को प्रस्तुत करता रहा है, जिसका निदर्शन प्राचीन संस्कृत साहित्य के अंतर्गत आने वाली ग्रंथराशि में से वैदिक साहित्यों, वाल्मीकिकृत *रामायण*, *विष्णुपुराण*, *मनुस्मृति* जैसे, विविध महाकाव्यों से होता है। साथ ही विपुल हिंदी साहित्य भी भारत-राष्ट्र और राष्ट्रीयता की इस भावना से ओत-प्रोत है। भारतीय साहित्यिक विमर्श में राष्ट्र विषयक संकल्पना को रेखांकित करना ही इस लेख का प्रधान उद्देश्य है।

Dr. Ratish Chandra Jha.

बदलते समय में साहित्य शिक्षण की प्रविधियाँ और चुनौतियाँ
सम्पादक : मुकेश बर्णवाल
₹ 425/-
अनन्य प्रकाशन
prakashananaya@gmail.com

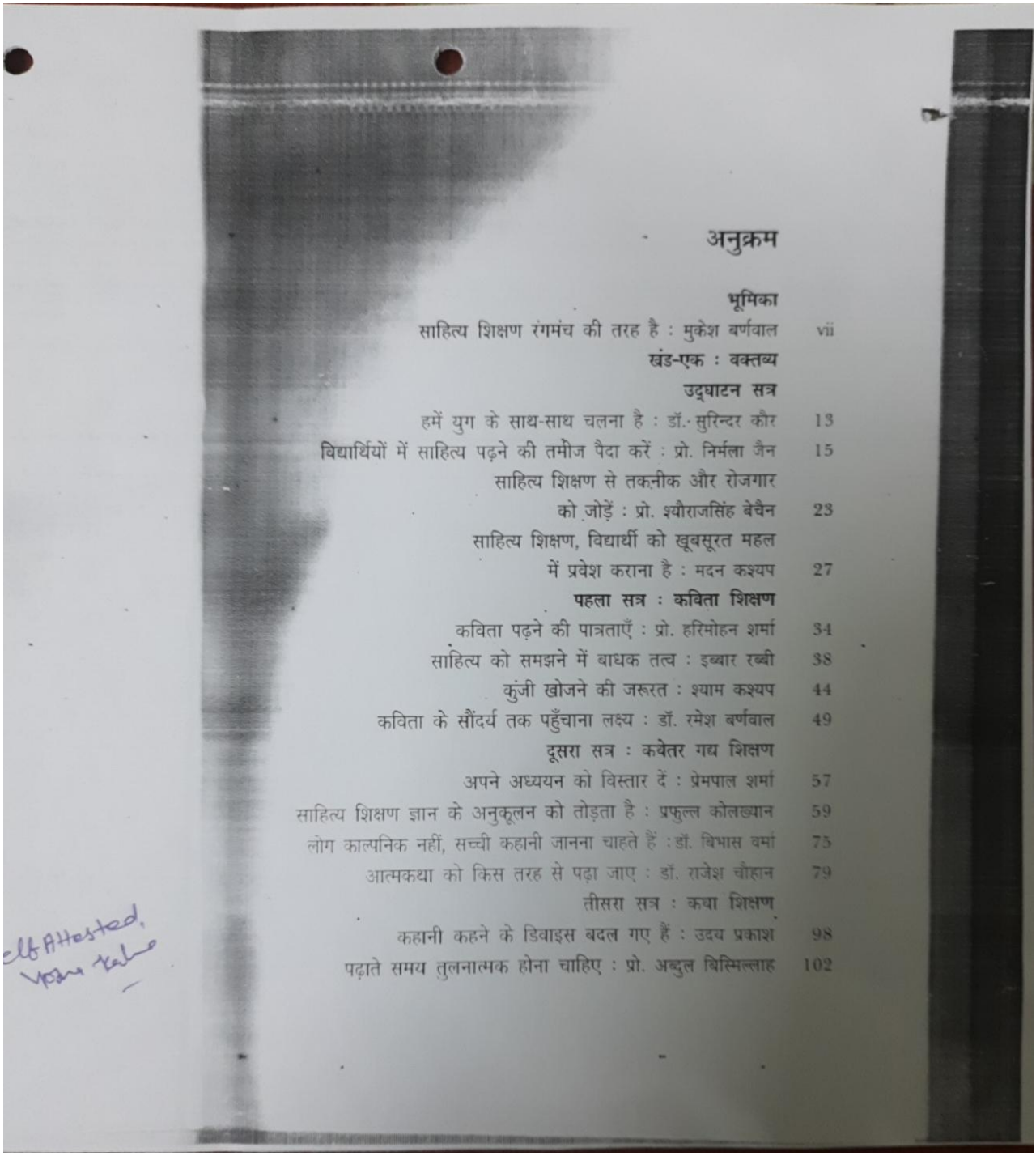

अनुक्रम

भूमिका
साहित्य शिक्षण रंगमंच की तरह है : मुकेश बर्णवाल vii
खंड-एक : वक्तव्य
उद्घाटन सत्र
हमें युग के साथ-साथ चलना है : डॉ. सुरिन्दर कौर 13
विद्यार्थियों में साहित्य पढ़ने की तमीज पैदा करें : प्रो. निर्मला जैन 15
साहित्य शिक्षण से तकनीक और रोजगार को जोड़ें : प्रो. श्यौराजसिंह बेचैन 23
साहित्य शिक्षण, विद्यार्थी को खूबसूरत महल में प्रवेश कराना है : मदन कश्यप 27
पहला सत्र : कविता शिक्षण
कविता पढ़ने की पात्रताएँ : प्रो. हरिमोहन शर्मा 34
साहित्य को समझने में बाधक तत्व : इब्बार रब्बी 38
कुंजी खोजने की जरूरत : श्याम कश्यप 44
कविता के सौंदर्य तक पहुँचाना लक्ष्य : डॉ. रमेश बर्णवाल 49
दूसरा सत्र : कवेतर गद्य शिक्षण
अपने अध्ययन को विस्तार दें : प्रेमपाल शर्मा 57
साहित्य शिक्षण ज्ञान के अनुकूलन को तोड़ता है : प्रफुल्ल कोलख्यान 59
लोग काल्पनिक नहीं, सच्ची कहानी जानना चाहते हैं : डॉ. बिभास वर्मा 75
आत्मकथा को किस तरह से पढ़ा जाए : डॉ. राजेश चौहान 79
तीसरा सत्र : कथा शिक्षण
कहानी कहने के डिवाइस बदल गए हैं : उदय प्रकाश 98
पढ़ाते समय तुलनात्मक होना चाहिए : प्रो. अब्दुल बिस्मिल्लाह 102

Self Attested,

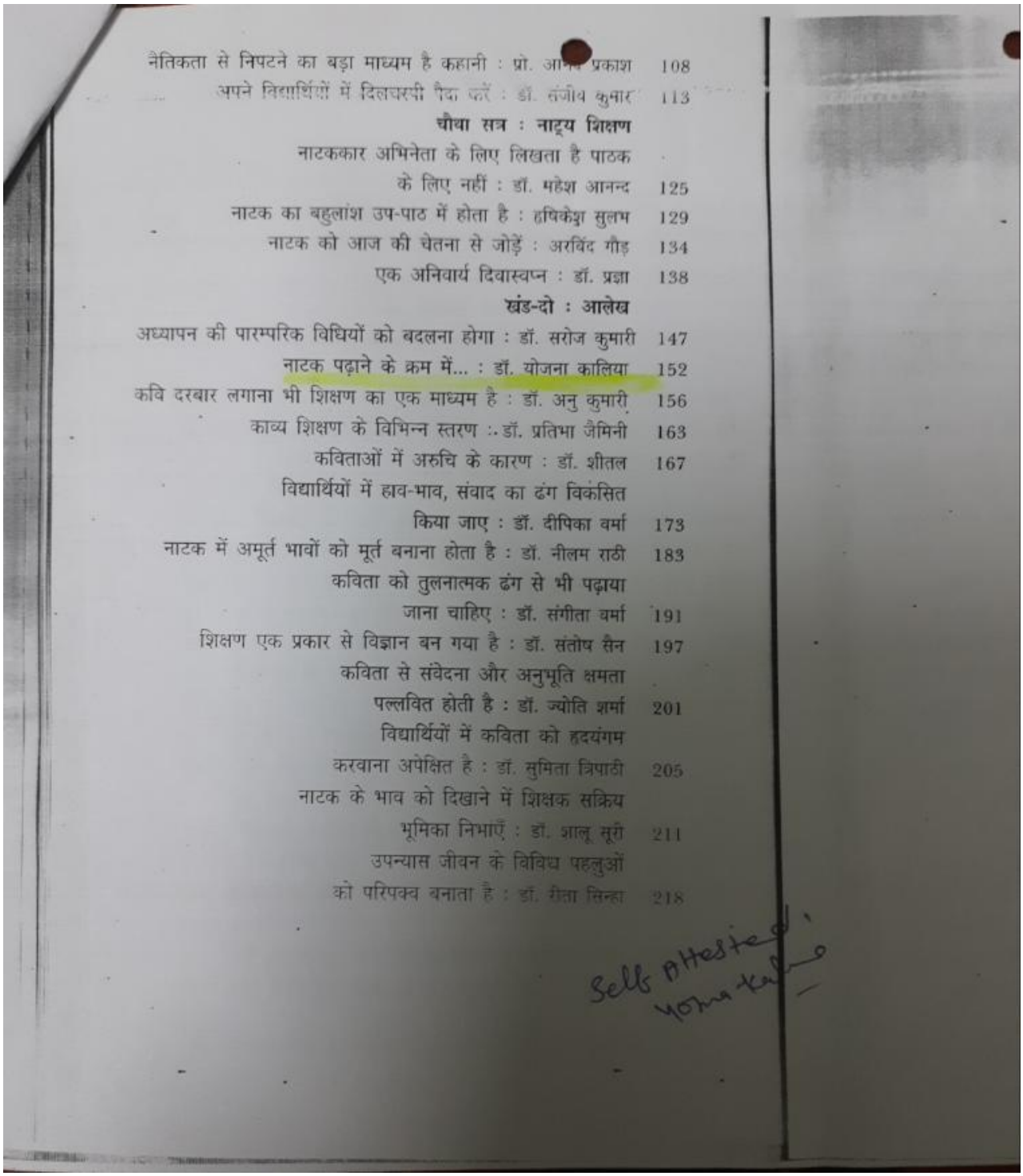

नैतिकता से निपटने का बड़ा माध्यम है कहानी : प्रो. आ[illegible] प्रकाश 108
अपने विद्यार्थियों में दिलचस्पी पैदा करें : डॉ. संजीव कुमार 113

चौथा सत्र : नाट्य शिक्षण

नाटककार अभिनेता के लिए लिखता है पाठक के लिए नहीं : डॉ. महेश आनन्द 125
नाटक का बहुलांश उप-पाठ में होता है : हृषिकेश सुलभ 129
नाटक को आज की चेतना से जोड़ें : अरविंद गौड़ 134
एक अनिवार्य दिवास्वप्न : डॉ. प्रज्ञा 138

खंड-दो : आलेख

अध्यापन की पारम्परिक विधियों को बदलना होगा : डॉ. सरोज कुमारी 147
नाटक पढ़ाने के क्रम में... : डॉ. योजना कालिया 152
कवि दरबार लगाना भी शिक्षण का एक माध्यम है : डॉ. अनु कुमारी 156
काव्य शिक्षण के विभिन्न स्तरण : डॉ. प्रतिभा जैमिनी 163
कविताओं में अरुचि के कारण : डॉ. शीतल 167
विद्यार्थियों में हाव-भाव, संवाद का ढंग विकसित किया जाए : डॉ. दीपिका वर्मा 173
नाटक में अमूर्त भावों को मूर्त बनाना होता है : डॉ. नीलम राठी 183
कविता को तुलनात्मक ढंग से भी पढ़ाया जाना चाहिए : डॉ. संगीता वर्मा 191
शिक्षण एक प्रकार से विज्ञान बन गया है : डॉ. संतोष सैन 197
कविता से संवेदना और अनुभूति क्षमता पल्लवित होती है : डॉ. ज्योति शर्मा 201
विद्यार्थियों में कविता को हृदयंगम करवाना अपेक्षित है : डॉ. सुमिता त्रिपाठी 205
नाटक के भाव को दिखाने में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाएँ : डॉ. शालू सूरी 211
उपन्यास जीवन के विविध पहलुओं को परिपक्व बनाता है : डॉ. गीता सिन्हा 218

Self Attested,
Yojna Kalia

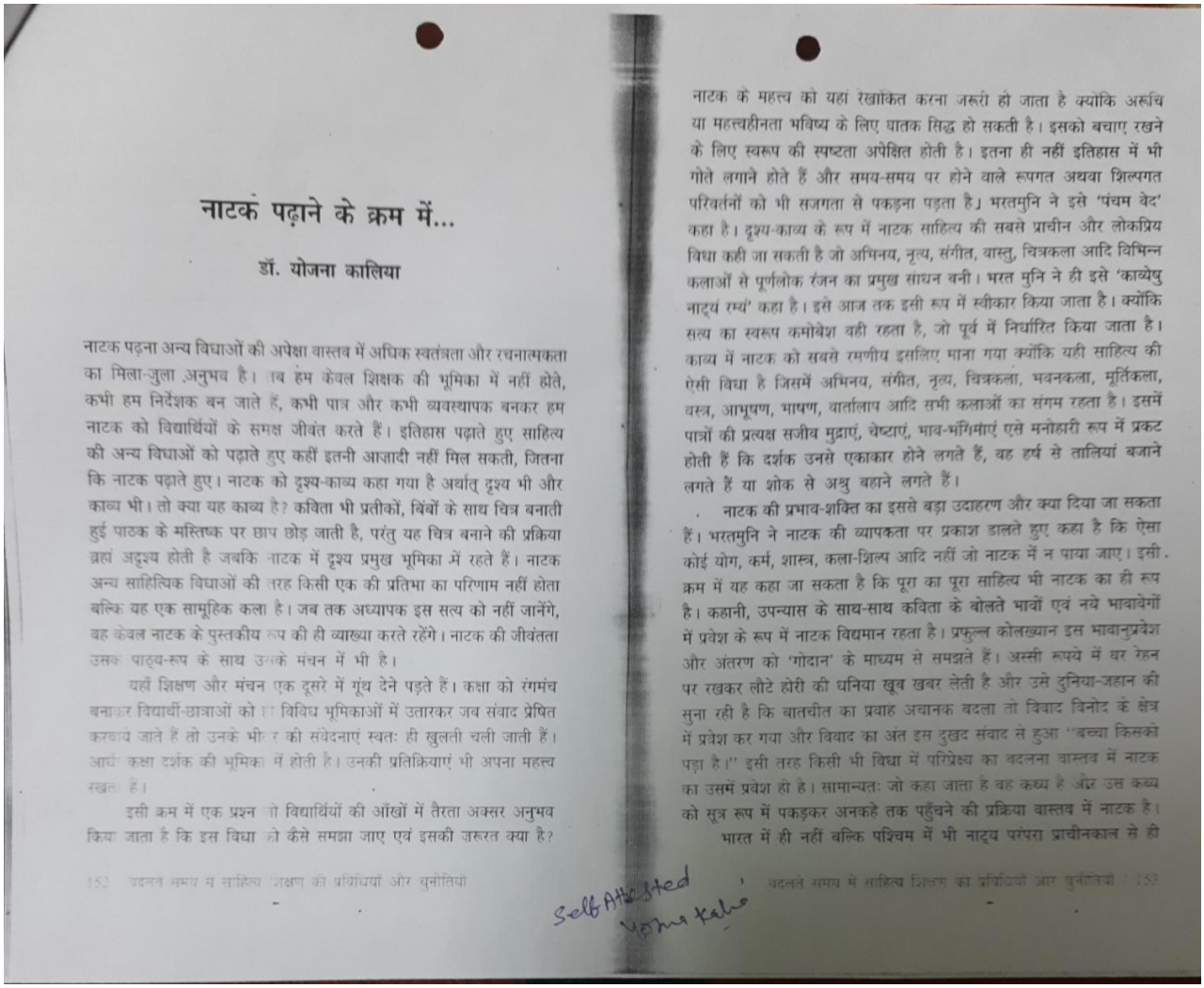

नाटक पढ़ाने के क्रम में...

डॉ. योजना कालिया

नाटक पढ़ना अन्य विधाओं की अपेक्षा वास्तव में अधिक स्वतंत्रता और रचनात्मकता का मिला-जुला अनुभव है। तब हम केवल शिक्षक की भूमिका में नहीं होते, कभी हम निर्देशक बन जाते हैं, कभी पात्र और कभी व्यवस्थापक बनकर हम नाटक को विद्यार्थियों के समक्ष जीवंत करते हैं। इतिहास पढ़ाते हुए साहित्य की अन्य विधाओं को पढ़ाते हुए कहीं इतनी आज़ादी नहीं मिल सकती, जितना कि नाटक पढ़ाते हुए। नाटक को दृश्य-काव्य कहा गया है अर्थात् दृश्य भी और काव्य भी। तो क्या यह काव्य है? कविता भी प्रतीकों, बिंबों के साथ चित्र बनाती हुई पाठक के मस्तिष्क पर छाप छोड़ जाती है, परंतु यह चित्र बनाने की प्रक्रिया वहां अदृश्य होती है जबकि नाटक में दृश्य प्रमुख भूमिका में रहते हैं। नाटक अन्य साहित्यिक विधाओं की तरह किसी एक की प्रतिभा का परिणाम नहीं होता बल्कि यह एक सामूहिक कला है। जब तक अध्यापक इस सत्य को नहीं जानेंगे, वह केवल नाटक के पुस्तकीय रूप की ही व्याख्या करते रहेंगे। नाटक की जीवंतता उसके पाठ्य-रूप के साथ उसके मंचन में भी है।

यहाँ शिक्षण और मंचन एक दूसरे में गूंथ देने पड़ते हैं। कक्षा को रंगमंच बनाकर विद्यार्थी-छात्राओं को विविध भूमिकाओं में उतारकर जब संवाद प्रेषित करवाये जाते हैं तो उनके भीतर की संवेदनाएं स्वतः ही खुलती चली जाती हैं। आधी कक्षा दर्शक की भूमिका में होती है। उनकी प्रतिक्रियाएं भी अपना महत्त्व रखती हैं।

इसी क्रम में एक प्रश्न जो विद्यार्थियों की आँखों में तैरता अक्सर अनुभव किया जाता है कि इस विधा को कैसे समझा जाए एवं इसकी ज़रूरत क्या है?

नाटक के महत्त्व को यहां रेखांकित करना जरूरी हो जाता है क्योंकि अरूचि या महत्त्वहीनता भविष्य के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। इसको बचाए रखने के लिए स्वरूप की स्पष्टता अपेक्षित होती है। इतना ही नहीं इतिहास में भी गोते लगाने होते हैं और समय-समय पर होने वाले रूपगत अथवा शिल्पगत परिवर्तनों को भी सजगता से पकड़ना पड़ता है। भरतमुनि ने इसे 'पंचम वेद' कहा है। दृश्य-काव्य के रूप में नाटक साहित्य की सबसे प्राचीन और लोकप्रिय विधा कही जा सकती है जो अभिनय, नृत्य, संगीत, वास्तु, चित्रकला आदि विभिन्न कलाओं से पूर्णलोक रंजन का प्रमुख साधन बनी। भरत मुनि ने ही इसे 'काव्येषु नाट्यं रम्यं' कहा है। इसे आज तक इसी रूप में स्वीकार किया जाता है। क्योंकि सत्य का स्वरूप कमोबेश वही रहता है, जो पूर्व में निर्धारित किया जाता है। काव्य में नाटक को सबसे रमणीय इसलिए माना गया क्योंकि यही साहित्य की ऐसी विधा है जिसमें अभिनय, संगीत, नृत्य, चित्रकला, भवनकला, मूर्तिकला, वस्त्र, आभूषण, भाषण, वार्तालाप आदि सभी कलाओं का संगम रहता है। इसमें पात्रों की प्रत्यक्ष सजीव मुद्राएं, चेष्टाएं, भाव-भंगिमाएं एसे मनोहारी रूप में प्रकट होती हैं कि दर्शक उनसे एकाकार होने लगते हैं, वह हर्ष से तालियां बजाने लगते हैं या शोक से अश्रु बहाने लगते हैं।

नाटक की प्रभाव-शक्ति का इससे बड़ा उदाहरण और क्या दिया जा सकता हैं। भरतमुनि ने नाटक की व्यापकता पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि ऐसा कोई योग, कर्म, शास्त्र, कला-शिल्प आदि नहीं जो नाटक में न पाया जाए। इसी क्रम में यह कहा जा सकता है कि पूरा का पूरा साहित्य भी नाटक का ही रूप है। कहानी, उपन्यास के साथ-साथ कविता के बोलते भावों एवं नये भावावेगों में प्रवेश के रूप में नाटक विद्यमान रहता है। प्रफुल्ल कोलख्यान इस भावानुप्रवेश और अंतरण को 'गोदान' के माध्यम से समझते हैं। अस्सी रूपये में घर रेहन पर रखकर लौटे होरी की धनिया खूब खबर लेती है और उसे दुनिया-जहान की सुना रही है कि बातचीत का प्रवाह अचानक बदला तो विवाद विनोद के क्षेत्र में प्रवेश कर गया और विवाद का अंत इस दुखद संवाद से हुआ "बच्चा किसको पड़ा है।" इसी तरह किसी भी विधा में परिप्रेक्ष्य का बदलना वास्तव में नाटक का उसमें प्रवेश ही है। सामान्यतः जो कहा जाता है वह कथ्य है और उस कथ्य को सूत्र रूप में पकड़कर अनकहे तक पहुँचने की प्रक्रिया वास्तव में नाटक है।

भारत में ही नहीं बल्कि पश्चिम में भी नाट्य परंपरा प्राचीनकाल से ही

Self Attested
Yojna Kalia

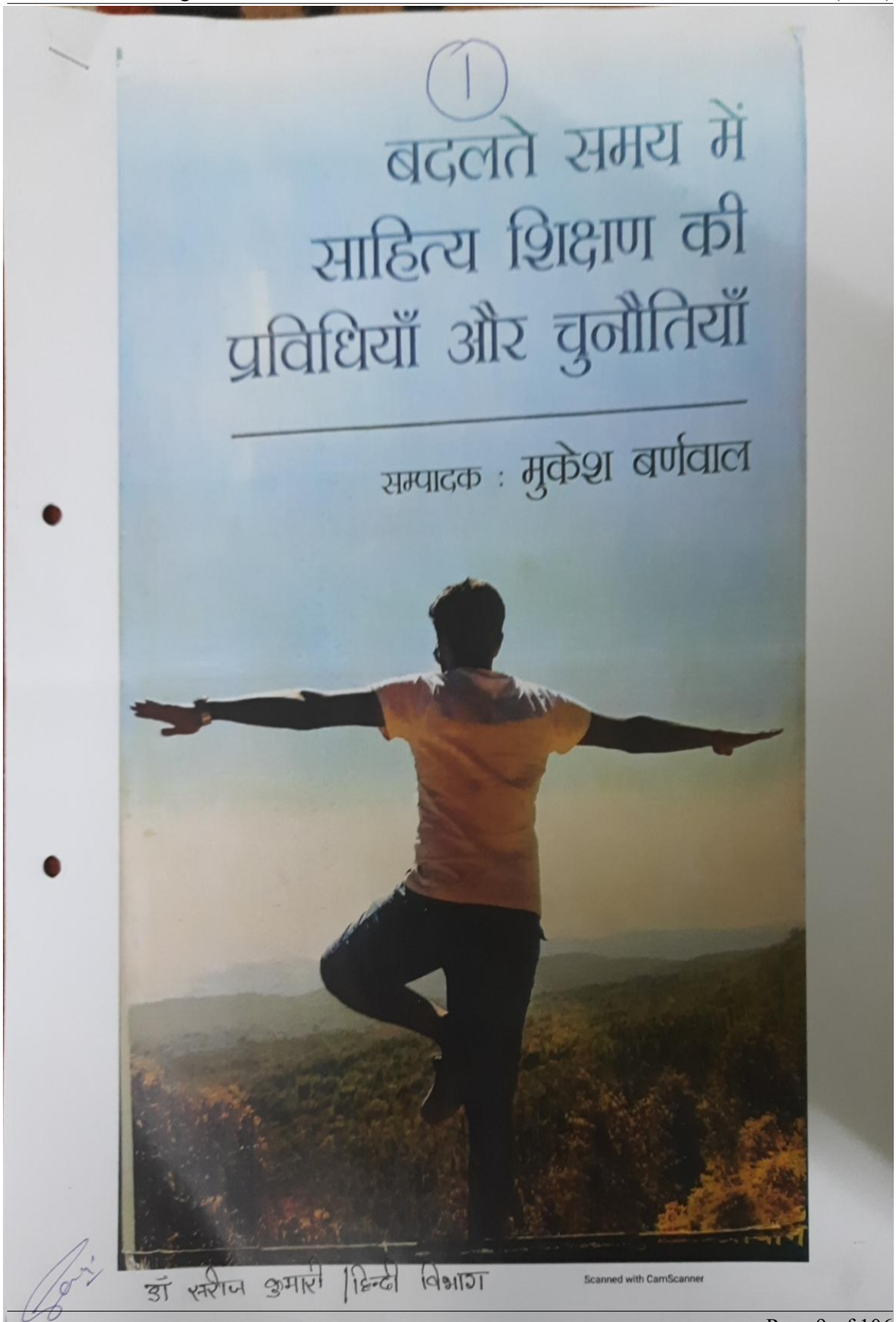
1
बदलते समय में
साहित्य शिक्षण की
प्रविधियाँ और चुनौतियाँ
सम्पादक : मुकेश बर्णवाल
डॉ सरोज कुमारी /हिन्दी विभाग
Scanned with CamScanner

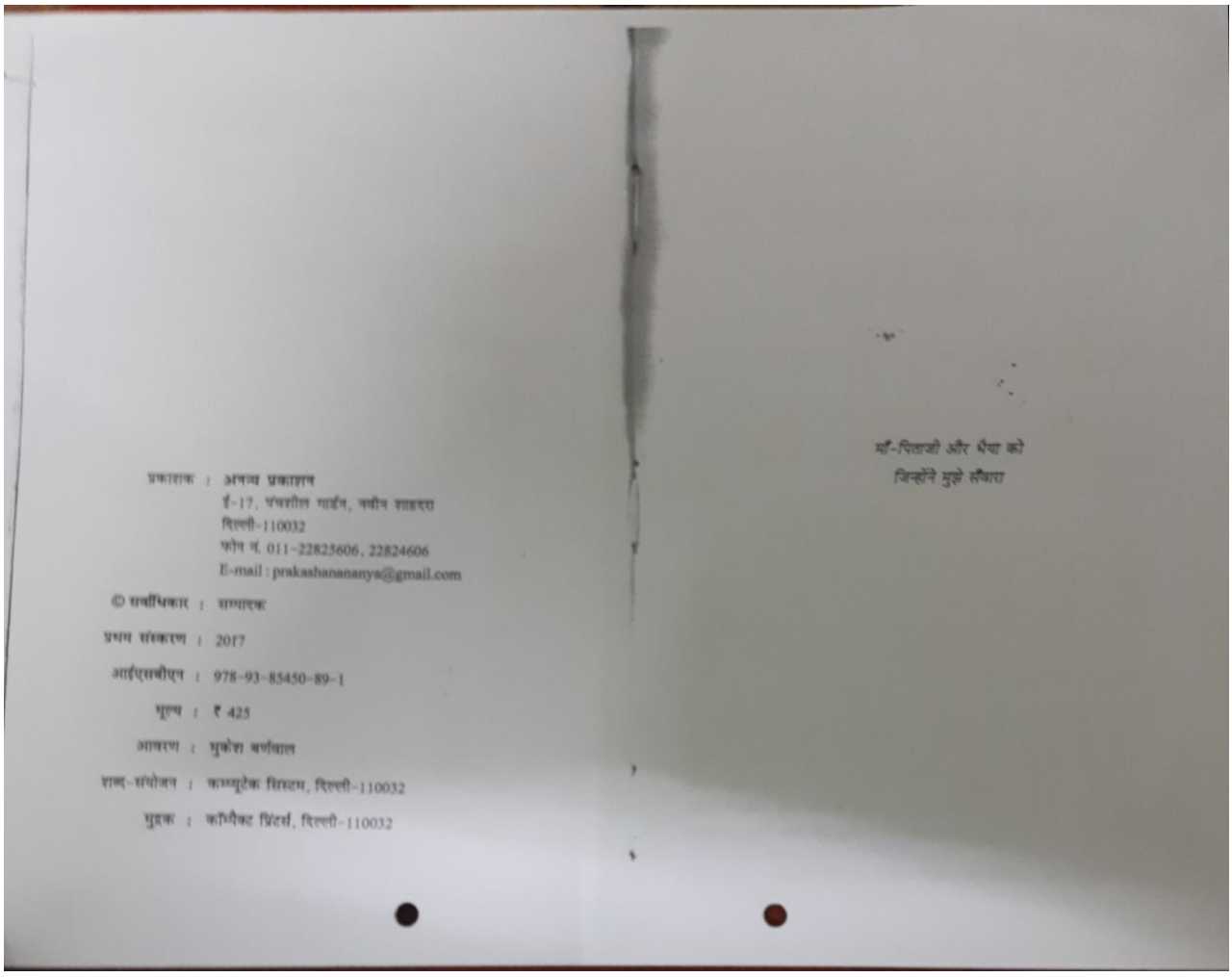

प्रकाशक : अनन्य प्रकाशन
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन नं. 011-22825606, 22824606
E-mail : prakashananya@gmail.com

© सर्वाधिकार : सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

आईएसबीएन : 978-93-85450-89-1

मूल्य : ₹ 425

आवरण : मुकेश अग्रवाल

शब्द-संयोजन : कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-110032

मुद्रक : कॉम्पैक्ट प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

माँ-पिताजी और भैया को
जिन्होंने मुझे सँवारा

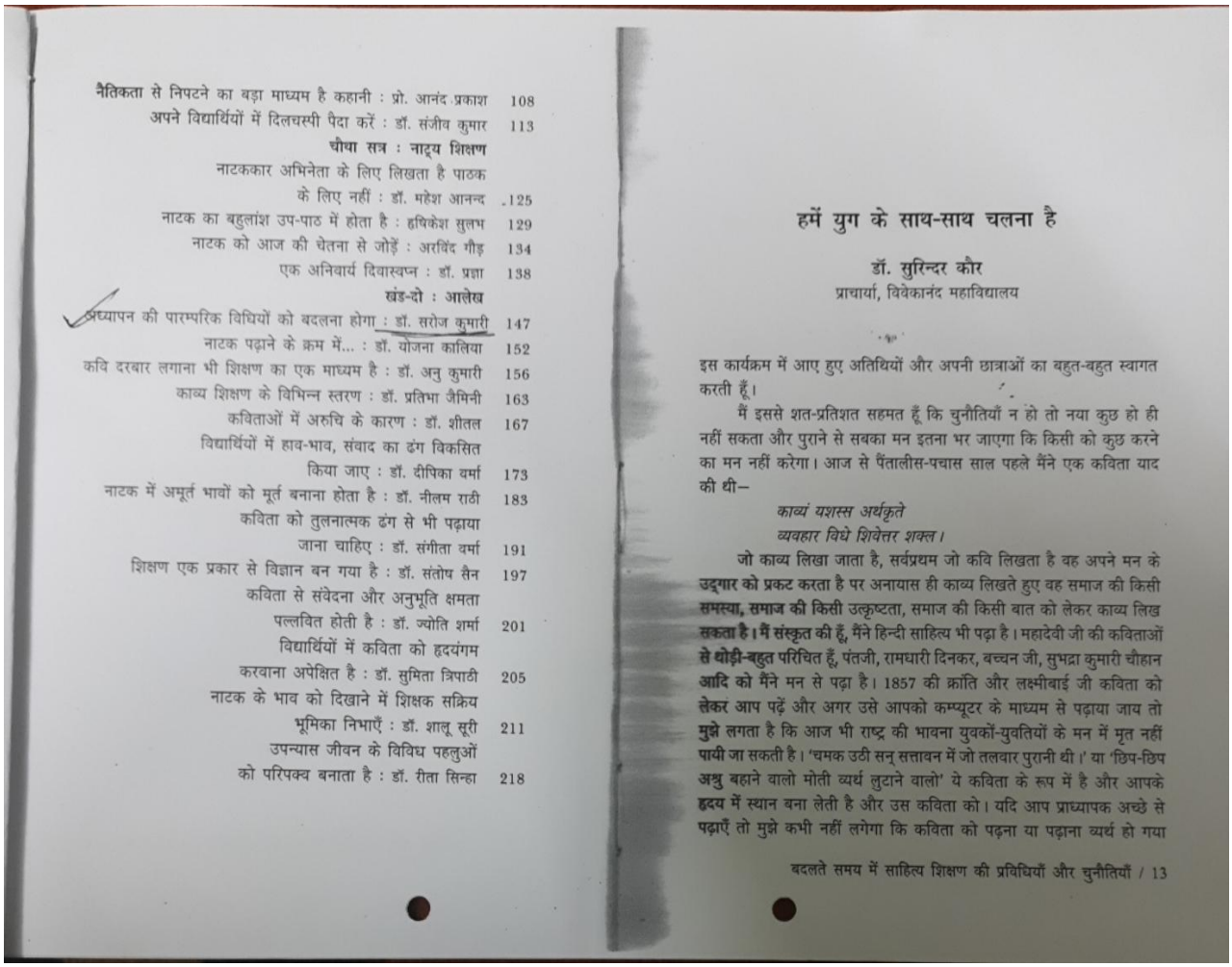

नैतिकता से निपटने का बड़ा माध्यम है कहानी : प्रो. आनंद प्रकाश 108
अपने विद्यार्थियों में दिलचस्पी पैदा करें : डॉ. संजीव कुमार 113

चौथा सत्र : नाट्य शिक्षण

नाटककार अभिनेता के लिए लिखता है पाठक के लिए नहीं : डॉ. महेश आनन्द 125
नाटक का बहुलांश उप-पाठ में होता है : हृषिकेश सुलभ 129
नाटक को आज की चेतना से जोड़ें : अरविंद गौड़ 134
एक अनिवार्य दिवास्वप्न : डॉ. प्रज्ञा 138

खंड-दो : आलेख

अध्यापन की पारम्परिक विधियों को बदलना होगा : डॉ. सरोज कुमारी 147
नाटक पढ़ाने के क्रम में... : डॉ. योजना कालिया 152
कवि दरबार लगाना भी शिक्षण का एक माध्यम है : डॉ. अनु कुमारी 156
काव्य शिक्षण के विभिन्न स्तरण : डॉ. प्रतिभा जैमिनी 163
कविताओं में अरुचि के कारण : डॉ. शीतल 167
विद्यार्थियों में हाव-भाव, संवाद का ढंग विकसित किया जाए : डॉ. दीपिका वर्मा 173
नाटक में अमूर्त भावों को मूर्त बनाना होता है : डॉ. नीलम राठी 183
कविता को तुलनात्मक ढंग से भी पढ़ाया जाना चाहिए : डॉ. संगीता वर्मा 191
शिक्षण एक प्रकार से विज्ञान बन गया है : डॉ. संतोष सैन 197
कविता से संवेदना और अनुभूति क्षमता पल्लवित होती है : डॉ. ज्योति शर्मा 201
विद्यार्थियों में कविता को हृदयंगम करवाना अपेक्षित है : डॉ. सुमिता त्रिपाठी 205
नाटक के भाव को दिखाने में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाएँ : डॉ. शालू सूरी 211
उपन्यास जीवन के विविध पहलुओं को परिपक्व बनाता है : डॉ. रीता सिन्हा 218

हमें युग के साथ-साथ चलना है

डॉ. सुरिन्दर कौर
प्राचार्या, विवेकानंद महाविद्यालय

इस कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों और अपनी छात्राओं का बहुत-बहुत स्वागत करती हूँ।

मैं इससे शत-प्रतिशत सहमत हूँ कि चुनौतियाँ न हो तो नया कुछ हो ही नहीं सकता और पुराने से सबका मन इतना भर जाएगा कि किसी को कुछ करने का मन नहीं करेगा। आज से पैंतालीस-पचास साल पहले मैंने एक कविता याद की थी–

काव्यं यशस्स अर्थकृते
व्यवहार विधे शिवेत्तर शक्त।

जो काव्य लिखा जाता है, सर्वप्रथम जो कवि लिखता है वह अपने मन के उद्‌गार को प्रकट करता है पर अनायास ही काव्य लिखते हुए वह समाज की किसी समस्या, समाज की किसी उत्कृष्टता, समाज की किसी बात को लेकर काव्य लिख सकता है। मैं संस्कृत की हूँ, मैंने हिन्दी साहित्य भी पढ़ा है। महादेवी जी की कविताओं से थोड़ी-बहुत परिचित हूँ, पंतजी, रामधारी दिनकर, बच्चन जी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि को मैंने मन से पढ़ा है। 1857 की क्रांति और लक्ष्मीबाई जी कविता को लेकर आप पढ़ें और अगर उसे आपको कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ाया जाय तो मुझे लगता है कि आज भी राष्ट्र की भावना युवकों-युवतियों के मन में मृत नहीं पायी जा सकती है। 'चमक उठी सन् सत्तावन में जो तलवार पुरानी थी।' या 'छिप-छिप अश्रु बहाने वाली मोती व्यर्थ लुटाने वाली' ये कविता के रूप में है और आपके हृदय में स्थान बना लेती है और उस कविता को। यदि आप प्राध्यापक अच्छे से पढ़ाएँ तो मुझे कभी नहीं लगेगा कि कविता को पढ़ना या पढ़ाना व्यर्थ हो गया

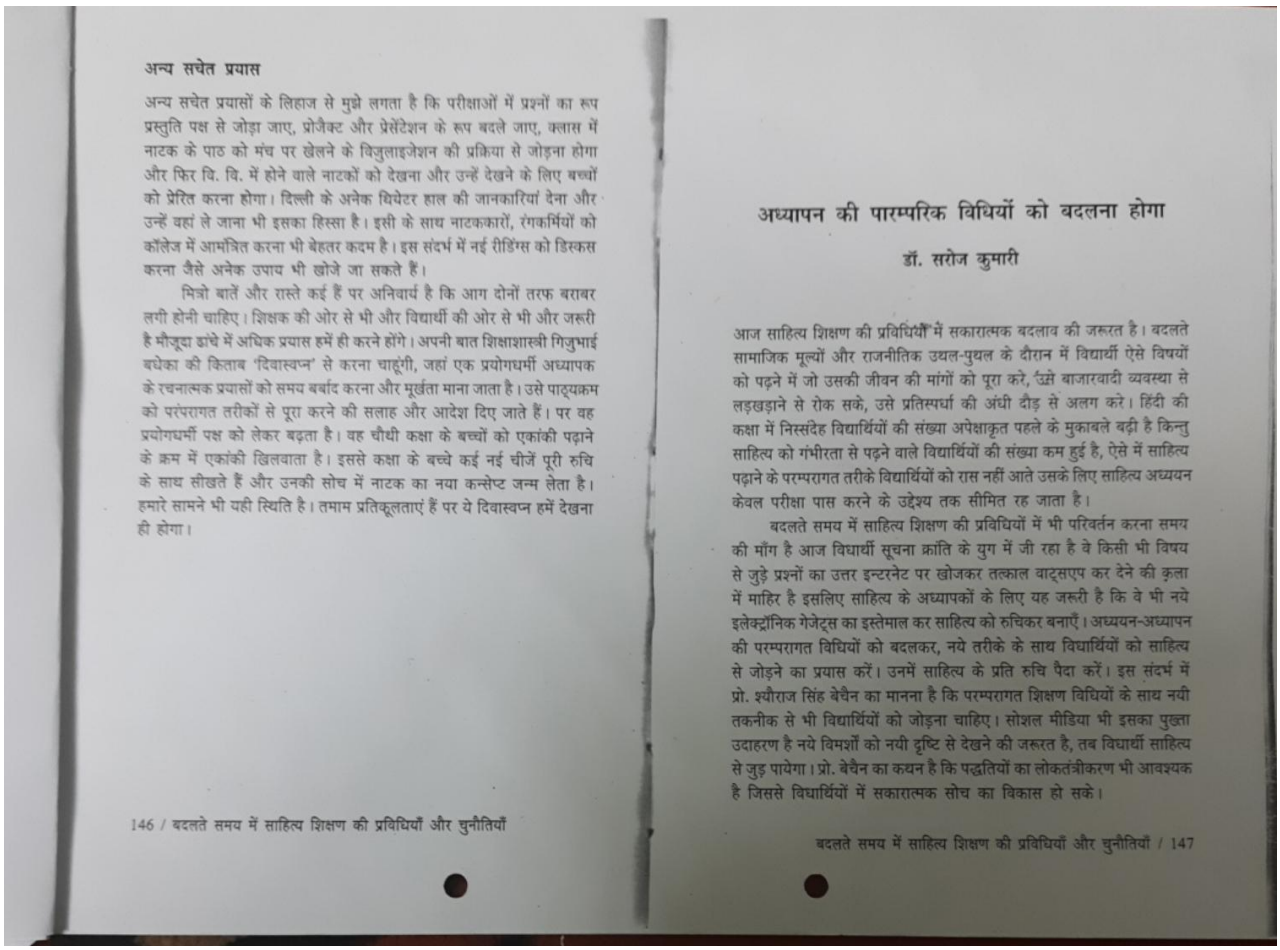

अन्य सचेत प्रयास

अन्य सचेत प्रयासों के लिहाज से मुझे लगता है कि परीक्षाओं में प्रश्नों का रूप प्रस्तुति पक्ष से जोड़ा जाए, प्रोजैक्ट और प्रेसेंटेशन के रूप बदले जाए, क्लास में नाटक के पाठ को मंच पर खेलने के विजुलाइजेशन की प्रक्रिया से जोड़ना होगा और फिर वि. वि. में होने वाले नाटकों को देखना और उन्हें देखने के लिए बच्चों को प्रेरित करना होगा। दिल्ली के अनेक थियेटर हाल की जानकारियां देना और उन्हें वहां ले जाना भी इसका हिस्सा है। इसी के साथ नाटककारों, रंगकर्मियों को कॉलेज में आमंत्रित करना भी बेहतर कदम है। इस संदर्भ में नई रीडिंग्स को डिस्कस करना जैसे अनेक उपाय भी खोजे जा सकते हैं।

मित्रो बातें और रास्ते कई हैं पर अनिवार्य है कि आग दोनों तरफ बराबर लगी होनी चाहिए। शिक्षक की ओर से भी और विद्यार्थी की ओर से भी और जरूरी है मौजूदा ढांचे में अधिक प्रयास हमें ही करने होंगे। अपनी बात शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका की किताब 'दिवास्वप्न' से करना चाहूंगी, जहां एक प्रयोगधर्मी अध्यापक के रचनात्मक प्रयासों को समय बर्बाद करना और मूर्खता माना जाता है। उसे पाठ्यक्रम को परंपरागत तरीकों से पूरा करने की सलाह और आदेश दिए जाते हैं। पर वह प्रयोगधर्मी पक्ष को लेकर बढ़ता है। वह चौथी कक्षा के बच्चों को एकांकी पढ़ाने के क्रम में एकांकी खिलवाता है। इससे कक्षा के बच्चे कई नई चीजें पूरी रुचि के साथ सीखते हैं और उनकी सोच में नाटक का नया कन्सेप्ट जन्म लेता है। हमारे सामने भी यही स्थिति है। तमाम प्रतिकूलताएं हैं पर ये दिवास्वप्न हमें देखना ही होगा।

146 / बदलते समय में साहित्य शिक्षण की प्रविधियाँ और चुनौतियाँ

अध्यापन की पारम्परिक विधियों को बदलना होगा

डॉ. सरोज कुमारी

आज साहित्य शिक्षण की प्रविधियों में सकारात्मक बदलाव की जरूरत है। बदलते सामाजिक मूल्यों और राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान में विद्यार्थी ऐसे विषयों को पढ़ने में जो उसकी जीवन की मांगों को पूरा करे, उसे बाजारवादी व्यवस्था से लड़खड़ाने से रोक सके, उसे प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ से अलग करे। हिंदी की कक्षा में निस्संदेह विद्यार्थियों की संख्या अपेक्षाकृत पहले के मुकाबले बढ़ी है किन्तु साहित्य को गंभीरता से पढ़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या कम हुई है, ऐसे में साहित्य पढ़ाने के परम्परागत तरीके विद्यार्थियों को रास नहीं आते उसके लिए साहित्य अध्ययन केवल परीक्षा पास करने के उद्देश्य तक सीमित रह जाता है।

बदलते समय में साहित्य शिक्षण की प्रविधियों में भी परिवर्तन करना समय की माँग है आज विद्यार्थी सूचना क्रांति के युग में जी रहा है वे किसी भी विषय से जुड़े प्रश्नों का उत्तर इन्टरनेट पर खोजकर तत्काल वाट्सएप कर देने की कला में माहिर है इसलिए साहित्य के अध्यापकों के लिए यह जरूरी है कि वे भी नये इलेक्ट्रॉनिक गेजेट्स का इस्तेमाल कर साहित्य को रुचिकर बनाएँ। अध्ययन-अध्यापन की परम्परागत विधियों को बदलकर, नये तरीके के साथ विद्यार्थियों को साहित्य से जोड़ने का प्रयास करें। उनमें साहित्य के प्रति रुचि पैदा करें। इस संदर्भ में प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन का मानना है कि परम्परागत शिक्षण विधियों के साथ नयी तकनीक से भी विद्यार्थियों को जोड़ना चाहिए। सोशल मीडिया भी इसका पुख्ता उदाहरण है नये विमर्शों को नयी दृष्टि से देखने की जरूरत है, तब विद्यार्थी साहित्य से जुड़ पायेगा। प्रो. बेचैन का कथन है कि पद्धतियों का लोकतंत्रीकरण भी आवश्यक है जिससे विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच का विकास हो सके।

बदलते समय में साहित्य शिक्षण की प्रविधियाँ और चुनौतियाँ / 147

वर्तमान परिदृश्य और गाँधी
सम्पादक
डॉ. रमा
डॉ. विजय कुमार मिश्र
महेन्द्र प्रजापति
डॉ. रमा
डॉ. विजय कुमार मिश्र
महेन्द्र प्रजापति
SAMVAD MEDIA PVT. LTD.
Price : ₹ 550
डा० सरोज कुमारी
2

वर्तमान परिदृश्य और गाँधी

संपादक :
डॉ. रमा
डॉ. विजय कुमार मिश्र
महेन्द्र प्रजापति

ISBN : 978-93-84280-28-4

प्रकाशक :
संवाद मीडिया प्रा. लि.
एफ-29, अंसारी मार्केट, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23517803
ई-मेल : media.samvad@gmail.com

प्रथम संस्करण : 2017
मूल्य : ₹ 550

मुद्रक : एम.के. प्रिंटर्स, कमला नगर,
नई दिल्ली-110007

© प्रकाशक

Published by
Samvad Media Pvt. Ltd.
F-29, Ansari Market, Dariyaganj,
New Delhi-110002
Phone : 011-23517803
Email : media.samvad@gmail.com

First Edition : 2017
Price : ₹ 550

गाँधीवादी विचारों एवं आदर्शों
को
जीवन पर्यन्त आत्मसात्
करने वाली
श्रद्धेय स्वर्गीय डॉ. सत्या जांगिड
को
सादर समर्पित

विषय सूची

- भूमिका 9
- गाँधी दर्शन में 'ईश्वर' की अवधारणा
  डॉ. आमिर रियाज 11
- गाँधी और सदाचरण
  डॉ. अनु कुमारी 18
- सामाजिक सद्भाव और गाँधी मार्ग
  अनुराग शर्मा 22
- सामाजिक सद्भाव और गाँधी का स्त्री विषयक दृष्टिकोण
  डॉ. सरोज कुमारी 25
- पर्यावरण सम्बन्धी वैश्विक चिन्ताएँ और गाँधी चिन्तन
  विचित्र नारायण पाण्डेय 30
- पर्यावरण सम्बन्धी वैश्विक चिन्ताएँ और गाँधी दर्शन
  वंदना 33
- पर्यावरण और गाँधी
  डॉ. अमित सिंह 37
- बाजारीकरण के दौर में खादी और गाँधी
  दीपक जायसवाल 41
- महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन
  डॉ. रमा 47
- शिक्षा एवं भाषा के सम्बन्ध में गाँधी जी के विचार
  डॉ. ओमवीर सिंह 52
- गाँधी का भाषा चिंतन और राष्ट्रभाषा हिंदी
  डॉ. विजय कुमार मिश्र 56
- महात्मा गाँधी की भाषा दृष्टि और वर्तमान का सन्दर्भ
  आशीष कंधवे 62
- गाँधी का भाषा-चिंतन और वर्तमान संदर्भ
  डॉ. प्रतिमा 67
- गाँधी जी और हिंदी पत्रकारिता
  चारु चौहान 73
- गाँधी की अहिंसा, सामाजिक सद्भाव और साहित्य
  डॉ. स्नेहलता नेगी 81
- गाँधीवादी परिदृश्य में विकास के पथ का लोकज्ञान
  संजय कुमार एवं अमित कुमार 88
- महात्मा गाँधी: युगीन संदर्भ में एक विश्लेषण
  डॉ. सारिका कालरा 101
- समकालीन परिप्रेक्ष्य और गाँधी चिंतन
  नीतू शर्मा 105
- आज के युग में गाँधीवाद की प्रासंगिकता
  डॉ. शर्मा भानू भूपेन्द्र 109
- वर्तमान समय, समाज और गाँधी
  डॉ. वीणा शर्मा 117
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में गाँधी दर्शन की उपादेयता
  डॉ. कामिनी तनेजा 122
- महात्मा गाँधी का अहिंसावादी दर्शन : एक समीक्षात्मक विश्लेषण
  डॉ. सत्येन्द्र श्रीवास्तव 125
- महात्मा गाँधी: जीवन, दर्शन और प्रभाव
  मणि कुमार 143
- भारतीय चिंतन का विकास और महात्मा गाँधी
  तरुण 149

Vivekananda College SSR 2022 Criterion 3.3.2 (2017)

पारम्परिक मूल्यवाची पदों में नयी गरिमा और नयी अर्थवत्ता पैदा कर दी और ऐसा उन्होंने मात्र कलम के जोर से नहीं किया जो कि वस्तुतः सम्भव भी नहीं था। प्रत्युत अपने जीवन में पूरी निष्ठा ईमानदारी के साथ इनके वैचारिक स्वरूप को व्यवहार और कर्म में उतारा। गांधी जी की यही विशेषता। उन्हें दुनिया के सभी महापुरूषों में विशिष्ट बनाती है कि उन्होंने विचार और कर्म में पार्थक्य नहीं किया इस दृष्टि से सत्य और अहिंसा का जीवन में प्रयोग करते हुए आचरित करते हुए, उन्होंने इनके प्रभाव को अति महनीय बना दिया। उनके पहले कौन यह सोच सकता था कि सत्य और अहिंसा का साधन रूप में मार्ग की तरह प्रयोग किया जा सकता है। चूंकि साधन और साध्य की एकता का तर्क शुरू से ही गाँधी की चेतना में मूलतम रूप में पैठ चुका था इसलिए विश्वशांति, विश्व सद्भाव, सामाजिक समस्या, पारस्परिक सौहार्द्र जैसे प्रयोजनों के लिए स्वभावतः सत्य और अहिंसा ही मार्ग रूप में प्राप्त होते हैं तथा गाँधी ने इसी मार्ग की आजीवन तपस्या की तथा विश्व समुदाय को इसका पाठ पढ़ाया, आज भी ये मार्ग उसी तरह उपादेय और प्रमाणिक हैं। इतना ही नहीं विश्व में जब-जब जहाँ-जहाँ सद्भाव में कमी पायी जायेगी अनायास ही किन्तु अनिवार्य रूप से गाँधी के मार्ग की मौजूदगी भी अपेक्षित होगी।

सामाजिक सद्भाव और गाँधी का स्त्री विषयक दृष्टिकोण

डॉ. सरोज कुमारी

''नारी ईश्वर की सर्वोकृण कृति है, वह अहिंसा की अवतार है तथा अपने धार्मिक आग्रहों के परिप्रेक्ष्य में वह पुरुष जाति से कोसों आगे है।'' गाँधी जी का यह कथन उनके स्त्री विषयक दृष्टिकोण को समझने के लिए काफी है। गाँधी न्याय, समानता और शांति के प्रेरक रहे। उनका दर्शन समाज और देश के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है। उनकी धारणा सर्वथा स्पष्टवादी है। समाज के दो आधारभूत अंगों में स्त्री और पुरुष दोनों की समान भागीदारी आवश्यक है, किन्हीं अर्थों में स्त्री की सहभागिता पुरुष की सहभागिता से कहीं अधिक अपेक्षित है। उन्होंने कई स्थानों पर इस तथ्य का उल्लेख किया है कि उन्होंने सत्याग्रह का पहला पाठ अपनी माँ से सीखा। गाँधी सदैव स्त्री-पुरुष समानता के पक्षधर रहे किन्तु लैंगिक भिन्नता के स्तर पर उन्होंने स्त्री और पुरुष स्त्रियों को बच्चों के पालन पोषण के लिए अलग-अलग जिम्मेदारी निभाने की वकालत उन्होंने की। इस तथ्य पर गहराई से विचार किया जाए तो गाँधी जी के सामाजिक विकास हेतु मानदण्ड बेहद सटीक एवं निश्चित होते थे। परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है। परिवार के विकास पर समाज का विकास टिका होता है और जिस देश का समाज जितना सुदृढ़ होगा, शिक्षित होगा, विकसित होगा, वह देश उसी दिशा में विकास की पटरी पर दौड़ेगा। गाँधी जी का स्पष्ट गन्तव्य था कि- ''महिलाएं मुख्य रूप से घर की गृहणी होती है। वह रोटी रखने व बांटने वाली होती है। नौनिहालों की उत्तम परवरिश महिलाओं की मुख्य व एकाधिकारपूर्ण जिम्मेदारी होती है। बिना उसके लालन-पालन के मानवता का अस्तित्व कदापि संभव नहीं है।''[1] गाँधी जी ने घरेलू प्रबंधन में पुरुषों की भूमिका निर्धारित की और अन्य घरेलू क्रियाकलापों में स्त्री की भूमिका। एक ओर वे समृद्धि की रचना के अनुसार स्त्री और पुरुष की समानता की बात करते हैं तो दूसरी ओर परिवार

Page 16 of 106

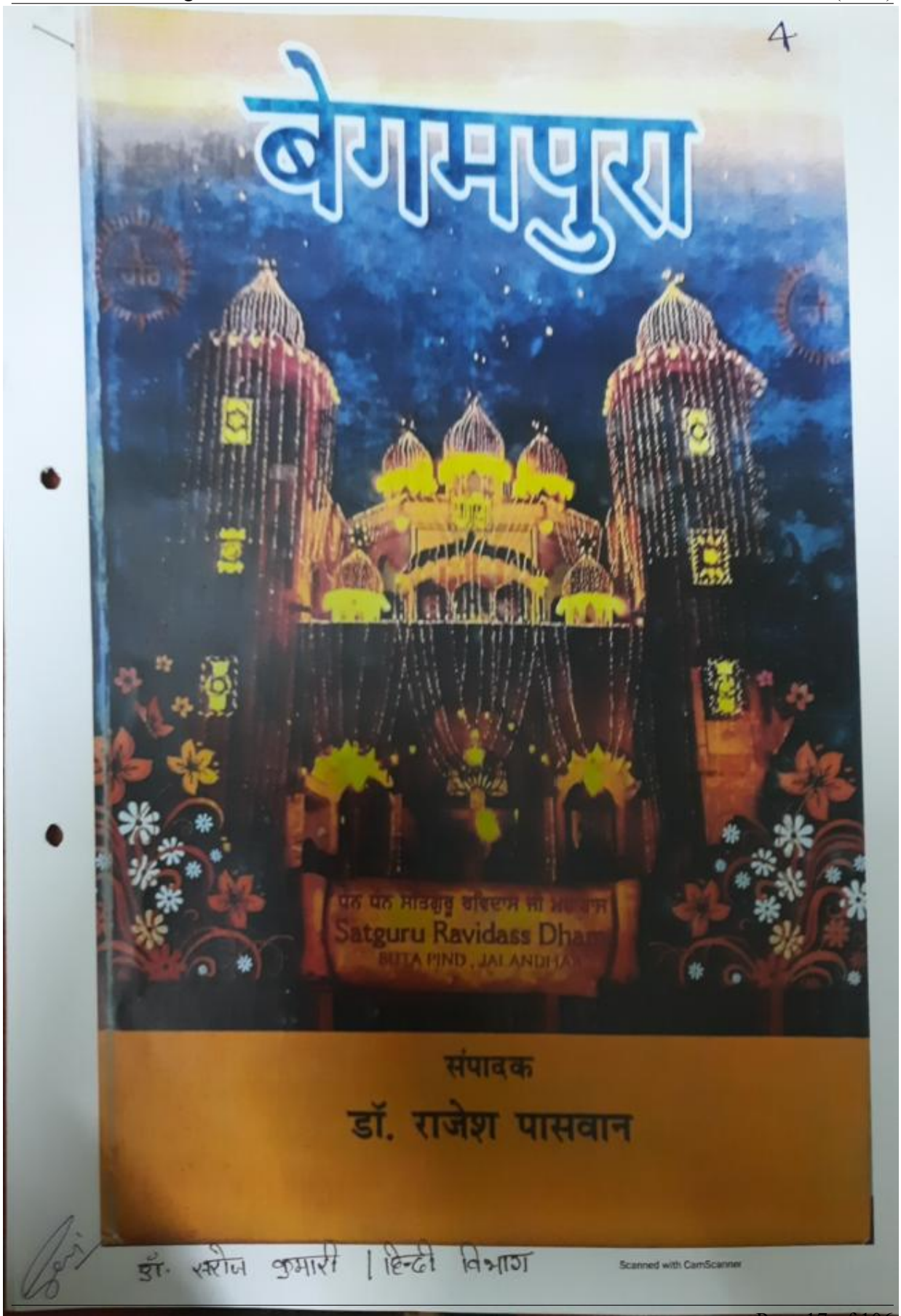

4
बेगमपुरा
Satguru Ravidass Dham
संपादक
डॉ. राजेश पासवान
डॉ. सरोज कुमारी | हिन्दी विभाग
Scanned with CamScanner

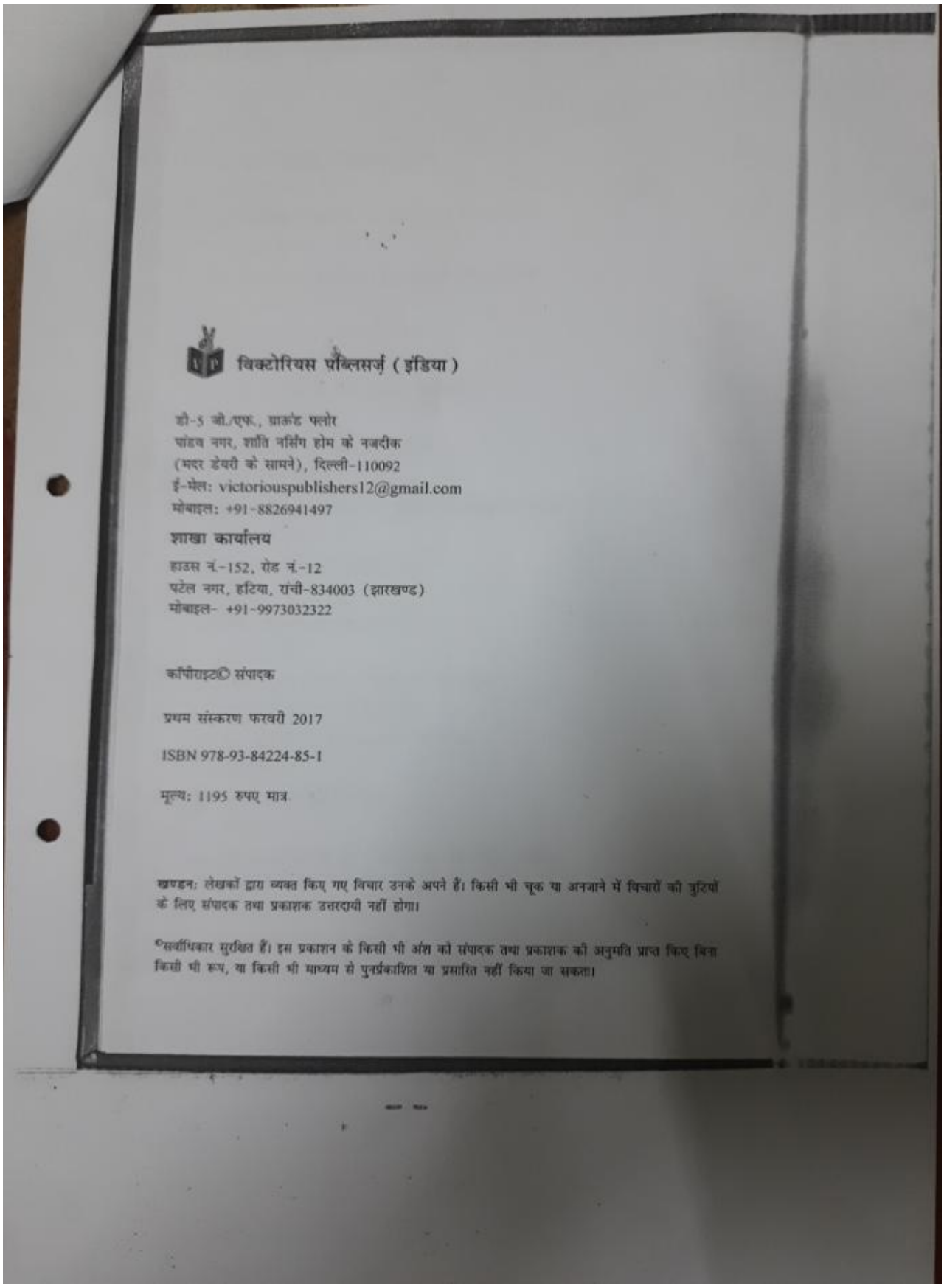

विक्टोरियस पब्लिसर्ज़ (इंडिया)

डी-5 जी./एफ., ग्राऊंड फ्लोर
पांडव नगर, शांति नर्सिंग होम के नजदीक
(मदर डेयरी के सामने), दिल्ली-110092
ई-मेल: victoriouspublishers12@gmail.com
मोबाइल: +91-8826941497

शाखा कार्यालय

हाउस नं.-152, रोड नं.-12
पटेल नगर, हटिया, रांची-834003 (झारखण्ड)
मोबाइल- +91-9973032322

कॉपीराइट© संपादक

प्रथम संस्करण फरवरी 2017

ISBN 978-93-84224-85-1

मूल्य: 1195 रुपए मात्र

खण्डन: लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। किसी भी चूक या अनजाने में विचारों की त्रुटियों के लिए संपादक तथा प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होगा।

©सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन के किसी भी अंश को संपादक तथा प्रकाशक की अनुमति प्राप्त किए बिना किसी भी रूप, या किसी भी माध्यम से पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

13. संत रैदास का सामाजिक चिंतन — 61-66
सना फातिमा

14. मध्यकालीन समाज एवं दलित वर्ग : संत रविदास — 67-69
संध्या चौरसिया

15. **Present Situation of Ravidassia Community** — 70-77
Dr. Sanjay Kumar Bhasin

16. हिन्दू धर्म एवं संतगुरु रविदास — 78-81
डॉ. संजीव रंजन 'अमरेश'

17. संत कवियों के स्त्री-विषयक दृष्टिकोण — 82-86
डॉ. सरोज कुमारी

18. दलितों के उद्धारक संत रविदास — 87-92
डॉ. सीमा चन्द्रन

19. संत रविदास के काव्य में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश — 93-97
शबनम तब्बसुम

20. संत रविदास की दार्शनिक पद्धति — 98-103
शहाना

21. संत रविदास का दार्शनिक चिंतन — 104-107
शाईस्ता सैफी

22. कबीर और रविदास : वैचारिक अंतःसंबंध — 108-111
शर्मिला राठी एवं श्रुति सुधा आर्य

23. संत कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण — 112-116
डॉ. शीतल

24. जो दीसै सो सकल समाया — 117-134
शीलबोधि

25. संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास का सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक चिंतन एवं बौद्ध धर्म — 135-145
डॉ. शिवचरन सिंह पिप्पल

26. संत रविदास की दंत कथाएं — 146-148
शुमायला कौसर

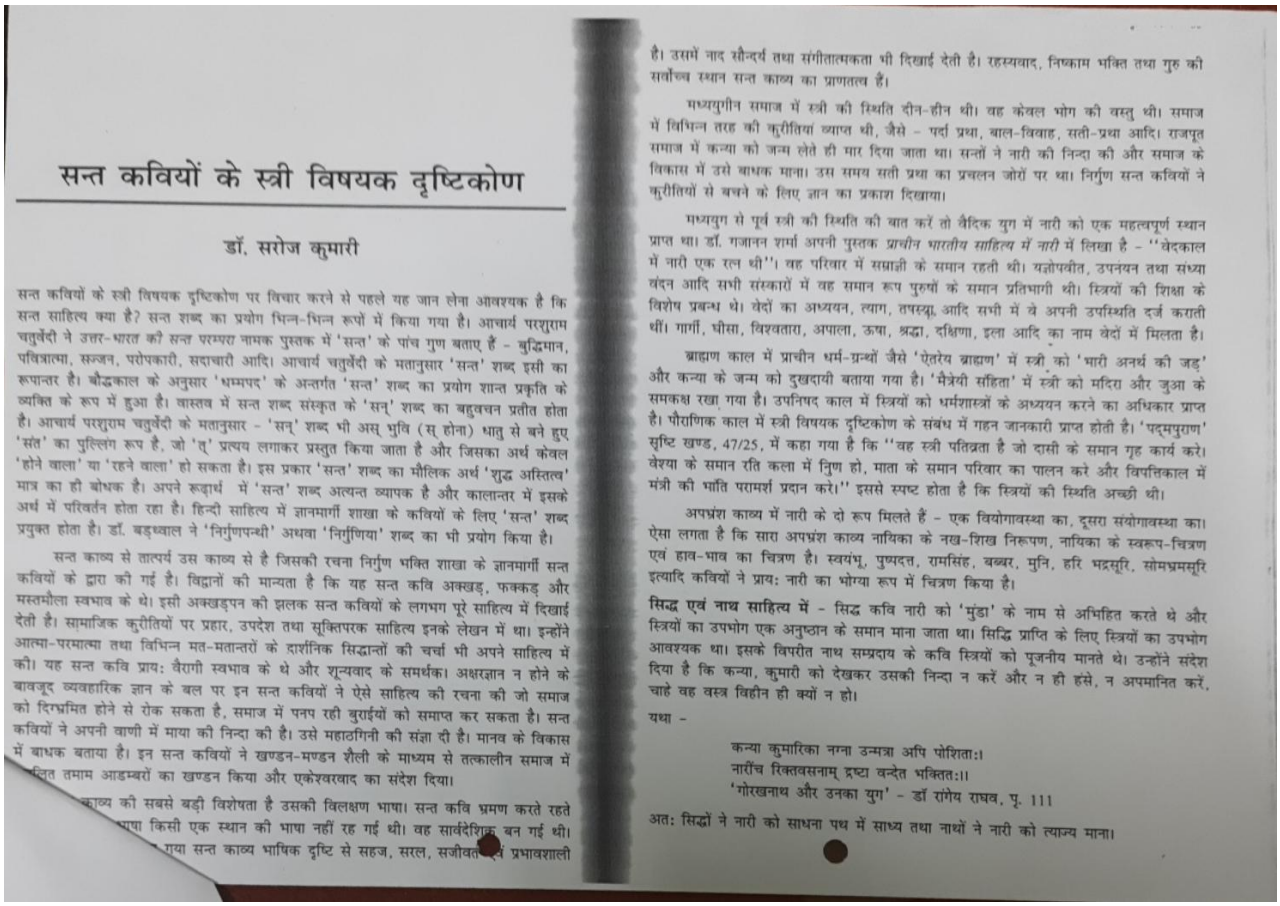

सन्त कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण

डॉ. सरोज कुमारी

सन्त कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण पर विचार करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि सन्त साहित्य क्या है? सन्त शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न रूपों में किया गया है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने *उत्तर-भारत की सन्त परम्परा* नामक पुस्तक में 'सन्त' के पांच गुण बताए हैं - बुद्धिमान, पवित्रात्मा, सज्जन, परोपकारी, सदाचारी आदि। आचार्य चतुर्वेदी के मतानुसार 'सन्त' शब्द इसी का रूपान्तर है। बौद्धकाल के अनुसार 'धम्मपद' के अन्तर्गत 'सन्त' शब्द का प्रयोग शान्त प्रकृति के व्यक्ति के रूप में हुआ है। वास्तव में सन्त शब्द संस्कृत के 'सन्' शब्द का बहुवचन प्रतीत होता है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के मतानुसार - 'सन्' शब्द भी अस् भुवि (स् होना) धातु से बने हुए 'संत' का पुल्लिंग रूप है, जो 'त्' प्रत्यय लगाकर प्रस्तुत किया जाता है और जिसका अर्थ केवल 'होने वाला' या 'रहने वाला' हो सकता है। इस प्रकार 'सन्त' शब्द का मौलिक अर्थ 'शुद्ध अस्तित्व' मात्र का ही बोधक है। अपने रूढ़ार्थ में 'सन्त' शब्द अत्यन्त व्यापक है और कालान्तर में इसके अर्थ में परिवर्तन होता रहा है। हिन्दी साहित्य में ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों के लिए 'सन्त' शब्द प्रयुक्त होता है। डॉ. बड़थ्वाल ने 'निर्गुणपन्थी' अथवा 'निर्गुणिया' शब्द का भी प्रयोग किया है।

सन्त काव्य से तात्पर्य उस काव्य से है जिसकी रचना निर्गुण भक्ति शाखा के ज्ञानमार्गी सन्त कवियों के द्वारा की गई है। विद्वानों की मान्यता है कि यह सन्त कवि अक्खड़, फक्कड़ और मस्तमौला स्वभाव के थे। इसी अक्खड़पन की झलक सन्त कवियों के लगभग पूरे साहित्य में दिखाई देती है। सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार, उपदेश तथा सूक्तिपरक साहित्य इनके लेखन में था। इन्होंने आत्मा-परमात्मा तथा विभिन्न मत-मतान्तरों के दार्शनिक सिद्धान्तों की चर्चा भी अपने साहित्य में की। यह सन्त कवि प्रायः वैरागी स्वभाव के थे और शून्यवाद के समर्थक। अक्षरज्ञान न होने के बावजूद व्यवहारिक ज्ञान के बल पर इन सन्त कवियों ने ऐसे साहित्य की रचना की जो समाज को दिग्भ्रमित होने से रोक सकता है, समाज में पनप रही बुराईयों को समाप्त कर सकता है। सन्त कवियों ने अपनी वाणी में माया की निन्दा की है। उसे महाठगिनी की संज्ञा दी है। मानव के विकास में बाधक बताया है। इन सन्त कवियों ने खण्डन-मण्डन शैली के माध्यम से तत्कालीन समाज में ...लित तमाम आडम्बरों का खण्डन किया और एकेश्वरवाद का संदेश दिया।

...काव्य की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी विलक्षण भाषा। सन्त कवि भ्रमण करते रहते ...षा किसी एक स्थान की भाषा नहीं रह गई थी। वह सार्वदेशिक बन गई थी। ... गया सन्त काव्य भाषिक दृष्टि से सहज, सरल, सजीवत... एवं प्रभावशाली है। उसमें नाद सौन्दर्य तथा संगीतात्मकता भी दिखाई देती है। रहस्यवाद, निष्काम भक्ति तथा गुरु की सर्वोच्च स्थान सन्त काव्य का प्राणतत्व है।

मध्ययुगीन समाज में स्त्री की स्थिति दीन-हीन थी। वह केवल भोग की वस्तु थी। समाज में विभिन्न तरह की कुरीतियां व्याप्त थी, जैसे - पर्दा प्रथा, बाल-विवाह, सती-प्रथा आदि। राजपूत समाज में कन्या को जन्म लेते ही मार दिया जाता था। सन्तों ने नारी की निन्दा की और समाज के विकास में उसे बाधक माना। उस समय सती प्रथा का प्रचलन जोरों पर था। निर्गुण सन्त कवियों ने कुरीतियों से बचने के लिए ज्ञान का प्रकाश दिखाया।

मध्ययुग से पूर्व स्त्री की स्थिति की बात करें तो वैदिक युग में नारी को एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। डॉ. गजानन शर्मा अपनी पुस्तक *प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी* में लिखा है - ''वेदकाल में नारी एक रत्न थी''। वह परिवार में सम्राज्ञी के समान रहती थी। यज्ञोपवीत, उपनयन तथा संध्या वंदन आदि सभी संस्कारों में वह समान रूप पुरुषों के समान प्रतिभागी थी। स्त्रियों की शिक्षा के विशेष प्रबन्ध थे। वेदों का अध्ययन, त्याग, तपस्या आदि सभी में वे अपनी उपस्थिति दर्ज कराती थीं। गार्गी, घोसा, विश्वतारा, अपाला, ऊषा, श्रद्धा, दक्षिणा, इला आदि का नाम वेदों में मिलता है।

ब्राह्मण काल में प्राचीन धर्म-ग्रन्थों जैसे 'ऐतरेय ब्राह्मण' में स्त्री को 'भारी अनर्थ की जड़' और कन्या के जन्म को दुखदायी बताया गया है। 'मैत्रेयी संहिता' में स्त्री को मदिरा और जुआ के समकक्ष रखा गया है। उपनिषद काल में स्त्रियों को धर्मशास्त्रों के अध्ययन करने का अधिकार प्राप्त है। पौराणिक काल में स्त्री विषयक दृष्टिकोण के संबंध में गहन जानकारी प्राप्त होती है। 'पद्मपुराण' सृष्टि खण्ड, 47/25, में कहा गया है कि ''वह स्त्री पतिव्रता है जो दासी के समान गृह कार्य करे। वेश्या के समान रति कला में निुण हो, माता के समान परिवार का पालन करे और विपत्तिकाल में मंत्री की भांति परामर्श प्रदान करे।'' इससे स्पष्ट होता है कि स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी।

अपभ्रंश काव्य में नारी के दो रूप मिलते हैं - एक वियोगावस्था का, दूसरा संयोगावस्था का। ऐसा लगता है कि सारा अपभ्रंश काव्य नायिका के नख-शिख निरूपण, नायिका के स्वरूप-चित्रण एवं हाव-भाव का चित्रण है। स्वयंभू, पुष्पदत्त, रामसिंह, बब्बर, मुनि, हरि भद्रसूरि, सोमप्रभसूरि इत्यादि कवियों ने प्रायः नारी का भोग्या रूप में चित्रण किया है।

सिद्ध एवं नाथ साहित्य में - सिद्ध कवि नारी को 'मुंडा' के नाम से अभिहित करते थे और स्त्रियों का उपभोग एक अनुष्ठान के समान माना जाता था। सिद्धि प्राप्ति के लिए स्त्रियों का उपभोग आवश्यक था। इसके विपरीत नाथ सम्प्रदाय के कवि स्त्रियों को पूजनीय मानते थे। उन्होंने संदेश दिया है कि कन्या, कुमारी को देखकर उसकी निन्दा न करें और न ही हंसे, न अपमानित करें, चाहे वह वस्त्र विहीन ही क्यों न हो।

यथा -

> कन्या कुमारिका नग्ना उन्मत्रा अपि पोशिताः।
> नारींच रिक्तवसनाम् द्रष्टा वन्देत भक्तितः।।
> 'गोरखनाथ और उनका युग' - डॉ रांगेय राघव, पृ. 111

अतः सिद्धों ने नारी को साधना पथ में साध्य तथा नाथों ने नारी को त्याज्य माना।

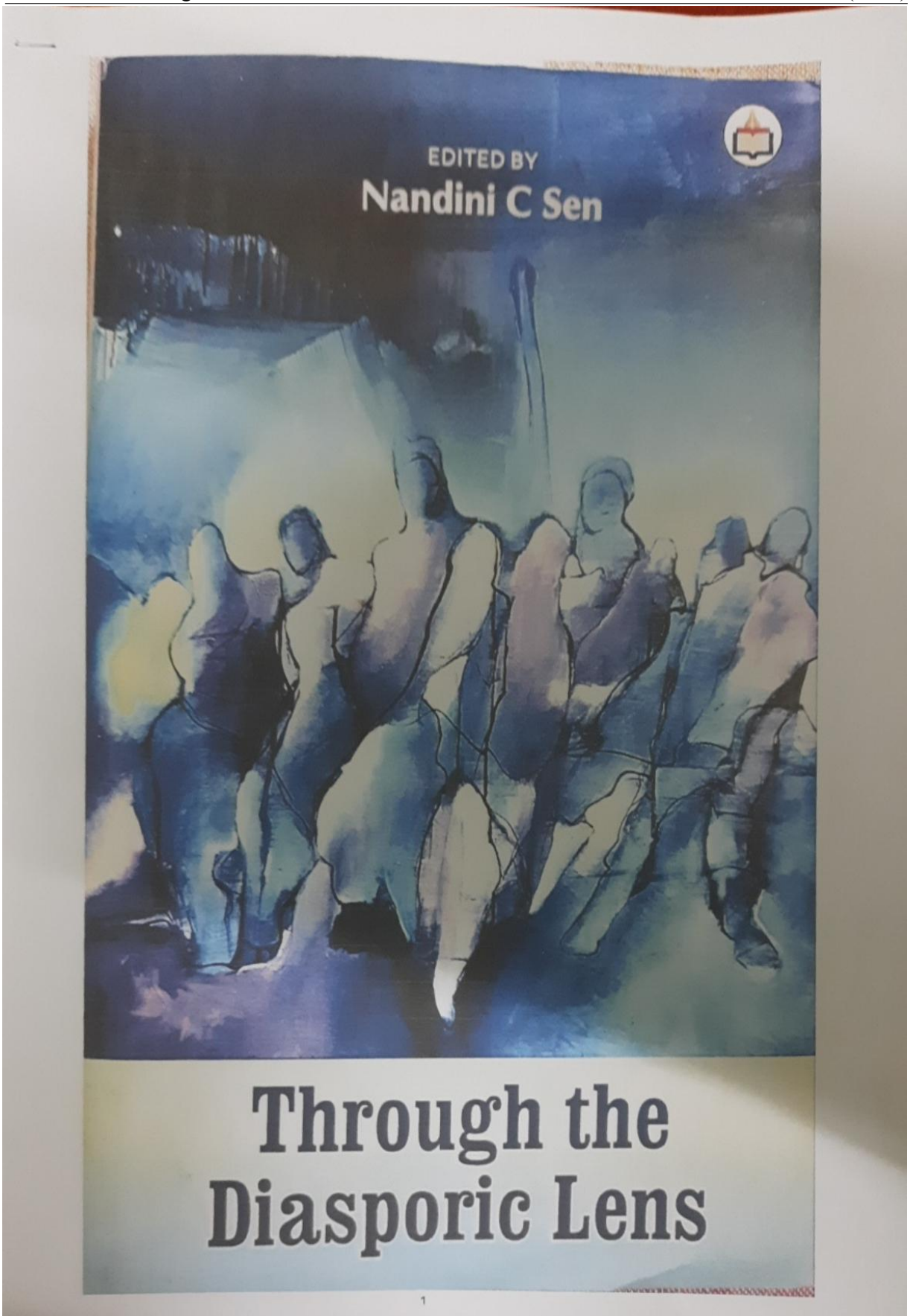
EDITED BY
Nandini C Sen
Through the
Diasporic Lens

Worldwide Circulation through Authorspress Global Network
First Published in 2017
by
Authorspress
Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)
Phone: (0) 9818049852
e-mails: authorspress@rediffmail.com; authorspress@hotmail.com
Website: www.authorspressbooks.com

Through the Diasporic Lens
ISBN 978-93-5207-524-9

Copyright © 2017 Editor

Disclaimer

Concerned authors are solely responsible for their views, opinions, policies, copyright infringement, legal action, penalty or loss of any kind regarding their articles. Neither the publisher nor the editor will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their articles.

Printed in India at Krishna Offset, Shahdara

6. 'Good Punjabi Women': Home and Abroad 106
Hina Nandrajog

7. Identities in *Flux*: Piecing the Diasporic Puzzle out in Chitra Viraraghavan's *The Americans* 122
Indu B. Kurup

8. Diaspora – The Secondary Perspective 138
Jhumjhum Chakrabarti

9. Politics of Language and Silence: Bengali Muslim Diaspora in Monica Ali's *Brick Lane* 153
Nabanita Chakraborty

DIASPORA AND POLITICS

10. Determinants of Migrants Voting Behaviour 167
Anuranjita Wadhwa

11. Changing Paradigms and Policies: Open Border between India and Nepal 183
Sangit Sarita Dwivedi

12. Understanding Policy and Development Challenges in India: A Critical Study of Cross-border Migration from Bangladesh to Assam 199
Adrita Gogoi

Contributors 216

Index 220

6

'Good Punjabi Women': Home and Abroad

Hina Nandrajog

Abstract

Diasporic Indian community is one of the largest migrant groups in the world. Though they are among the most seamlessly assimilated communities in the host culture, the desire to hold on to, and take pride in, the mother country and culture remains strong. This is evident from images in popular culture through literature, television serials and films. The second generation often prefers to ignore any linkage to the parent country and seeks an unhindered, unproblematic existence as citizens of the country it has known as home. However, they are unable to feel completely at home even abroad. This sometimes leads to the assertion of a hyphenated identity.

Discussing the work of diasporic Punjabi women – a writer, Shauna Singh Baldwin and a filmmaker, Gurinder Chadha – this paper explores the tension between the expectations from, and aspirations of, diasporic Punjabi women. As Partha Chatterjee's *Nation and its Fragments* demonstrates in the context of colonialism, here too, women become receptacles for native cultural values (a familiar trope of patriarchy) which the men need to come home to as they grapple with an alien culture and endure possible racism 'abroad'. They are compelled to conform to the norm of 'good Punjabi women' who can roll out chappatis and Punjabi words with equal felicity. The paper discusses how they hold out the promise of liberation from patriarchal values, yet are not fully reconciled to an assertion of individual choice when pitted against social norms. Somewhere their

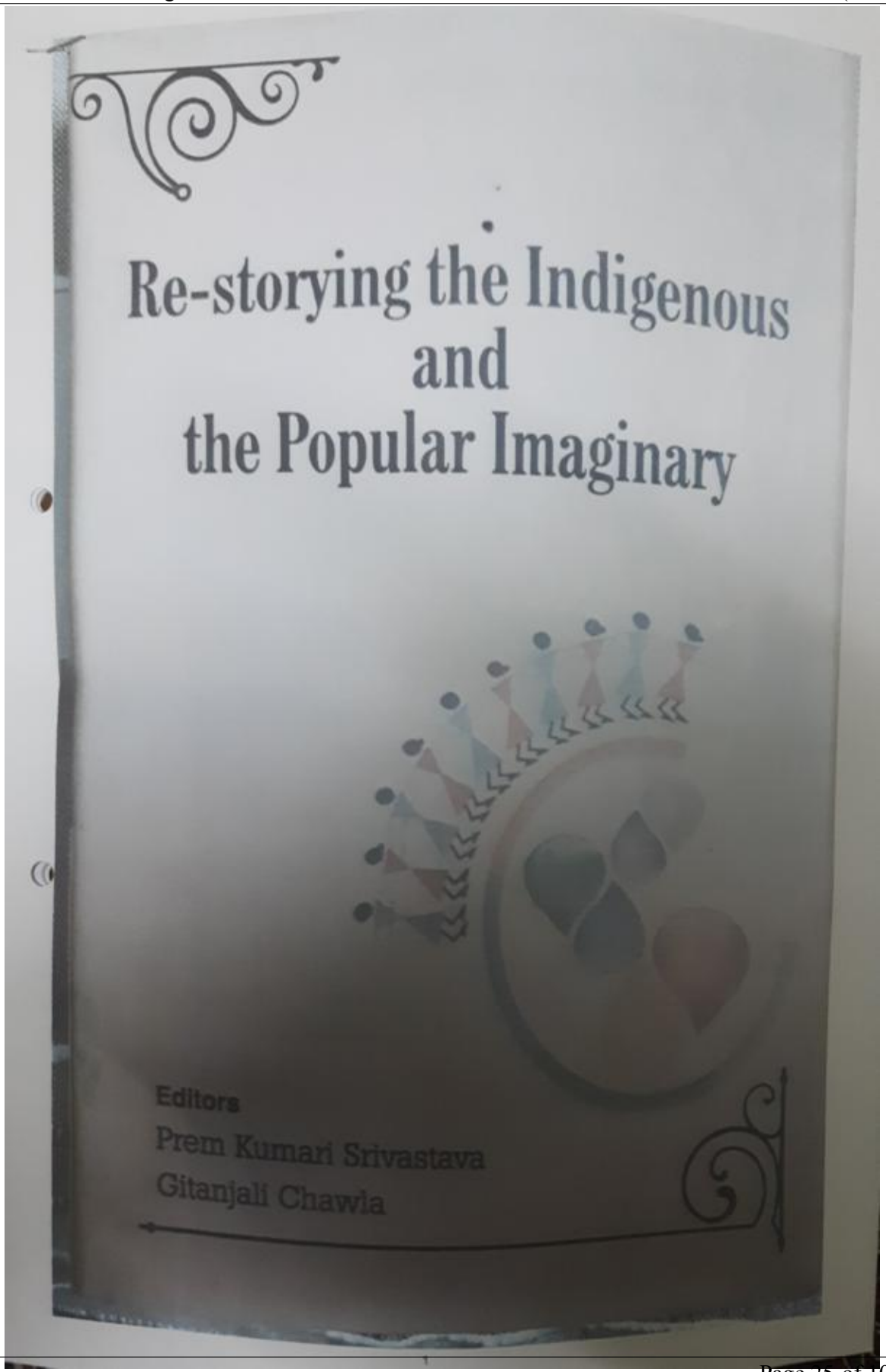
Re-storying the Indigenous
and
the Popular Imaginary
Editors
Prem Kumari Srivastava
Gitanjali Chawla

Worldwide Circulation through Authorspress Global Network
First Published in 2017
by
Authorspress
Q-2A Hauz Khas Enclave, New Delhi-110 016 (India)
Phone: (0) 9818049852
e-mails: authorspress@rediffmail.com; authorspress@hotmail.com
Website: www.authorspressbooks.com

Re-storying the Indigenous and the Popular Imaginary
ISBN 978-93-5207-385-6

Copyright © 2017 Editors

Disclaimer

Concerned authors are responsible for their views, opinions and policies or any copyright infringement. Neither the publisher nor the editors will be responsible for any penalty or loss of any kind if claimed in future. Contributing authors have no right to demand any royalty amount for their papers.

Printed in India at Krishna Offset, Shahdara

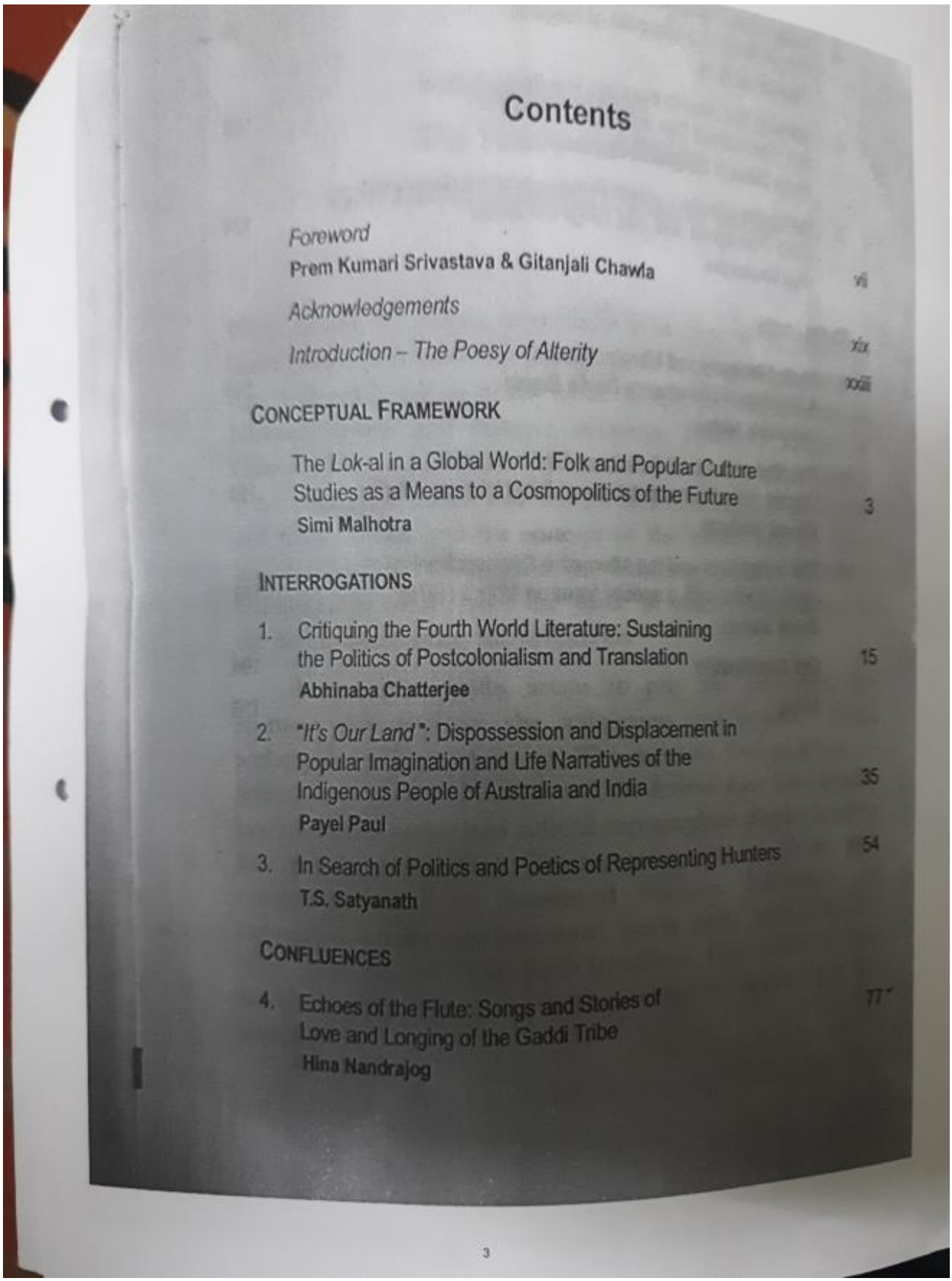

Contents

Foreword
Prem Kumari Srivastava & Gitanjali Chawla vii

Acknowledgements xix

Introduction – The Poesy of Alterity xxiii

CONCEPTUAL FRAMEWORK

The *Lok*-al in a Global World: Folk and Popular Culture Studies as a Means to a Cosmopolitics of the Future 3
Simi Malhotra

INTERROGATIONS

1. Critiquing the Fourth World Literature: Sustaining the Politics of Postcolonialism and Translation 15
Abhinaba Chatterjee

2. *"It's Our Land"*: Dispossession and Displacement in Popular Imagination and Life Narratives of the Indigenous People of Australia and India 35
Payel Paul

3. In Search of Politics and Poetics of Representing Hunters 54
T.S. Satyanath

CONFLUENCES

4. Echoes of the Flute: Songs and Stories of Love and Longing of the Gaddi Tribe 77
Hina Nandrajog

4

Echoes of the Flute: Songs and Stories of Love and Longing of the Gaddi Tribe

Hina Nandrajog

India is home to a large number of tribes—people usually referred to as 'Adivasi' (literally 'indigenous people' or original inhabitants) and the tribal population is approximately 8.14% of the total population of the country. Even to this day, tribals retain their separate social identity and live as distinct communities according to their customs. Most tribal communities have continuous histories, albeit oral ones, which are passed from generation to generation.

Traditions of oral literature offer insights that help understand the living patterns of people. A. K. Ramanujan said that anyone studying the culture of India needs to study its oral traditions; and folklore is an important part as it is the symbolic language of the non-literate parts of one's culture. This literature becomes the recorded history and heritage of people and is transmitted to successive generations to educate them about their distinctive culture and *weltenshauung*. The dynamism of actual living, the worldview, beliefs and norms of the community finds expression in stories and songs that seem to be created spontaneously. There is no individual authorship assigned to this kind of cultural expression that evolves out of a

49. अब भी यही सोच कि लड़का ही हो

शीतल

भारतीय समाज में आधी आबादी स्त्रियों की है और आधी पुरूषों की। किन्तु स्त्रियों की आधी आबादी अब कम होती जा रही है कारण कन्या भ्रूण हत्या। इसके पीछे सबसे बड़ा कारण मानसिकता है। यद्यपि कहा जाता है कि उत्तर आधुनिक युग में साक्षरता का दर बढ़ने के कारण मानसिकता में भी अं तर आया है परन्तु अब भी लड़के और लड़की के जन्म पर समाज द्वारा अलग-अलग भाव व्यक्त किए जाते हैं। जितनी खुशी पुत्र जन्म पर होती है उतनी पुत्री होने पर नहीं। बल्कि उसके होने पर तो यह कहा जाता है कि "हाय उसके तो लड़की हुई है।" चाहे वह पहली लड़की ही क्यों न हो। प्रथम संतान यदि पुत्र हो जाएं तो सभी की खुशी का ठिकाना नहीं होता और कहा जाता है "अब इसके बाद कोई भी संतान हो ;लड़का या लड़की कोई पफर्क नहीं पड़ता।" पुत्र होने के बाद भी लोगों के मुंह से पुत्री होने के लिए शब्द नहीं निकलते। डॉ॰ निखिल चतुर्वेदी के अनुसार "बेटा और बेटी के जन्म पर माता-पिता और परिवार की प्रतिक्रिया में अभी कोई पफर्क नहीं है। अभी तो जितनी खुशी बेटे होने पर होती है और ज्यादातर लोगों को उतना ही दुख होता है लड़की होने पर। कोई खास पफर्क नहीं है।"१

यहां तक कि लड़की मां और सास अर्थात् बच्चे की नानी और दादी की प्रतिक्रिया में भी कोई अंतर नहीं होता। उन्हें भी पहला बच्चा नवासा या पोता रूप में ही चाहिए। पुरूषों की मानसिकता की बात तो हम बाद में करें। हमारे समाज की स्त्रियां ही पुरूषवादी मानसिकता को बढ़ावा देती है। वे ही पुत्र की चाह रखकर पुरूषों के वर्चस्व को शक्तिशाली बनाती है। उनकी स्वयं की सोच भी यही होती है कि पुत्र हमारे वंश को आगे बढ़ाएगा। किन्तु वह यह भूल जाती है कि यह पुत्र आगे चलकर विवाह ही न करें क्योंकि लड़कों की तुलना में लड़कियों का अनुपात कम है या वह नपुंसक निकल जाए तो क्या बढ़ पाएगा उनका वंश? माना जाता है कि यदि पुत्र हुआ तो वह चिता में आग देगा तभी मुक्ति मिलेगी। यह सिर्फ एक धारणा है। चिता को अग्नि लड़की भी दे सकती है। इसलिए प्रत्येक परिवार चाहे वह कितना भी शिक्षित क्यों न हो कहीं न कहीं उनकी सोच भी पुत्र चाह ही होती है। कितने ही परिवारों के ऐसे उदाहरण हमारे सामने है जहां एक भी लड़की नहीं किन्तु पिफर भी लड़की की कोई चाह नहीं। सास-ससुर के अपने कोई पुत्री न हो पिफर भी वे यही.चाहते है कि हमारे पुत्र के भी पुत्र ही हो अगर पुत्री हो भी जाती है तो उसका नाम सुनते ही एक झटका लगता है। यहां तक कि वह पिता

भी जिसके अपनी [illegible] वह भी बेटी होने पर चिंता व्यक्त करता है। क्या हो गया है हमारे समाज [illegible] होने पर सिर्फ दुखी ही होता है। जब बेटा मां के गर्भ में लात मारता है तो [illegible] फूले नहीं समाते लेकिन वहीं बेटा जब बुढ़ापे में लात मारता है तो [illegible] से यही आवाज आती है "काश हमारे बेटी होती" किन्तु तब तक बहुत [illegible] होती है।

"समाज में लिंग से [illegible] ;जेंडर की लाभ और नुकसान, शोषण और नियंत्राण, कार्य और भावना, अर्थ और [illegible]चान, निर्णय लेने की शक्ति और निर्भरता, आदेश और समर्पण, इत्यादि संदर्भों [illegible] देखा जा सकता है। इसमें नुकसान, नियंत्राण, भावना, पहचान पर प्रश्नचिन्ह, [illegible], समर्पण इत्यादि शब्दों को अध्कितर महिलाओं का सूचक माना जाता है। और दूसरी [illegible] लाभ, शोषण, कार्य, अर्थ, निर्णय, निर्माता, शक्ति का प्रतीक, आदेश-दाता इत्यादि शब्द पुरूषवादी मानसिकता के सूचक है।"२

सिमोन द बोउवार के अनुसार 'स्त्री पैदा नहीं होती बना दी जाती है। यह ठीक ही है और स्त्री को स्त्री बनाने में जितना हाथ पुरूषों का है उतना ही स्त्री का भी। वह स्वयं अपनी सोच को पुरूष के अनुसार बना लेती है। पुरूष यह सोचता है कि घर चलाना स्त्री का काम है किन्तु वह यह भूल जाता है कि यह काम वह खुद करने में असमर्थ है तभी तो उसे स्त्री पर डाल दिया। यदि पुरूष में इतनी क्षमता होती तो संतान पैदा करने का कार्य प्रकृति द्वारा उसे ही सौंपा जाता। अगर ऐसा होता तो बच्चा पैदा करने में पुरूष मष्त्यु दर सबसे अध्कि होती। पुरूष अपनी अक्षमता को स्वीकारता नहीं और स्त्री उसे शक्तिशाली समझकर अपने को कमजोर मानती रहती है और मनवाती रहती है। यह सत्य है कि औरत ही औरत की दुश्मन होती है। यदि एक स्त्री दूसरी स्त्री के बचाव के लिए खड़ी हो जाए तो स्त्री का पुरूष द्वारा शोषण ही न हो। यदि पुत्र बच्चा पैदा करने में असमर्थ है तो मां बेटे को न कहकर बहू में ही कमी निकालती है और बार-बार लड़की पैदा हो जाए तो उसके लिए भी बहू को ही दोशी ठहराती है जबकि उसका बेटा भी इसके लिए पूरा जिम्मेदार है। "वास्तव में, पुरूष स्त्री के सामने अपनी श्रेश्ठता हर क्षेत्रा में साबित करना चाहता है। स्त्री को सम्पत्ति मानकर उस पर वर्चस्व चाहता है। जो स्त्री पुरूष की अधीनता स्वीकार करती है। उसकी नजर से दुनिया देखती है और हर निर्णय के लिए पुरूष पर आश्रित रहती है। वह सुशील और अच्छी स्त्री है और अपना निर्णय स्वयं लेने वाली, पुरूष की ज्यादती का विरोध करने वाली, अपने आपको पुरूष के बराबर समझने वाली स्त्री अभिमानी, निर्लज्ज और दबंग मानी जाती है।"३

बढ़ते बलात्कारों के कारण भी लोगों की मानसिकता में अंतर आया है। वे अपनी लड़की को असुरक्षित महसूस करते हैं इसलिए सोचते है कि लड़की ही पैदा न हो। दिल्ली को

अनुक्रमणिका

दो शब्द

1. सत्ता, विमर्श और साहित्य – नासिरा शर्मा 13
2. स्त्री प्रश्न और प्रतिबद्धता का सवाल– रोहिणी अग्रवाल 19
3. लोकगीतों के बहुसांस्कृतिक परिदृश्य में स्त्री – कुमुद शर्मा 29
4. बाबासाहेब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर के वैचारिक संघर्ष की उपज है–दलित साहित्य–कालीचरण स्नेही 40
5. आखिर शुचिता की चिन्ता स्त्री–केन्द्रित ही क्यों?–हरीश अरोडा 51
6 धूमिल की कविता में लोकतंत्र–अनिल कुमार 59
7. रजना जायसवाल कृत संग्रह 'जब मैं स्त्री हूँ' में नारी की बदलती दशा का परिदृश्य–अशोक पंकज, सुनील कुमार 66
8 पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–सोनिया गुप्ता 77
9. गोली: राजसत्ता की शिकार एक नारी– शमशेर 84
10 हाशिये के समाज का प्रमाणिक दस्तावेज दलित आत्मकथाएं–अनिल कुमार विश्वकर्मा 94
11. स्त्री विमर्श : एक अवलोकन–गायत्री 102
12. आधुनिक परिदृश्य एवं नारी अस्मिता के स्वर–चन्द्रकांत तिवारी 105
13 प्रगतिवादी हिन्दी साहित्य : अस्मिता विमर्श–महेन्द्र सिंह 114
14 नारीवाद के विभिन्न स्वरूप–मीनाक्षी 118
15 सत्ता संघर्ष और दलित अस्मिता : साहित्यिक दृष्टि–नीलम कुमारी 123
16. पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–दीपक कुमार 129
17 पाश्चात्य और भारतीय साहित्य में नारी विमर्श एक अध्ययन–चन्द्रशेखर 134
18 आम आदमी की अस्मिता की खोज करती कहानियाँ–आराधना सारावान 142
19. पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–रेखा देवी 148
20. थर्ड जेंडर के यथार्थ को उकेरता उपन्यास 'नाला सोपारा'–गीतू 153
21. सत्ता संघर्ष और दलित अस्मिता–सबीना जहां 159
22. पितृ–सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–विकास वर्मा 166
23. स्त्री आत्मकथाओं में नारी मन का अन्तर्द्वन्द्व–तूबा जमाल 174
24 समकालीन चिंतनधारा: स्त्री विमर्श–श्यामवीर 178
25. पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–पूनम रानी 180

26. भीष्म साहनी के साहित्य में राजनीतिक भ्रष्टाचार और आम आदमी की अस्मिता: एक चिंतन–रविकुमार 185
27 पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–नीतू कुमार 191
28. सत्ता संघर्ष और दलित अस्मिता की कमी–प्रकाश चन्द 199
29. हिन्दी साहित्य में स्त्री चेतना और विमर्श–अनुपमा, आशुतोष 207
30. पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–डिम्पल गुप्ता 211
31. महिला उपन्यासकारों के उपन्यासों में सत्ता की (प्रशासनिक, राजनैतिक) विसंगतियों से विद्रोह करते नारी पात्र–मीना मितल 219
32. चित्रा मुद्गल:पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री–विमर्श–संदीप कुमार 223
33. समकालीन कहानियों में स्त्री पुरुष का वैचारिक संघर्ष –मोनिका देवी 231
34 पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श –अंजु रानी 234
35. पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–सतीश कुमार 239
36 स्त्री विमर्श और स्त्री लेखन – एक विवेचन –सुरुचि 245
37 पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–सुधा चौहान 249
38. पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श –आशा रानी 253
39. महिला लेखिकाओं की कथा साहित्य में नारी अस्मिता –आर. सपना 258
40. स्त्री अंतस की आवाज –ज्योत्स्ना मिलन का साहित्य–अनिता यादव 261
41. पितृ सत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–सुषमा सहरावत 267
42. पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–संगीता शर्मा 274
43. 'शिगाफ' आतंक और विस्थापन का दस्तावेज़–वंदना शर्मा 276
44. स्त्री–विमर्श और हिन्दी साहित्य एक सन्दर्भ–विजय देवी 286
45. सत्ता की भागीदारी और दिव्यांग अस्मिता–डॉ. वंदना 292
46. प्रेमचंद के संपादकियों में सत्ता विमर्श और साहित्य–आलमगीर 299
47. पितृसत्ता से टकराहट और स्त्री विमर्श–भारती 304
48. स्त्री की नियति और पितृसत्ता– पूनम यादव 311
49. अब भी यही सोच कि लड़का ही हो–शीतल 316
50. पितृसत्ता से टकराहट और सूफी काव्य चाचरन –सुरेश चंद मीणा 319
51 लोकतन्त्र सत्ता की विसंगतियाँ और साहित्य–कान्ता गौड 323
52. सत्ता संघर्ष और दलित अस्मिता–सुरेन्द्र कुमार राजपाल 327

65

प्रकाशक :

विपिन प्रकाशन
760/35, जनता कॉलोनी,
रोहतक –124001 (हरियाणा)
E-mail : gupta.vipin1973@gmail.com
Ph. : 09355674175

ISBN : 978-81-909307-4-1

मूल्य : 450/–

संस्करण : 2017

© सर्वाधिकार सम्पादक के अधीन। लेखों में व्यक्त विचार लेखक के निजी है। इनसे सम्बंधित किसी भी विवाद से प्रकाशन और सम्पादक का कोई संबंध नहीं है।

आवरण सज्जा : प्रकाश खाण्डे
कंपोजिटर : ओमदत्त

राष्ट्रीय संगोष्ठी
15 फरवरी, 2017

अजय गुप्त
प्रधान
मैनेजिंग कमेटी

संदेश

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष हिन्दी विभाग द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। ऐसी संगोष्ठियाँ एक तरफ प्राध्यापकों के ज्ञान को विकसित करती है, वहीं विद्यार्थियों की सृजनात्मक सोच को भी सशक्त बनाती है।

मुझे विश्वास है कि इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले लेखों की पुस्तक भी सभी के लिए उपयोगी होगी। इस संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए मैं कॉलेज के प्राचार्य, संयोजक व आयोजन सचिव को अपनी शुभकामनाएँ देता हूँ।

ह.
अजय गुप्त

252

का भावानुकूल वाचन होने से कविता-शिक्षण सरस बना रहता है।

5. खंडान्वय विधि : कविता शिक्षण की इस विधि में शिक्षक कविता के सस्वर पठन-पाठन के उपरान्त सम्पूर्ण कविता को क्रमानुसार छोटे-छोटे खंडों में विभक्त कर देता है। तत्पश्चात हरेक खंड पर एकाधिक प्रश्नों का निर्माण करके विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देते हैं। जहाँ विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थता दिखाते हैं वहीं शिक्षक कविता के अर्थ एवं भाव स्पष्ट करके उन्हें फिर समझाता है।

6. व्यास विधि : इस विधि में शिक्षक कविता के अर्थ एवं भाव के स्पष्टीकरण के लिए उसमें छिपी पौराणिक, ऐतिहासिक आदि कथाओं को स्पष्ट करता है। प्रसंगों की व्याख्या करता है, कविता की भाषा एवं शैली का विस्तृत विवेचन करता है, कविता के तत्वों–भाव, छंद, अलंकार, रस आदि का दार्शनिक विवेचन करके कविता के संपूर्ण भाव को स्पष्ट कर देता है।

7. तुलना विधि : शिक्षण की इस विधि में शिक्षक कक्षा में पढ़ाई जाने वाली कविता की तुलना उसी भाषा अथवा अन्य भाषाओं की समानार्थक कविताओं के साथ करते हुए कविता विशेष का स्पष्टीकरण करता है।

8. समीक्षा विधि : इस विधि द्वारा कविता की समीक्षात्मक व्याख्या की जाती है अर्थात् कविता के भावात्मक एवं कलात्मक दोनों पक्षों का आलोचनात्मक विवेचन करता है। विद्यार्थियों को संदर्भ ग्रंथों एवं समीक्षात्मक ग्रंथों की जानकारी भी दी जाती है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही विद्वानों ने प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक विद्वानों और कविता के पठन-पाठन, शिक्षण में रुचि रखने वालों के लिए कविता के बारीक से बारीक अंश को भी व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। जिससे कविता के प्रति पाठक की समझ विकसित होती है और काव्य शिक्षण में अभिरुचि विकसित होती है। जैसे-जैसे मनुष्य का भाव जगत विकसित होता जाएगा और भौतिक जगत में बदलाव आते जाएंगे, वैसे-वैसे कविता और उसके शिक्षण की चुनौतियां भी बढ़ती जाएंगी।

सहायक ग्रंथ : *कविता क्या है*–विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *भारतीय काव्य शास्त्र*–डॉ. नगेन्द्र, *पाश्चात्य काव्य शास्त्र*–देवेन्द्र शर्मा, *हिन्दी शिक्षण*–दुर्गेश नन्दिनी, *कविता क्या है* (निबंध) *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी शिक्षण*–डॉ. उमा मंगल

S (7-2, 75, 7 73, 74

कविताओं में अरुचि के कारण

डॉ. शीतल

प्रारंभ में यह जानना आवश्यक है कि शिक्षण क्या है? शिक्षण शब्द वास्तव में शिक्षा से जुड़ा है। जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया से लिया जाता है। जिसमें शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक ज्ञान का स्रोत है जिससे ज्ञान प्रस्फुटित होकर विद्यार्थी तक पहुंचता है। शिक्षण के बारे में मारसन लिखते हैं कि "यह शिक्षण प्रक्रिया अधिक परिपक्व व्यक्ति (अध्यापक) तथा अपरिपक्व व्यक्ति (बालक) के मध्य प्रगाढ़ संबंध को दर्शाती है।"[1]

शिक्षक एक पथ प्रदर्शक के रूप में अपने विद्यार्थी का व्यक्तित्व निर्माण करता है। जिससे विद्यार्थी को सृजनात्मक क्षमताओं के विकास में सहायता मिलती है। शिक्षण का अर्थ संकुचित तथा व्यापक दोनों रूपों में होता है। संकुचित अर्थ में यह सिर्फ ज्ञान प्रदान करने की क्रिया है जबकि व्यापक अर्थ में इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु भी आ जाती है। इन तीनों में से एक को भी हटा दे तो यह क्रिया महत्त्वहीन हो जाएगी। 'शिक्षण में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की जाती है जिसमें कुछ रिक्त स्थान तथा कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं, व्यक्ति इन कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयास करता है जिसके फलस्वरूप वह सीखता है।"[2]

किसी भी प्रकार के शिक्षण के लिए भाषा का होना अनिवार्य है। भाषा ही साहित्य को आधार प्रदान करती है और भाषा की वास्तविक शक्ति साहित्य में ही देखने को मिलती है। साहित्य भी भाषा का परिष्करण और परिमार्जन करता है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। यह मनुष्य की सौन्दर्य चेतना को विकसित करता है। जिससे पाठक को आनंद की अनुभूति होती है। साहित्य के चार प्रमुख तत्व माने जाते हैं–भाव, विचार, कल्पना और अभिव्यक्ति। साहित्यकार सबसे पहले भावों को अनुभूत करता है। फिर उस अनुभूति को विचारों से बांधता है और इन विचारों को कल्पना से संवार कर अपनी शैली में अभिव्यक्त करता

है। इसी अभिव्यक्ति को साहित्य कहा जाता है। साहित्य के मुख्यतः दो रूप होते हैं—पद्य और गद्य। पद्य के अंतर्गत कविता के सभी रूप आते हैं—गीत, प्रगीत, छंदमुक्त रचनाएं, अकविता, नई कविता, खंडकाव्य प्रबंधकाव्य आदि। गद्य के अंतर्गत निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, व्यंग्य, डायरी, यात्रावृत, रिपोतार्ज, संस्मरण, रेखाचित्र आदि आ जाते हं। भाषा शिक्षण और साहित्य शिक्षण में वास्तव में अंतर होता है। भाषा शिक्षण भाषिक क्षमताओं, दक्षताओं, कुशलताओं, योग्यताओं का विकास करता है जबकि साहित्य शिक्षण जीवन को समझने की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। साहित्य का शिक्षण उसकी अनेक विधाओं के माध्यम से होता है। साहित्य की इन विधाओं के अस्तित्व का कारण उनके प्रस्तुतीकरण एवं भाषा-शैलियों की भिन्नता है। इसलिए सभी विधाओं को एक ही ढंग से पढ़ाना उचित नहीं है। दूसरी बात यह है कि एक ही विधा की विभिन्न रचनाओं को भी एक निश्चित ढर्रे से पढ़ाना संभव नहीं हैं। साहित्य शिक्षण की अनेक विधियां हो सकती हैं। यह शिक्षक को ही निर्णय करना होगा कि किस विधा की किस रचना के लिए शिक्षण उद्देश्यों, कक्षा स्थिति और समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए कौन-सी विधि अपनाना होगी। कविता शिक्षण की प्रविधियों को जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि कविता क्या है? जो रचना छंदोबद्ध हो जाती है उसे ही कविता कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने कहा है कि जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। कविता मनुष्य के भावनात्मक विकास में सहायक होती है। विभिन्न विद्वानों ने कविता की अलग-अलग परिभाषा दी है।

आचार्य श्यामसुंदर दास के अनुसार 'कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा, जिसमें भावों की व्यजंना ही कविता कहलाती है।'[4]

मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार–'कविता मूल रूप से जीवन की आलोचना है।'[5]

वर्डसवर्थ के अनुसार–'शांति के समय स्मरण किए गए प्रबल मनोवेगों का स्वच्छंद प्रवाह कविता है।'[6]

कहा जाता है, 'जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि' अर्थात रवि का कार्य तो जगत को प्रकाशित करना ही है परन्तु कवि अपनी कविता से मानव मन को रस से भर आनंदित कर देता है। वह अपनी कलम से ऐसी चोट करता है जो तलवार भी नहीं कर पाती। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई उद्देश्य होता है। इसी तरह कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को काव्यगत विषय से परिचित कराकर भाव सौन्दर्यानुभूति की सक्षमता उत्पन्न करना है। जिससे विद्यार्थियों की

सृजनात्मक शक्तियों का विकास हो और वह कविता रचना के लिए प्रेरित हो।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की कविता शिक्षण की बात जब आती है तो उसे हम दो भागों में बांटकर समझा सकते हैं, क्योंकि आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक की कविताओं का शिक्षण लगभग एक-सा होगा जबकि आधुनिक काल की कविता अलग है। पूर्व आधुनिक कविता में बौद्ध, सिद्ध, नाथ, जैन, चारण भाटों की कविता के साथ-साथ भक्त कवि जैसे कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा, रहीम, आदि की कविताएं तथा रीति कवि उसे भूषण देव, मतिराम, बिहारी, गिरिधर की कविताएं आ जाती हैं। भक्ति और रीति कविताएं मुख्यतः ब्रज और अवधी में ही लिखी गईं। इनका शिक्षण निम्न प्रकार से करना चाहिए–

कविता वाचन : कविता को भली-भांति वाचन करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कविता गद्य नहीं है इसलिए इसे पद्य की ही तरह लय, वर्ण, गति, यति, तुक आदि का ध्यान रखकर पढ़ाना चाहिए। मध्यकालीन कविता मात्रिक छंदयुक्त है। दोहा, चौपाई, पद, सवैया, कवित्त, सोरठा, रोला, छप्पय, कुंडलिया आदि छंदों की लय भी अलग-अलग हैं। इनका वाचन यदि लयपूर्ण ढंग से किया जाए तो अर्थ भी समझने आने लगता है। "छंद की लय के अनुसार ही नहीं अपितु विषय और भाव के अनुसार भी वाचन में अंतर आता है। भूषण के कवित्त ओजस्वी वाणी की मांग करते हैं। और घनानंद के शृंगार परक सवैये और कवित्त कोमल कंठ की। तुको का ध्यान नाद सौन्दर्य को समझने में सहायता करता है। और इससे कविता को याद रखना भी आसान हो जाता है।[7]

अर्थ बोध–कविता शिक्षण में अर्थ का विशेष महत्त्व है। ब्रज और अवधी भाषा के शब्दों का ज्ञान न होने के कारण विद्यार्थी को इसे समझने में कठिनाई होती है। इसलिए इनके कठिन अर्थों को बताना आवश्यक होता है। साथ ही प्रयुक्त अंतःकथाएं या कवि समय, अवधारणाएं, प्रवृत्तियां आदि बताने से अर्थ समझने में सुविधा होती है।

सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति–यह कविताएं रस प्रधान कविताएं हैं। अर्थ को जान लेने के पश्चात विद्यार्थी को इसमें रस की अनुभूति होने लगती है। इन कविताओं में शांत, भक्ति, रौद्र, वीर, शृंगार करुणा आदि रस भरे पड़े हैं। जिससे पाठकों को अधिक रस की प्राप्ति हो सकती है। जिससे विद्यार्थी कवि की भावनाओं को भी अनुभूत कर सकता है। जैसे सूरदास की कविता कृष्ण के सौन्दर्य को पाठक की आंखों के सामने ला देती है।

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरून चलन रेणु तन मंडित गोरोचन तिलक दिए।

आधुनिक कविता–आधुनिक कविता को नवजागरण काल (भारतेन्दु युग),

प्रकाशक : अनन्य प्रकाशन
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन नं. 011-22825606, 22824606
E-mail : prakashananya@gmail.com

© सर्वाधिकार : सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

आईएसबीएन : 978-93-85450-89-1

मूल्य : ₹ 425

...णवाल

शब्द-... सिस्टम, दिल्ली-11003...

मुद्रक ... प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

माँ-पिताजी और भैया को
जिन्होंने मुझे सँवारा

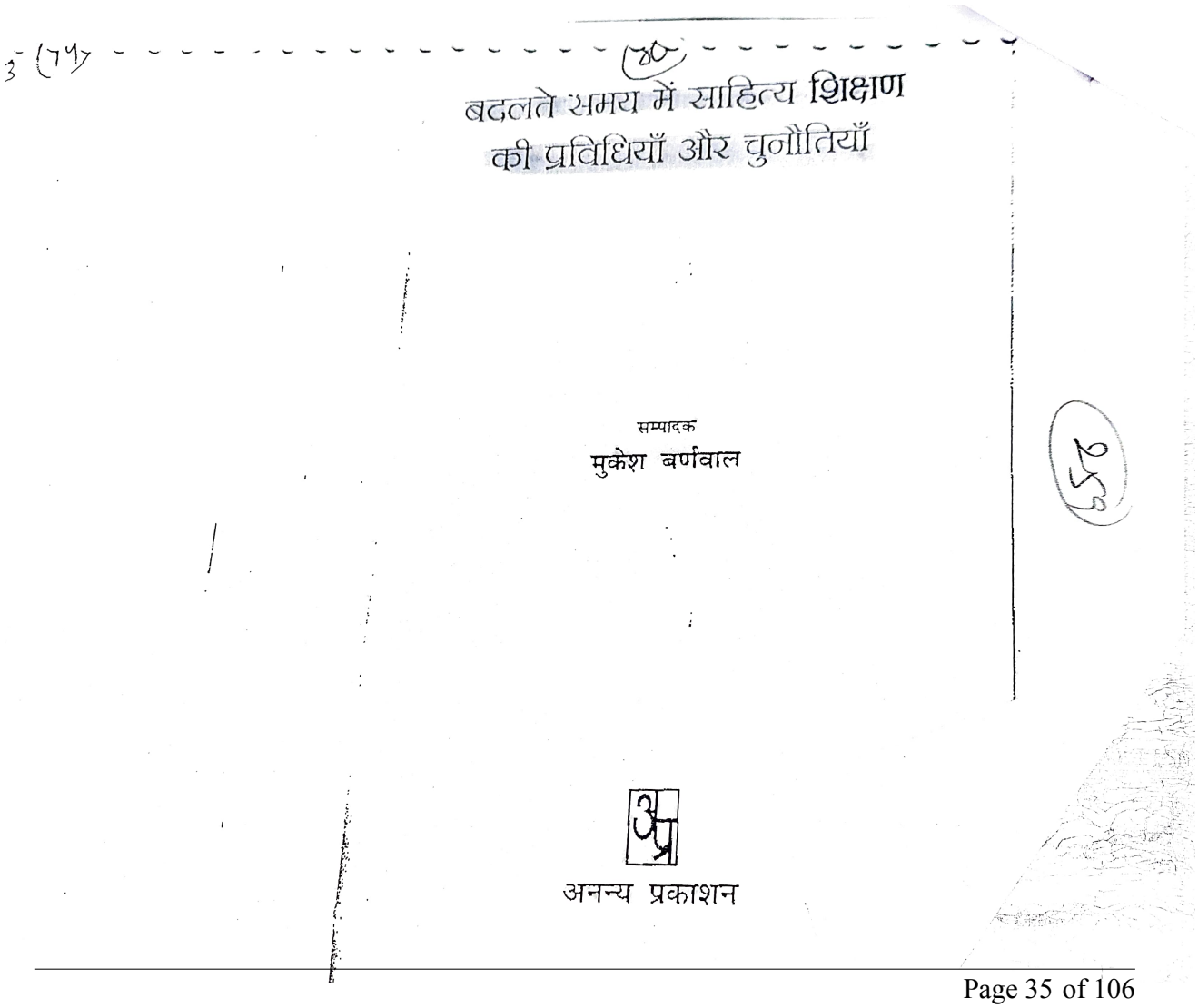
बदलते समय में साहित्य शिक्षण
की प्रविधियाँ और चुनौतियाँ
सम्पादक
मुकेश बर्णवाल
अनन्य प्रकाशन

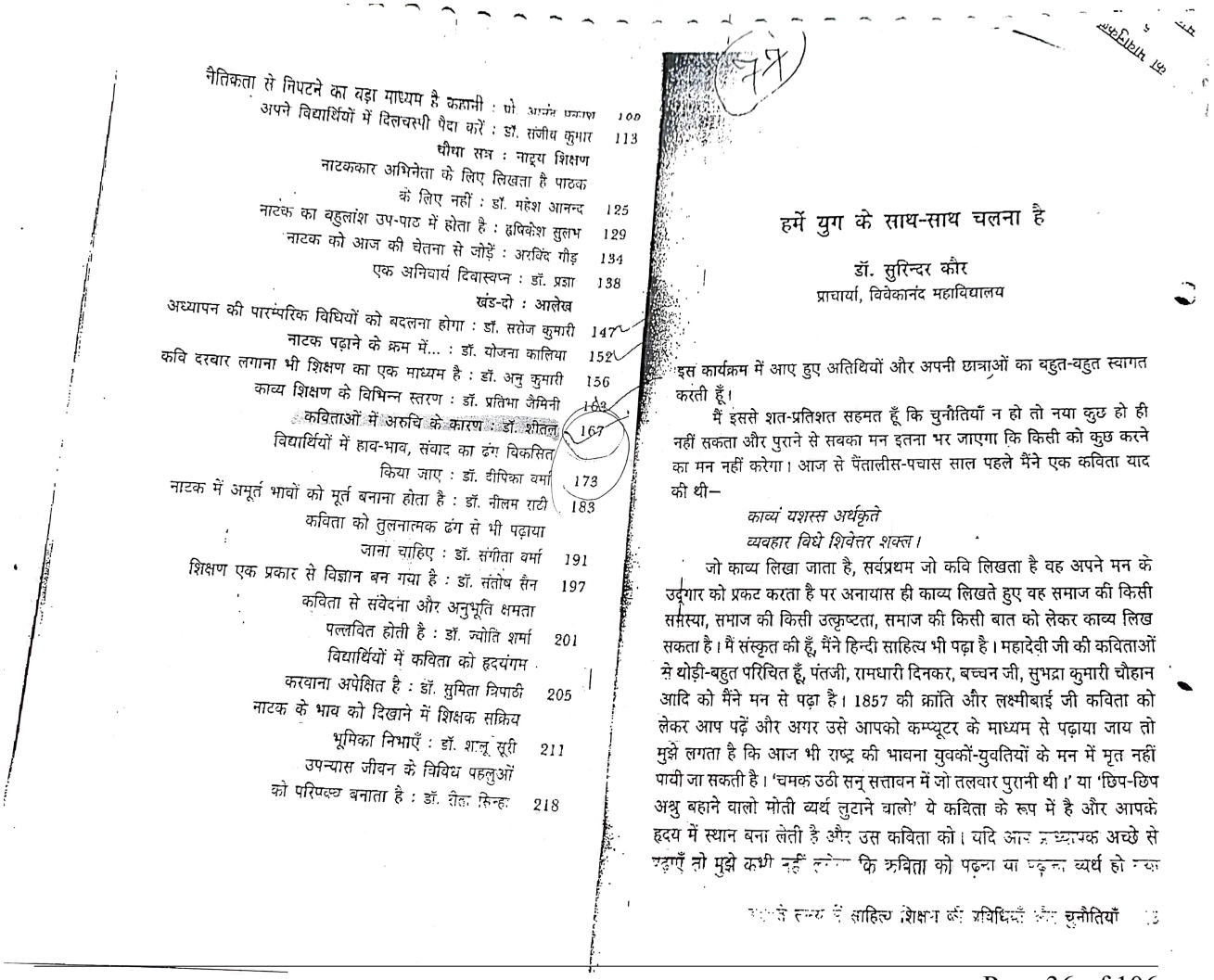

नैतिकता से निपटने का बड़ा माध्यम है कहानी : प्रो. आनंद प्रकाश 100
अपने विद्यार्थियों में दिलचस्पी पैदा करें : डॉ. संजीव कुमार 113
चौथा सत्र : नाट्य शिक्षण
नाटककार अभिनेता के लिए लिखता है पाठक के लिए नहीं : डॉ. महेश आनन्द 125
नाटक का बहुलांश उप-पाठ में होता है : हृषिकेश सुलभ 129
नाटक को आज की चेतना से जोड़ें : अरविंद गौड़ 134
एक अनिवार्य दिवास्वप्न : डॉ. प्रज्ञा 138
खंड-दो : आलेख
अध्यापन की पारम्परिक विधियों को बदलना होगा : डॉ. सरोज कुमारी 147
नाटक पढ़ाने के क्रम में... : डॉ. योजना कालिया 152
कवि दरबार लगाना भी शिक्षण का एक माध्यम है : डॉ. अनु कुमारी 156
काव्य शिक्षण के विभिन्न स्तरण : डॉ. प्रतिभा जैमिनी 163
कविताओं में अरुचि के कारण : डॉ. शीतल 167
विद्यार्थियों में हाव-भाव, संवाद का ढंग विकसित किया जाए : डॉ. दीपिका वर्मा 173
नाटक में अमूर्त भावों को मूर्त बनाना होता है : डॉ. नीलम राठी 183
कविता को तुलनात्मक ढंग से भी पढ़ाया जाना चाहिए : डॉ. संगीता वर्मा 191
शिक्षण एक प्रकार से विज्ञान बन गया है : डॉ. संतोष सैन 197
कविता से संवेदना और अनुभूति क्षमता पल्लवित होती है : डॉ. ज्योति शर्मा 201
विद्यार्थियों में कविता को हृदयंगम करवाना अपेक्षित है : डॉ. सुमिता त्रिपाठी 205
नाटक के भाव को दिखाने में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाएँ : डॉ. शालू सूरी 211
उपन्यास जीवन के विविध पहलुओं को परिपक्व बनाता है : डॉ. रीता सिन्हा 218

हमें युग के साथ-साथ चलना है

डॉ. सुरिन्दर कौर
प्राचार्या, विवेकानंद महाविद्यालय

इस कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों और अपनी छात्राओं का बहुत-बहुत स्वागत करती हूँ।

मैं इससे शत-प्रतिशत सहमत हूँ कि चुनौतियाँ न हो तो नया कुछ हो ही नहीं सकता और पुराने से सबका मन इतना भर जाएगा कि किसी को कुछ करने का मन नहीं करेगा। आज से पैंतालीस-पचास साल पहले मैंने एक कविता याद की थी—

काव्यं यशस्स अर्थकृते
व्यवहार विधे शिवेत्तर शक्त।

जो काव्य लिखा जाता है, सर्वप्रथम जो कवि लिखता है वह अपने मन के उद्गार को प्रकट करता है पर अनायास ही काव्य लिखते हुए वह समाज की किसी समस्या, समाज की किसी उत्कृष्टता, समाज की किसी बात को लेकर काव्य लिख सकता है। मैं संस्कृत की हूँ, मैंने हिन्दी साहित्य भी पढ़ा है। महादेवी जी की कविताओं से थोड़ी-बहुत परिचित हूँ, पंतजी, रामधारी दिनकर, बच्चन जी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि को मैंने मन से पढ़ा है। 1857 की क्रांति और लक्ष्मीबाई जी कविता को लेकर आप पढ़ें और अगर उसे आपको कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ाया जाय तो मुझे लगता है कि आज भी राष्ट्र की भावना युवकों-युवतियों के मन में मृत नहीं पायी जा सकती है। 'चमक उठी सन् सत्तावन में जो तलवार पुरानी थी।' या 'छिप-छिप अश्रु बहाने वालो मोती व्यर्थ लुटाने वालो' ये कविता के रूप में है और आपके हृदय में स्थान बना लेती है और उस कविता को। यदि आप अध्यापक अच्छे से पढ़ाएँ तो मुझे कभी नहीं लगेगा कि कविता को पढ़ना या पढ़ाना व्यर्थ हो गया

संत कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण

डॉ. शीतल

जैसा कि सभी जानते है कि संत साहित्य भक्तिकाल की निर्गुण काव्यधारा के अंतर्गत आता है। जिसका प्रमुख उद्देश्य ईश्वर के निर्गुण निराकार रूप की आराधना करना था। जिसमें प्रमुख संत कवि कबीर, रैदास, नामदेव, नानकदेव, दादू, रज्जब जी, मलूकदास, सुंदरदास, गरीबदास, यारी साहब, जगजीवन साहब, दरिया साहब, चरनदास, पलटू साहब आदि तथा कवयित्रियां मुस्ताबाई, जनाबाई, उमा, पार्वतीबाई, सहजोबाई, दयाबाई, गवरीबाई राधाबाई, आदि प्रमुख हैं। संत साहित्य को जानने से पूर्व संत शब्द का अर्थ जानना आवश्यक है। संत शब्द संस्कृत के 'सत' शब्द का बहुवचन है। संत का मौलिक अर्थ 'शुद्ध अस्तित्व' ही प्रतीत होता है। अर्थात् संत आदर्श व्यक्ति होते थे जो साधना में लीन रहते हुए विश्व का कल्याण करने की बात करते थे। डॉ. बड़थ्वाल संत की परिभाषा इस प्रकार करते हैं - "संत अध्यात्म विद्या का व्यावहारिक स्वरूप है। अध्यात्मवादी तत्वचिंतक जिन महान सिद्धांतों का अन्वेषण और निरूपण करते चले आए हैं, उनको उसे स्वयं अपने में अनुभूति हुई होती है। उनका उसे शास्त्रीय वाचनिक ज्ञान हो न हो, दर्शन अवश्य होता है 'वह अध्यात्म का व्याख्याता चाहे हो न हो, अध्यात्मचेता होता है वह दृष्टा है। पुनः आगे फिर उन्होंने कहा है दृष्टा संत एकमात्र संतत्व को अपने में और अपने को एकमात्र संतत्व में देखता है, इसलिए वह संत है।'"[1]

संत कवियों के स्त्रीवादी दृष्टिकोण को जानने से पहले यह जरूरी है कि हम यह जाने कि संतों से पूर्व स्त्रियों की स्थिति कैसी थी। वैदिक काल की बात जब हम करते हैं तो उस समय स्त्री की स्थिति बेहतर थी। पति-पत्नी के बीच मित्रवत् व्यवहार था व सती प्रथा ऐच्छिक थी। ब्राह्मणकाल में उसकी स्थिति गिरने लगी जिसका कारण आनार्यों का संपर्क और संसर्ग था। बहुविवाह की प्रथा अस्तित्व में आ चुकी थी। पुत्री विक्रय तथा कन्यादान का महत्व भी स्थापित होने लगा था। उपनिषद काल में पुत्रियों को विदुषी बनाने का प्रचलन था। समाज में स्त्री और पुरुषों का मुक्त मिलन भी प्रारंभ हो गया था। पौराणिक काल में उस स्त्री को पतिव्रता कहा गया है जो दासी के समान गृह कार्य करें। ब्रह्मवैवर्त तथ विष्णु पुराण में भी सती नारी का उल्लेख तथा महात्मय सिद्ध किया गया है। रामायण काल में विवाह स्वयंवरों द्वारा माता-पिता की आज्ञा से होता था। बहुपत्नी की प्रथा विद्यमान थी। महाभारत काल में कन्याओं का कौमार्य उनकी प्रतिष्ठा का द्योतक माना जाता था। माता बनने में ही जीवन की सार्थकता मानी जाती थी। स्मृतिकाल में सारे बंधन पत्नी के लिए थे और पुरुष स्वच्छंद एवं स्वतंत्र था। जैन धर्म में भी वासना को काम का साधन मानकर स्त्री से मुक्त होने की बात कही। बौद्ध धर्म नारी के प्रति सहिष्णु था। वह सती नारी का आदर करते थे साथ-साथ विधवा, वैश्या एवं पतिताओं को अंगीकार करता था। सिद्ध सम्प्रदाय में नारी का उपभोग अनिवार्य

हो गया था जबकि नाथ साहित्य में नारी को पूर्णतः त्याज्य माना। वीरगाथाकाल में जहां नारी के रूप, सौंदर्य, उसके गुण और शील का चढ़ा हो मनोहारी चित्रण किया गया है वहां भक्तिकाल में संतकाव्य में नारी के कतिपय रूपों को छोड़कर सिर्फ निंदा ही निंदा है।

भक्तिकाल का जब आगमन हुआ तो सामंतवादी युग था और सामंतवादी मानसिकता स्त्री को वस्तु समझती है जैसे जमीन किसी को भी दान में दे दी जाती थी वैसे ही स्त्री भी दान में दी जाती थी। संतों का आविर्भाव विषम परिस्थितियों में हुआ। सिकंदर शाह से लेकर अकबर के राज्यकाल तक का समय हिन्दुओं के लिए अत्यंत यातना का समय रहा। हिन्दुओं के साथ अमानवीय व्यवहार किए गए। अकबर के समय में हिन्दुओं की स्थिति में परिवर्तन आया, उसने हिन्दुओं को ऊँचे पद प्रदान किए, राजपूत स्त्रियों के साथ विवाह करके दोनों जातियों को मिलाने का प्रयत्न किया। अकबर के बाद शाहजहां के शासनकाल में फिर से हिन्दुओं की स्थिति बिगड़ गई। भारतवर्ष के पांच सौ वर्षों का राजनीतिक वातावरण अत्यंत अशांति एवं अव्यवस्था का वातावरण था और इसी में संतों का आगमन हुआ। भक्ति आंदोलन का उद्भव सामंती व्यवस्था के विरोध में हुआ। संत कवियों ने अपनी रचनाओं में सामाजिक सुधार को महत्व दिया किन्तु स्त्री के सुधार के लिए कोई प्रयत्न न करके उसे ही त्यागने की बात इन्होंने कही। उसके लिए अनेक कुप्रथाएं बना दी गई जैसे बाल-विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा आदि और इन सभी प्रथाओं को इन संतों ने खत्म न करके आगे बढ़ाया और कुप्रथाओं की प्रशंसा की।

उस समय के सामंत रात-दिन विलास में डूबे रहते थे। आर्थिक रूप से सशक्त होने के कारण यह लोग इतने विलासी थे कि स्त्री तक को खरीदने-बेचने का काम करते थे। फलतः नारी खरीद-फरोख्त की वस्तु ही बन गई थी। अर्थात् वह सिर्फ योनि मात्र बनकर ही रह गई थी। उसे सिर्फ एक शरीर के रूप में देखा गया इसलिए संतों ने कामिनी की निंदा की और पुरुषों को स्त्री से दूर रहने का उपदेश दिया।

कामिनी विषथ-गामिनी है। यह कामान्ध नर को नरक की ओर ले जाती है। मनुष्य को कुछ दिखाई नहीं देता और वह बिना मूल्य नारी के हाथ बिक जाता है। परवर्ती संतों ने भी कामिनी को भ्रम में डालने वाली, हरि विमुख करने वाली, जीवन-पथ से भटका देनेवाली, गड्ढे में ढकेल देने वाली और नरक में ले जाने वाली कहकर उसे विषथ गामिनी के रूप में चित्रित किया है।[2]

संत पलटू ने कहा कि 'स्त्री-पुरुष के मरने तक ही उसका साथ देती है। क्या परिवार के बाकी लोग मरने के बाद भी साथ देते हैं। फिर पत्नी से इतनी अपेक्षाएं क्यों? पति की चिता के साथ जल जाना ही सती कहलाया। इस प्रथा की शुरूआत वास्तव में इसलिए की गई ताकि उस स्त्री का कोई अन्य व्यक्ति उपभोग न करें या पत्नी के दूसरे विवाह से उसकी संपत्ति किसी दूसरे के पास न चली जाए। संतों ने बार-बार नारी को माया कहकर उसकी निंदा की। यदि ये माया ही न होती तो वे भी उस समय में पृथ्वी पर न होते। कबीर ने कहा है कि - "कनक और कामिनी केवल विष ही नहीं अपितु विष का फल है। ये दोनों ऐसे हैं जिन्हें देखने मात्र से ही विष चढ़ता है।"[3] इसका अभिप्राय यह हुआ कि कबीर को न जाने कितनी बार विष चढ़ गया होगा क्योंकि उनके साथ संत कवयित्रियां भी थीं। संतों ने पतिव्रता की बहुत प्रशंसा की और व्यभिचारिणी स्त्री की निंदा। किन्तु स्त्री का व्यभिचारिणी रूप भी तो पुरुषों ने ही बनाया है। पति के लिए जहां वह एक से अधिक स्त्रियों से सहगमन उचित मानते हैं वहां स्त्री के लिए यह सब अनुचित। एक ओर तो कुछ संत पतिव्रता की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि वह सब कुछ छोड़कर सिर्फ पति में ही

(15)

बेगमपुरा

संपादक
डॉ. राजेश पासवान

261

विक्टोरियस पब्लिसर्ज़ (इंडिया)

विक्टोरियस पब्लिसर्ज़ (इंडिया)

डी-5 जी./एफ., ग्राऊंड फ्लोर
पांडव नगर, शांति नर्सिंग होम के नजदीक
(मदर डेयरी के सामने), दिल्ली-110092
ई-मेल: victoriouspublishers12@gmail.com
मोबाइल: +91-8826941497

शाखा कार्यालय

हाउस नं.-152, रोड नं.-12
पटेल नगर, हटिया, रांची-834003 (झारखण्ड)
मोबाइल- +91-9973032322

कॉपीराइट© संपादक

प्रथम संस्करण फरवरी 2017

ISBN 978-93-84224-85-1

मूल्य: 1195 रुपए मात्र

खण्डन: लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। किसी भी चूक या अनजाने में विचारों की त्रुटियों के लिए संपादक तथा प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होगा।

©सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। इस प्रकाशन के किसी भी अंश को संपादक तथा प्रकाशक की अनुमति प्राप्त किए बिना किसी भी रूप, या किसी भी माध्यम से पुनर्प्रकाशित या प्रसारित नहीं किया जा सकता।

पूजनीया माताजी
स्वर्गीय श्रीमती सूर्या देवी
को सादर समर्पित!

बंगमपुरा

13. संत रैदास का सामाजिक चिंतन — 61-66
सना फातिमा

14. मध्यकालीन समाज एवं दलित वर्ग : संत रविदास — 67-69
संध्या चौरसिया

15. Present Situation of Ravidassia Community — 70-77
Dr. Sanjay Kumar Bhasin

16. हिन्दू धर्म एवं संतगुरु रविदास — 78-81
डॉ. संजीव रंजन 'अमरेश'

17. संत कवियों के स्त्री-विषयक दृष्टिकोण — 82-86
डॉ. सरोज कुमारी

18. दलितों के उद्धारक संत रविदास — 87-92
डॉ. सीमा चन्दन

19. संत रविदास के काव्य में सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश — 93-97
शबनम तब्बसुम

20. संत रविदास की दार्शनिक पद्धति — 98-103
शहाना

21. संत रविदास का दार्शनिक चिंतन — 104-107
शाईस्ता सैफ़ी

22. कबीर और रविदास : वैचारिक अंतःसंबंध — 108-111
शर्मिला राठी एवं श्रुति सुधा आर्या

23. संत कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण — 112-116
डॉ. शीतल

24. जो दीसै सो सकल समाया — 117-134
शीलबोधि

25. संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास का सामाजिक, धार्मिक, दार्शनिक चिंतन एवं बौद्ध धर्म — 135-145
डॉ. शिवचरन सिंह पिप्पल

26. संत रविदास की संत कथाएं — 146-148
शुमायला कौसर

27. प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी — 149-154
डॉ. स्नेह लता गुप्ता

28. हम न मरहिं मरिहैं संसारा — 155-157
सोनम सिंह

29. वर्तमान परिप्रेक्ष्य : संतगुरु रविदास — 158-162
सोनिया

30. इक्कीसवीं सदी में संतगुरु रविदास की प्रासंगिकता — 163-165
सुभाष कुमार

31. नीचहूँ ऊँच करे : संतगुरु रविदास — 166-169
सुधा निकेतन रंजनी

32. इक्कीसवीं सदी में संतगुरु रविदास की प्रासंगिकता — 170-172
डॉ. सुधा सिंह

33. संतगुरु रविदास के काव्य की वर्तमान में प्रासंगिकता — 173-176
डॉ. सुधा सिसोदिया

34. संत रविदास पर बौद्ध दर्शन का प्रभाव — 177-180
डॉ. सुनीता

35. दलित साहित्य के प्रेरक महापुरुष संतगुरु रविदास — 181-185
डॉ. सुनीता देवी

36. संत काव्य में रैदास परम्परा — 186-190
डॉ. सुनीता मौर्या

37. संत रविदास और उनका सामाजिक चिन्तन — 191-205
डॉ. सूरजभान सागर

38. संतगुरु रविदास का सांस्कृतिक चिन्तन — 206-208
सूरजपाल सिंह

39. संत रविदास का सामाजिक चिन्तन — 209-214
डॉ. सुरेश कानडे

40. इक्कीसवीं सदी में संत रविदास की प्रासंगिकता — 215-217
सुशील कुमारी एवं मंजू देवी

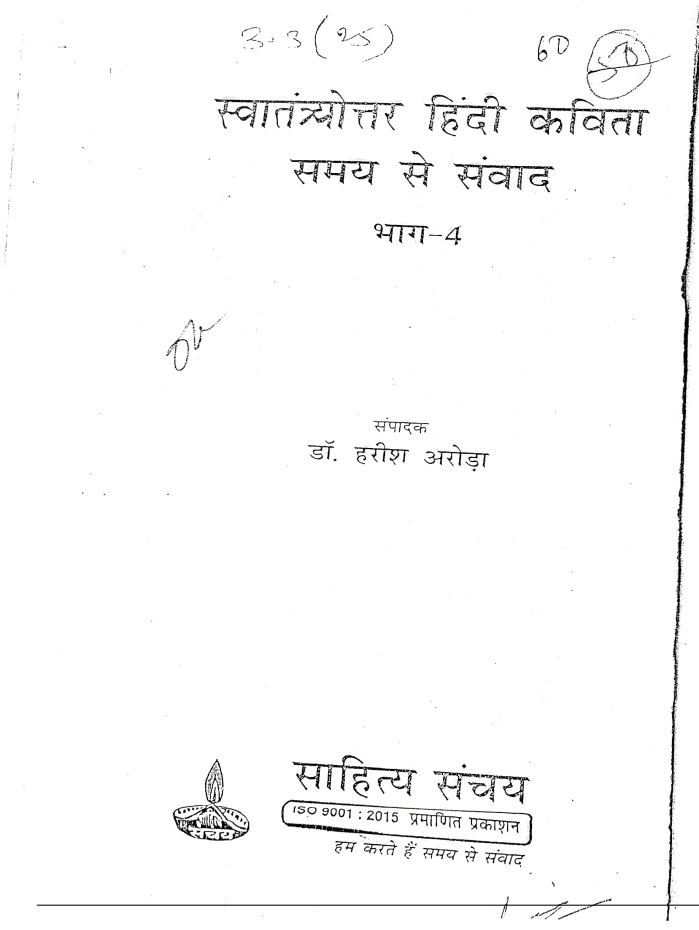

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता समय से संवाद

भाग-4

संपादक
डॉ. हरीश अरोड़ा

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद

नयी कविता के परिप्रेक्ष्य में अज्ञेय का बिंब विधान एवं काव्य

डॉ. ओमवीर सिंह
विवेकानंद कॉलेज

नई कविता के क्षेत्र में कवियों ने अपनी-अपनी कविता में अनेक बिंबों का चित्रण किया है जिससे उनकी कविता अधिक प्रभावशाली बन गई है। कवि 'अज्ञेय' की कविता में भी अनेक बिंब दिखलाई पड़ते हैं। इन बिंबों का प्रयोग व्यापक स्तर पर हुआ है। वस्तुत: 'अज्ञेय' की कविता विविध बिंबधर्मी है। वास्तव में बिंब की कोई भी जाति या प्रकार ऐसा नहीं है जो उनकी रचनाओं में प्राप्त न हो। अत: उनकी बिंब-चित्रण की कुशलता बढ़ती गई है। 'अज्ञेय' की कविता में जो बिंब सहज प्राप्त है, उनको उनकी कविता में अनेक स्थानों पर देखा जा सकता है। यहाँ किसी विचार या भाव की पृष्ठभूमि में प्रकृति के नाना रूपों के बिंब 'अज्ञेय' की कविता में आये हैं। उनकी अनेक कविताएं प्रकृति बिंबों से आच्छादित हैं। यहाँ पर ऋतुराज की प्राकृतिक सुषमा का एक चित्र देखिए-

> शिशिर ने पहन लिया बसंत का दुकूल
> गंधवह उड़ रहा पराग धूल झूल
> काँटों का किरीट धारे बने देवदूत
> पीत-वसन दमक उठे तिरस्कृत बबूल।''

यहाँ पर ऋतुराज ने बसंत का मुकुट पहन लिया है और वायु पराग लेकर उड़ने लगी है। तब अपमानित एवं तिरस्कृत बबूल भी पीले वस्त्रों में दिखने लगा। अत: काँटे मुकुट बन गए हैं। यहाँ ऋतुराज की महिमा प्रकट होती दिखलाई पड़ती है। वस्तुत: प्रकृति के विविध पुष्प, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, छोटे जीव-जंतु आदि के बिंब भी अज्ञेय की कविता में प्रचुर मात्रा में देखने को मिलते हैं। अज्ञेय कविता में अलंकृत बिंब वे होते हैं, जहाँ बिंबों में अलंकारों का चमत्कार विशेष रूप से मुखरित होता है। इन बिंबों का आधार कलात्मक सौंदर्य का विधान परिपूर्ण होता है। 'अज्ञेय' ने इस प्रकार के अनेक बिंबों का सफल संयोजना किया है–'*पति-सेवा-रत साँझ/उचकता देख पराया चांद/लला कर ओट हो गई।*''

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता
समय से संवाद

भाग-4

संपादक
डॉ. हरीश अरोड़ा

साहित्य संचय
ISO 9001 : 2015 प्रमाणित प्रकाशन
हम करते हैं समय से संवाद

© लेखक

(49)

ISBN : 978-93-82597-72-8

प्रकाशक
साहित्य संचय
बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता,
सोनिया विहार, दिल्ली-110090
फोन नं. : 09871418244, 09136175560
ई-मेल - sahityasanchay@gmail.com
वेबसाइट - www.sahityasanchay.com

ब्रांच ऑफिस
ग्राम : बहुरार, पोस्ट : ददरी
थाना : नानपुर, जिला : सीतामढ़ी
पटना (बिहार)

नेपाल ऑफिस
राम निकुन्ज, पुतलीसडक
काठमांडो, नेपाल-44600
फोन नं. : 00977 9841205824

प्रथम संस्करण : 2017
कवर डिजाइन : एम डी सलीम

मूल्य : ₹ 995/- (भारत, नेपाल) (4 भागों में सम्पूर्ण)
मूल्य : $ 15/- (अन्य देश) सैट का मूल्य : ₹ 3500/-)

SWATANTRYOTTAR HINDI KAVITA NAYE RACHNATMAK SAROKAR
Part-4
Edited by Dr. Harish Arora

साहित्य संचय, बी-1050, गली नं. 14, पहला पुस्ता, सोनिया विहार, दिल्ली-110090 के मनोज कुमार द्वारा प्रकाशित तथा श्रीबालाजी ऑफसेट, दिल्ली द्वारा मुद्रित।

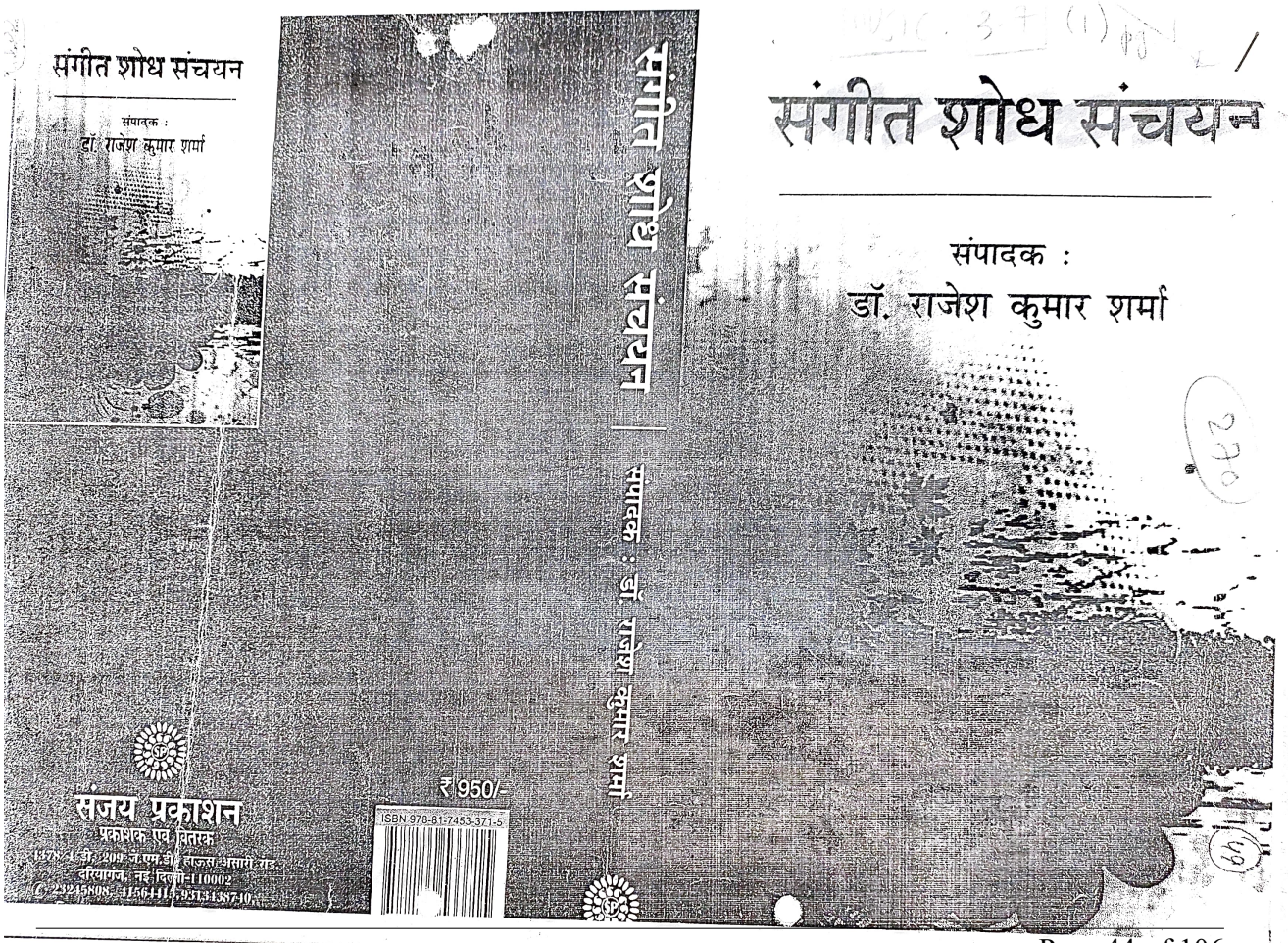

संगीत शोध संचयन
संपादक :
डॉ. राजेश कुमार शर्मा
संगीत शोध संचयन | संपादक : डॉ. राजेश कुमार शर्मा
₹ 950/-
ISBN 978-81-7453-371-5
संजय प्रकाशन
प्रकाशक एवं वितरक

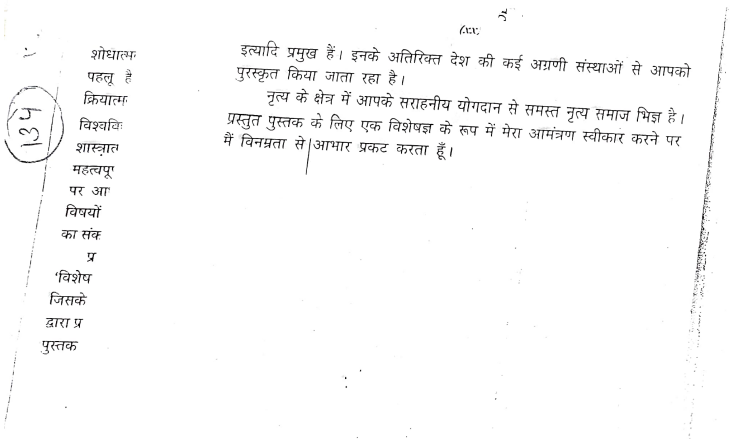

शोधात्मक
पहलू है
क्रियात्मक
विश्वविद्
शास्त्रात्म
महत्वपूर्
पर आ
विषयों
का संक
प्र
'विशेष
जिसके
द्वारा प्र
पुस्तक

(xx

इत्यादि प्रमुख हैं। इनके अतिरिक्त देश की कई अग्रणी संस्थाओं से आपको पुरस्कृत किया जाता रहा है।

नृत्य के क्षेत्र में आपके सराहनीय योगदान से समस्त नृत्य समाज भिज्ञ है। प्रस्तुत पुस्तक के लिए एक विशेषज्ञ के रूप में मेरा आमंत्रण स्वीकार करने पर मैं विनम्रता से आभार प्रकट करता हूँ।

अनुक्रम

आशीर्वचन (पं. विद्याधर व्यास)	*v*
आशीर्वचन (PT. RAJENDRA PRASANNA)	*vii*
संपादकीय	*ix*
कृतज्ञता ज्ञापन	*xi*
विशेषज्ञ समीक्षा समिति	*xiii*
प्रो. मधु बाला सक्सेना	*xv*
प्रो. भारती शर्मा	*xvii*
श्री कलाकृष्ण	*xix*
1. भारतीय शास्त्रीय संगीत के संरक्षक : बड़ौदा के महाराजा श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड़ / डॉ. राजेश गोपालराव केलकर	1
2. Music in Kuchipudi Dance / Dr. Vanaja Uday	8
3. 'कश्मीर प्रांत का संगीत एवं लोक संगीत के विविध आयाम' / डॉ. दीपा वार्ष्णेय	18
4. Tabla: On the edges of time.... / Pandit Ashis Sengupta	32
5. तबला साहित्य–कल्पना एवं सौंदर्य / डॉ. राहुल स्वर्णकार	35
6. उत्तर भारतीय संगीत में हारमोनियम का स्थान : एक अवलोकन / डॉ. सुनील कुमार	41
7. सोलन जनपद की संस्कृति एवं संगीत / डॉ. दलीप कुमार शर्मा	46
8. Therapeutic Aspects of Indian Classical Music / Dr. Shambhavi Das	54
9. कलाओं के संरक्षण में संगीत नाटक अकादमी का योगदान / डॉ. पूजा गोस्वामी	60

'कश्मीर प्रांत का संगीत एवं लोक संगीत के विविध आयाम'

डॉ. दीपा वार्ष्णेय

कश्मीर भारत माता का लावण्यमय रजत मुकुट है जो अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिए दुनियाभर में अपना खास मुकाम रखता है। कश्मीर शब्द वैदिक भाषा के तीन शब्दों (क) कम्. (ख) अश्म. (ग) ईर से मिलकर बना है। जिसमें 'कम' शब्द का अर्थ नदी, जलप्रपात, सरिता, सरोवर इत्यादि है तथा 'अश्म' शब्द प्रस्तर, पाषाण, पत्थर, शिला, पर्वत, हिम-शृंग इत्यादि का प्रतिनिधित्व करता है। 'ईर' शब्द पानी और पर्वत की आपसी घर्षणा के एक सक्रिय रूप चेतना को प्रस्तुत करता है। आपस में जुड़ने के उपरांत 'कश्मीर' अर्थात् इस 'पृथ्वी का स्वर्ग' जहाँ नदियाँ, झरने, सरोवर, ऊँचे-ऊँचे हरित पर्वत, हिम शृंखलाएँ तथा पानी और पर्वत के घर्षण से उत्पन्न मधुर संगीत सुनाई देता है। जहाँ देवदार व चीड़ के वृक्षों से हरित और भरित वन हों, जैसे माँ भारती का मखमली मुकुट, वह कश्मीर है।

इस क्षेत्र की अपनी एक विशिष्ट व समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। कश्मीर का नाम ऋषि 'कश्यप' के नाम पर पड़ा। कश्मीर में गायन की परम्परा का इतिहास अति प्राचीन काल से ही आरम्भ हो गया था। सनातन वैदिक युग से ही कश्मीर में सामगायन की अक्षुण्य परम्परा रही है। इसकी व्याख्या कश्मीर के चिर-प्राचीन इतिहास सम्मत सांस्कृतिक ग्रन्थ 'नीलमत पुराण' में भी मिलती है।

''गीतैर्नृतैस्तथा वाद्यै ब्रह्मघोषैस्तथैव च''

(ब्रह्मघोष अर्थात् 'सामगाने' का गायन संगीत के वाद्यों, गीतपरक लय तथा नृत्य से आयोजित करना चाहिए)[1]।

इससे यह स्पष्ट होता है कि कश्मीर वेदों की धार्मिक संस्कृति का विशिष्ट उद्गम स्थल रहा है। वैदिक साहित्य के सशक्त ॐ मन्त्र का भी भव्य विवेचन 'नीलमत पुराण' में मिलता है। राजतरंगिणि नामक ग्रंथ के लेखक एवं एक महान इतिहासकार 'कल्हण' ने अपने ग्रंथ में कश्मीर के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की सविस्तार व्याख्या की है[2]।

वैदिक युग के उपरांत कश्मीर में बौद्ध धर्म प्रभाव में आया। 'कल्हण' की 'राजतरंगिणी' के साक्ष्य के आधार पर मौर्य सम्राट, 'अशोक' स्वयं कश्मीर में बौद्ध धर्म के प्रचार व प्रसार के लिए आगे आए।

'कल्हण' के अनुसार कश्मीर कभी भी भारतीय सांस्कृतिक धारा से विच्छिन्न होकर नहीं रहा है। पर्यटक, विद्वान, संगीतज्ञ, साहित्य कर्मी, शिल्प-वस्तुकार, चित्रकार, पाषाण मूर्तिकार और न जाने किन-किन विषयों के पारखी कश्मीर से भारत के अन्य प्रांतों, प्रदेशों और जनपदों को जाते थे और भारत के अलग-अलग क्षेत्रों से कितने ही कला पारखी कश्मीर आते थे। संचार और यातायात की असुविधा के होते भी लोगों का कश्मीर आना और कश्मीर से अन्य जनपदों में जाना निर्बाध रूप से चलता रहता था। कश्मीर के दरबार संगीत कलाकारों व रचनाकारों से भरे रहते थे। मौर्य सम्राट अशोक के बेटे 'जलौक' ने कश्मीर नरेश बनने के उपरांत बौद्ध विहारों में संगीत शिक्षा का प्रबंध किया। कश्मीर में रामायण के सस्वर गायन की परिपाटी का चलन उसी समय से माना जाता है। इसके पश्चात्, सम्राट कनिष्क संगीत के विशद प्रेमी और संगीत के विशेषज्ञ थे। उनके समय में कश्मीर में संगीत का विशेष प्रचार व प्रसार हुआ। उस समय के वाद्यों में वीणा व ढोल का वर्णन भी यदा-कदा मिलता है। इसके पश्चात्, महाराजा ललितादित्य का युग साहित्य, संगीत कला और स्थापत्य कला की दृष्टि से अविस्मरणीय युग रहा। इनके राज्यकाल में कश्मीर में लोकगीत, लोक नृत्य तथा लोक व शास्त्रीय वाद्यों का प्रचरण विशदता से सम्पन्न था।[3]

ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर यह ज्ञात होता है कि भरत मुनि का घनिष्ठतम सम्पर्क कश्मीर से था, क्योंकि भरत के नाट्यशास्त्र के अधिकांश और अनिवार्य भाष्यकार प्रायः कश्मीर के दार्शनिक व काव्यशास्त्री ही रहे हैं, जिनमें आचार्य अभिनवगुप्त, भट्ट, उद्भट, आचार्य लोल्लट और कश्मीर नरेश मातृगुप्त, आचार्य शंकुक, भट्टनायक, भट्टयन्त्र, आचार्य भामभट्ट, आचार्य उद्भट, आचार्य महिम भट्ट, आचार्य वामनगुप्त, आचार्य आनन्दवर्द्धन, आचार्य कुन्तक, आचार्य रूचक, आचार्य मंख, आचार्य तिलक, आचार्य व संगीत सम्राट

(219)

Dr. Sunil Verma

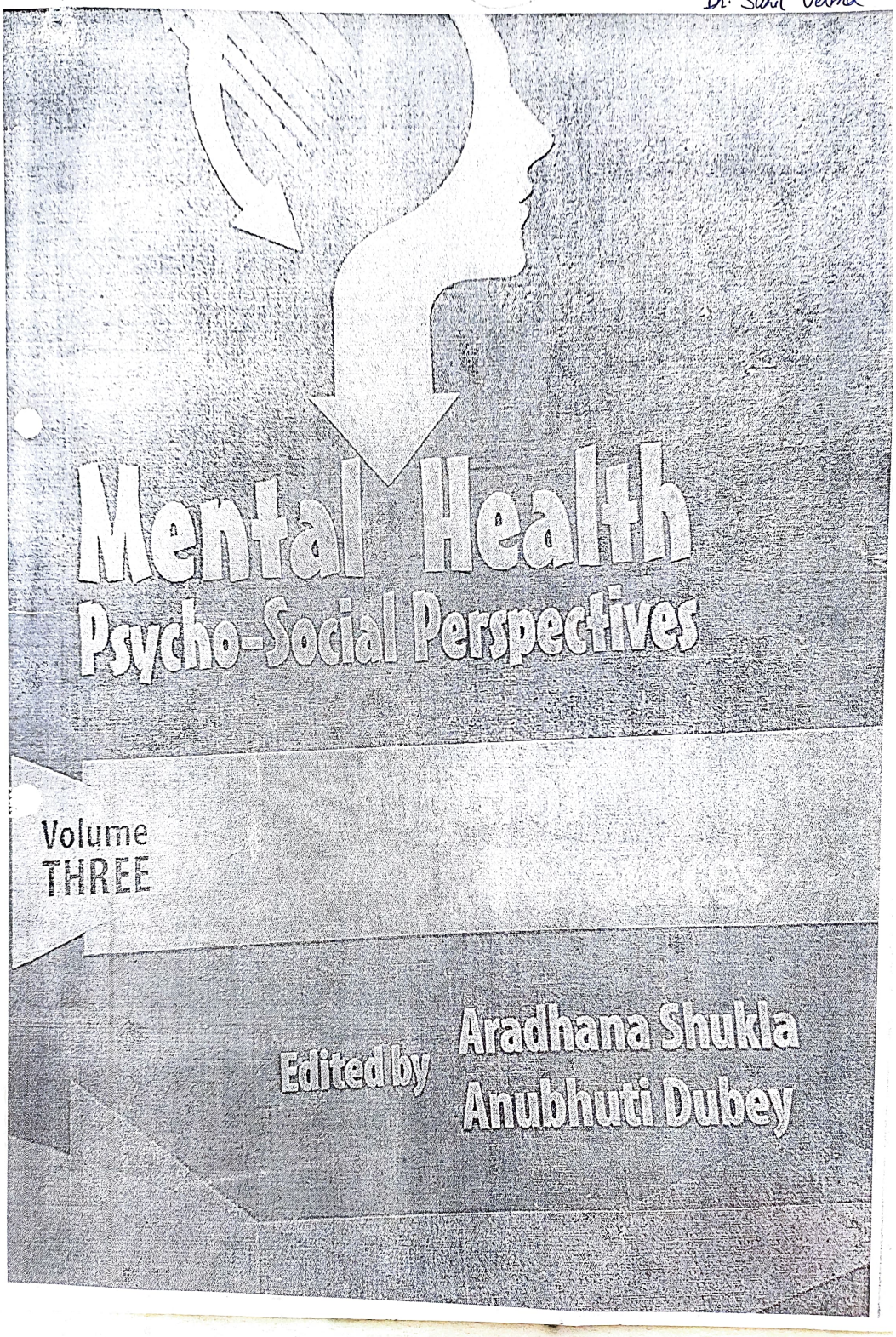

220

MENTAL HEALTH
Psycho-Social Perspective

Volume Three
Strength of Human Resources

Edited by
Aradhana Shukla
Anubhuti Dubey

CONCEPT PUBLISHING COMPANY PVT. LTD.
NEW DELHI-110059

Mental Health: Strength of Human Resources Vol. III

iv

© Editors

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, stored, adapted, or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, micro-filming, recording or otherwise, or translated in any language, without the prior written permission of the copyright owner and the publisher. The book is sold subject to the condition that it shall not, by way of trade or otherwise, be lent, resold, hired out, or otherwise circulated without the prior publisher's written consent in any form of binding or cover other than that in which it is published.

The views and opinions expressed in this book are author(s) own and the facts reported by him/her have been verified to the extent possible, and the publishers are not in any way liable for the same.

ISBN-13: 978-93-5125-173-6 (Series)
ISBN-13: 978-93-5125-171-2 (Vol. III)

First Published 2017

Published and Printed by

Concept
Since 1974

Concept Publishing Company Pvt. Ltd.
Regd. Office:
A/15-16, Commercial Block, Mohan Garden,
New Delhi-110059 (INDIA)
Phones : 25351460, 25351794, *Fax* : 091-11-25357109
E-mail : publishing@conceptpub.com
Website: www.conceptpub.com

Editorial Office: H-13, Bali Nagar, New Delhi-110 015, India

Cataloging in Publication Data—DK Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>

Mental health : psycho-social perspectives / edited by Aradhana Shukla, Anubhuti Dubey.
pages cm
Contributed articles.
Includes bibliographical references and index.
Contents: volume three. Strength of human resources — volume four. Therapeutic applications
ISBN 9789351251712 (vol. III)
ISBN 9789351251729 (vol. IV)
ISBN 9789351251736 (series)
1. Mental health—Social ...
Aradhana, editor. II. ...

...Health: Strength of Human Resources : Vol III

...Positive Mental Health 124
... A. Shanmugiah and *R. Jeyaprakash*

...Health: Preventing Negative and Enhancing Positive 149
... and *Anubhuti Dubey*

... Beyond Boundaries: A Theoretical Analysis 165
... Verma and *Pankaj Bharti*

12. Promoting Mental Health, Quality of Work Life and Productivity of Employees in India: The Application of Positive Psychology 174
... Shetgovekar

13. Positivity: Strength of Human Resources for Mental Health 197
Subhash Meena

14. Wellness Among Elderly: A Study in Institutionalized Homes 211
Archana Shukla and *Shilpa Singh*

15. Mental Health and Death Anxiety in Old Age 221
Bharat H. Mimrot

16. Mental Health, Well-being and Quality of Life as Correlates of Successful Ageing 236
Harshita Shukla and *Anubhuti Dubey*

17. Paid for Life: Relational World of FSW (Female Sex Workers) 249
Archana Shukla and *Deepti Mehrotra*

18. Impact of Peer Pressure and Parenting Behaviour on Adolescents' Cigarette Smoking Tendency: An Overview 267
Purnima Awasthi, Ravi P. Pandey and *Saroj Verma*

19. Cognitive Competence of the Tribal Children of South Kamrup District 287
Rito Rani Talukdar

20. Promoting Marital Life: Comparison of Capital and Non-Capital Region 298
Megha Kharkwal and *Aradhana Shukla*

21. Cultivating New ...

का भावानुकूल वाचन होने से कविता-शिक्षण सरस बना रहता है।

5. खंडान्व्य विधि : कविता शिक्षण की इस विधि में शिक्षक कविता के सस्वर पठन-पाठन के उपरान्त सम्पूर्ण कविता को क्रमानुसार छोटे-छोटे खंडों में विभक्त कर देता है। तत्पश्चात हरेक खंड पर एकाधिक प्रश्नों का निर्माण करके विद्यार्थियों से प्रश्न पूछता है। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देते हैं। जहाँ विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थता दिखाते हैं वहीं शिक्षक कविता के अर्थ एवं भाव स्पष्ट करके उन्हें फिर समझाता है।

6. व्यास विधि : इस विधि में शिक्षक कविता के अर्थ एवं भाव के स्पष्टीकरण के लिए उसमें छिपी पौराणिक, ऐतिहासिक आदि कथाओं को स्पष्ट करता है। प्रसंगों की व्याख्या करता है, कविता की भाषा एवं शैली का विस्तृत विवेचन करता है, कविता के तत्वों—भाव, छंद, अलंकार, रस आदि का दार्शनिक विवेचन करके कविता के संपूर्ण भाव को स्पष्ट कर देता है।

7. तुलना विधि : शिक्षण की इस विधि में शिक्षक कक्षा में पढ़ाई जाने वाली कविता की तुलना उसी भाषा अथवा अन्य भाषाओं की समानार्थक कविताओं के साथ करते हुए कविता विशेष का स्पष्टीकरण करता है।

8. समीक्षा विधि : इस विधि द्वारा कविता की समीक्षात्मक व्याख्या की जाती है अर्थात् कविता के भावात्मक एवं कलात्मक दोनों पक्षों का आलोचनात्मक विवेचन करता है। विद्यार्थियों को संदर्भ ग्रंथों एवं समीक्षात्मक ग्रंथों की जानकारी भी दी जाती है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि भारतीय और पाश्चात्य दोनों ही विद्वानों ने प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान समय तक विद्वानों और कविता के पठन-पाठन, शिक्षण में रुचि रखने वालों के लिए कविता के बारीक से बारीक अंश को भी व्याख्यायित करने का प्रयास किया है। जिससे कविता के प्रति पाठक की समझ विकसित होती है और काव्य शिक्षण में अभिरुचि विकसित होती है। जैसे-जैसे मनुष्य का भाव जगत विकसित होता जाएगा और भौतिक जगत में बदलाव आते जाएंगे, वैसे-वैसे कविता और उसके शिक्षण की चुनौतियां भी बढ़ती जाएंगी।

सहायक ग्रंथ : *कविता क्या है*—विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, *भारतीय काव्य शास्त्र*—डॉ. नगेन्द्र, *पाश्चात्य काव्य शास्त्र*—देवेन्द्र शर्मा, *हिन्दी शिक्षण*—दुर्गेश नन्दिनी, *कविता क्या है* (निबंध) *आचार्य रामचन्द्र शुक्ल हिन्दी शिक्षण*—डॉ. उमा मंगल

कविताओं में अरुचि के कारण

डॉ. शीतल

प्रारंभ में यह जानना आवश्यक है कि शिक्षण क्या है? शिक्षण शब्द वास्तव में शिक्षा से जुड़ा है। जिसका अर्थ ज्ञान प्राप्त करने की क्रिया से लिया जाता है। जिसमें शिक्षक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षक ज्ञान का स्रोत है जिससे ज्ञान प्रस्फुटित होकर विद्यार्थी तक पहुंचता है। शिक्षण के बारे में मारसन लिखते हैं कि "यह शिक्षण प्रक्रिया अधिक परिपक्व व्यक्ति (अध्यापक) तथा अपरिपक्व व्यक्ति (बालक) के मध्य प्रगाढ़ संबंध को दर्शाती है।"[1]

शिक्षक एक पथ प्रदर्शक के रूप में अपने विद्यार्थी का व्यक्तित्व निर्माण करता है। जिससे विद्यार्थी को सृजनात्मक क्षमताओं के विकास में सहायता मिलती है। शिक्षण का अर्थ संकुचित तथा व्यापक दोनों रूपों में होता है। संकुचित अर्थ में यह सिर्फ ज्ञान प्रदान करने की क्रिया है जबकि व्यापक अर्थ में इसमें शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यवस्तु भी आ जाती है। इन तीनों में से एक को भी हटा दे तो यह क्रिया महत्त्वहीन हो जाएगी। 'शिक्षण में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न की जाती हैं जिसमें कुछ रिक्त स्थान तथा कठिनाइयाँ उत्पन्न हो जाती हैं, व्यक्ति इन कठिनाइयों पर विजय पाने का प्रयास करता है जिसके फलस्वरूप वह सीखता है।"[2]

किसी भी प्रकार के शिक्षण के लिए भाषा का होना अनिवार्य है। भाषा ही साहित्य को आधार प्रदान करती है और भाषा की वास्तविक शक्ति साहित्य में ही देखने को मिलती है। साहित्य भी भाषा का परिष्करण और परिमार्जन करता है। साहित्य को समाज का दर्पण माना जाता है। यह मनुष्य की सौन्दर्य चेतना को विकसित करता है। जिससे पाठक को आनंद की अनुभूति होती है। साहित्य के चार प्रमुख तत्व माने जाते हैं—भाव, विचार, कल्पना और अभिव्यक्ति। साहित्यकार सबसे पहले भावों को अनुभूत करता है। फिर उस अनुभूति को विचारों से बांधता है और इन विचारों को कल्पना से संवार कर अपनी शैली में अभिव्यक्त करता

है। इसी अभिव्यक्ति को साहित्य कहा जाता है। साहित्य के मुख्यतः दो रूप होते हैं—पद्य और गद्य। पद्य के अंतर्गत कविता के सभी रूप आते हैं—गीत, प्रगीत, छंदमुक्त रचनाएं, अकविता, नई कविता, खंडकाव्य प्रबंधकाव्य आदि। गद्य के अंतर्गत निबंध, कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, व्यंग्य, डायरी, यात्रावृत, रिपोतार्ज, संस्मरण, रेखाचित्र आदि आ जाते हं। भाषा शिक्षण और साहित्य शिक्षण में वास्तव में अंतर होता है। भाषा शिक्षण भाषिक क्षमताओं, दक्षताओं, कुशलताओं, योग्यताओं का विकास करता है जबकि साहित्य शिक्षण जीवन को समझने की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। साहित्य का शिक्षण उसकी अनेक विधाओं के माध्यम से होता है। साहित्य की इन विधाओं के अस्तित्व का कारण उनके प्रस्तुतीकरण एवं भाषा-शैलियों की भिन्नता है। इसलिए सभी विधाओं को एक ही ढंग से पढ़ाना उचित नहीं है। दूसरी बात यह है कि एक ही विधा की विभिन्न रचनाओं को भी एक निश्चित ढर्रे से पढ़ाना संभव नहीं हैं। साहित्य शिक्षण की अनेक विधियां हो सकती हैं। यह शिक्षक को ही निर्णय करना होगा कि किस विधा की किस रचना के लिए शिक्षण उद्देश्यों, कक्षा स्थिति और समय की सीमा को ध्यान में रखते हुए कौन-सी विधि अपनाना होगी। कविता शिक्षण की प्रविधियों को जानने से पहले यह जानना जरूरी है कि कविता क्या है? जो रचना छंदोबद्ध हो जाती है उसे ही कविता कहा जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने कहा है कि जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावस्था ज्ञान दशा कहलाती है उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रस दशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं। कविता मनुष्य के भावनात्मक विकास में सहायक होती है। विभिन्न विद्वानों ने कविता की अलग-अलग परिभाषा दी है।

आचार्य श्यामसुंदर दास के अनुसार 'कलात्मक रीति से सजी हुई भाषा, जिसमें भावों की व्यजंना ही कविता कहलाती है।'[4]

मैथ्यू ऑर्नल्ड के अनुसार–'कविता मूल रूप से जीवन की आलोचना है।'[5]

वर्डसवर्थ के अनुसार–'शांति के समय स्मरण किए गए प्रबल मनोवेगों का स्वच्छंद प्रवाह कविता है।'[6]

कहा जाता है, 'जहां न पहुंचे रवि, वहां पहुंचे कवि' अर्थात रवि का कार्य तो जगत को प्रकाशित करना ही है परन्तु कवि अपनी कविता से मानव मन को रस से भर आनंदित कर देता है। वह अपनी कलम से ऐसी चोट करता है जो तलवार भी नहीं कर पाती। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई उद्देश्य होता है। इसी तरह कविता शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थी को काव्यगत विषय से परिचित कराकर भाव सौन्दर्यानुभूति की सक्षमता उत्पन्न करना है। जिससे विद्यार्थियों की

सृजनात्मक शक्तियों का विकास हो और वह कविता रचना के लिए प्रेरित हो।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक की कविता शिक्षण की बात जब आती है तो उसे हम दो भागों में बांटकर समझा सकते हैं, क्योंकि आदिकाल से लेकर रीतिकाल तक की कविताओं का शिक्षण लगभग एक-सा होगा जबकि आधुनिक काल की कविता अलग है। पूर्व आधुनिक कविता में बौद्ध, सिद्ध, नाथ, जैन, चारण भाटों की कविता के साथ-साथ भक्त कवि जैसे कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, मीरा, रहीम, आदि की कविताएं तथा रीति कवि उसे भूषण देव, मतिराम, बिहारी, गिरिधर की कविताएं आ जाती हैं। भक्ति और रीति कविताएं मुख्यतः ब्रज और अवधी में ही लिखी गईं। इनका शिक्षण निम्न प्रकार से करना चाहिए–

कविता वाचन : कविता को भली-भांति वाचन करना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। कविता गद्य नहीं है इसलिए इसे पद्य की ही तरह लय, वर्ण, गति, यति, तुक आदि का ध्यान रखकर पढ़ाना चाहिए। मध्यकालीन कविता मात्रिक छंदयुक्त है। दोहा, चौपाई, पद, सवैया, कवित्त, सोरठा, रोला, छप्पय, कुंडलिया आदि छंदों की लय भी अलग-अलग हैं। इनका वाचन यदि लयपूर्ण ढंग से किया जाए तो अर्थ भी समझने आने लगता है। "छंद की लय के अनुसार ही नहीं अपितु विषय और भाव के अनुसार भी वाचन में अंतर आता है। भूषण के कवित्त ओजस्वी वाणी की मांग करते हैं। और घनानंद के शृंगार परक सवैये और कवित्त कोमल कंठ की। तुको का ध्यान नाद सौन्दर्य को समझने में सहायता करता है। और इससे कविता को याद रखना भी आसान हो जाता है।[7]

अर्थ बोध–कविता शिक्षण में अर्थ का विशेष महत्त्व है। ब्रज और अवधी भाषा के शब्दों का ज्ञान न होने के कारण विद्यार्थी को इसे समझने में कठिनाई होती है। इसलिए इनके कठिन अर्थों को बताना आवश्यक होता है। साथ ही प्रयुक्त अंतःकथाएं या कवि समय, अवधारणाएं, प्रवृत्तियां आदि बताने से अर्थ समझने में सुविधा होती है।

सौन्दर्यानुभूति एवं रसानुभूति–यह कविताएं रस प्रधान कविताएं हैं। अर्थ को जान लेने के पश्चात विद्यार्थी को इसमें रस की अनुभूति होने लगती है। इन कविताओं में शांत, भक्ति, रौद्र, वीर, शृंगार करुणा आदि रस भरे पड़े हैं। जिससे पाठकों को अधिक रस की प्राप्ति हो सकती है। जिससे विद्यार्थी कवि की भावनाओं को भी अनुभूत कर सकता है। जैसे सूरदास की कविता कृष्ण के सौन्दर्य को पाठक की आंखों के सामने ला देती है।

सोभित कर नवनीत लिए।
घुटुरून चलन रेणु तन मंडित गोरोचन तिलक दिए।

आधुनिक कविता–आधुनिक कविता को नवजागरण काल (भारतेन्दु युग),

प्रकाशक : अनन्य प्रकाशन
ई-17, पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110032
फोन नं. 011-22825606, 22824606
E-mail : prakashanananya@gmail.com

© सर्वाधिकार : सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017
आईएसबीएन : 978-93-85450-89-1
मूल्य : ₹ 425
[illegible] र्णवाल
शब्द-[illegible] सिस्टम, दिल्ली-11003[illegible]
मुद्रक [illegible] प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

माँ-पिताजी और भैया को
जिन्होंने मुझे सँवारा

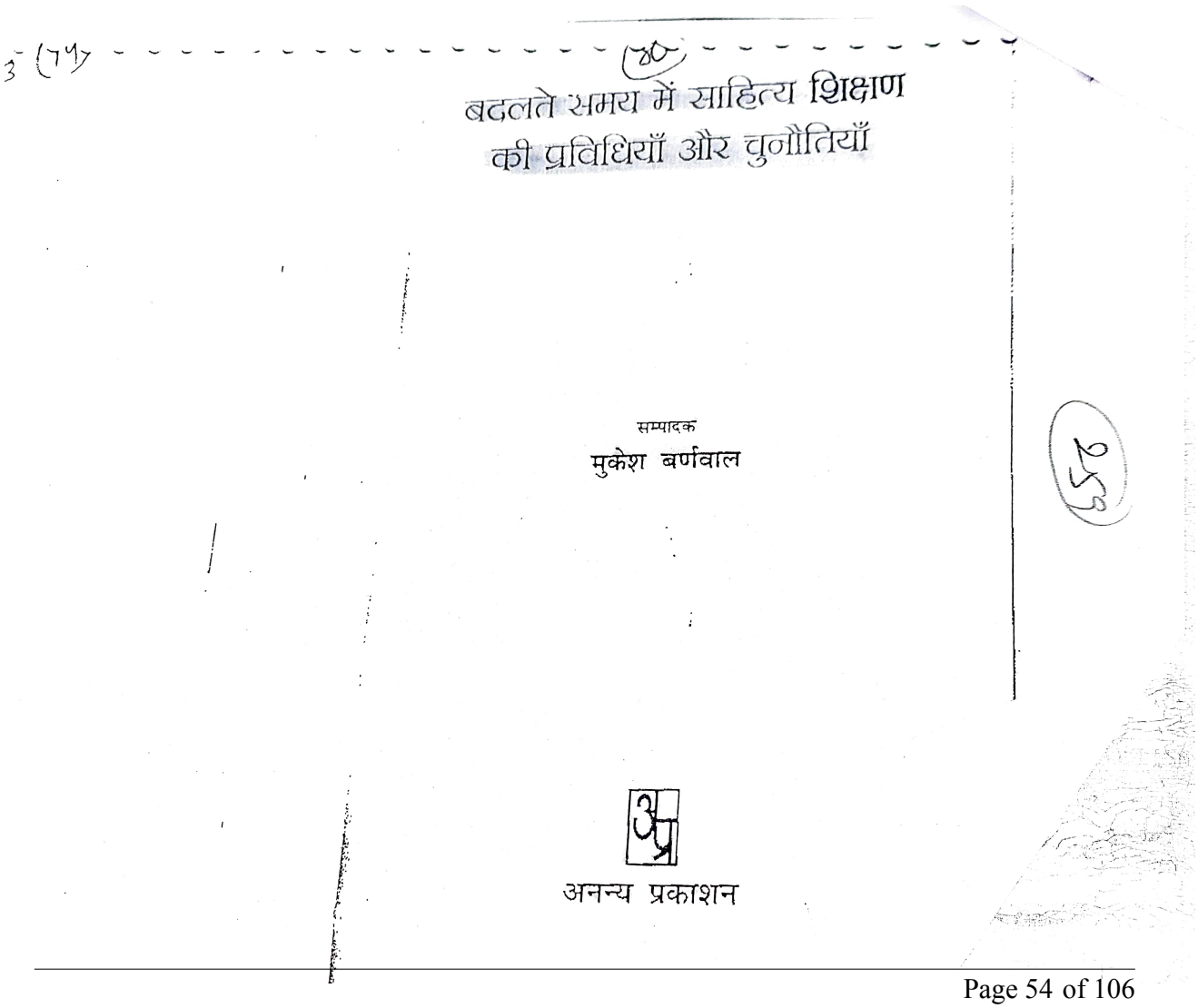
बदलते समय में साहित्य शिक्षण
की प्रविधियाँ और चुनौतियाँ
सम्पादक
मुकेश बर्णवाल
अनन्य प्रकाशन

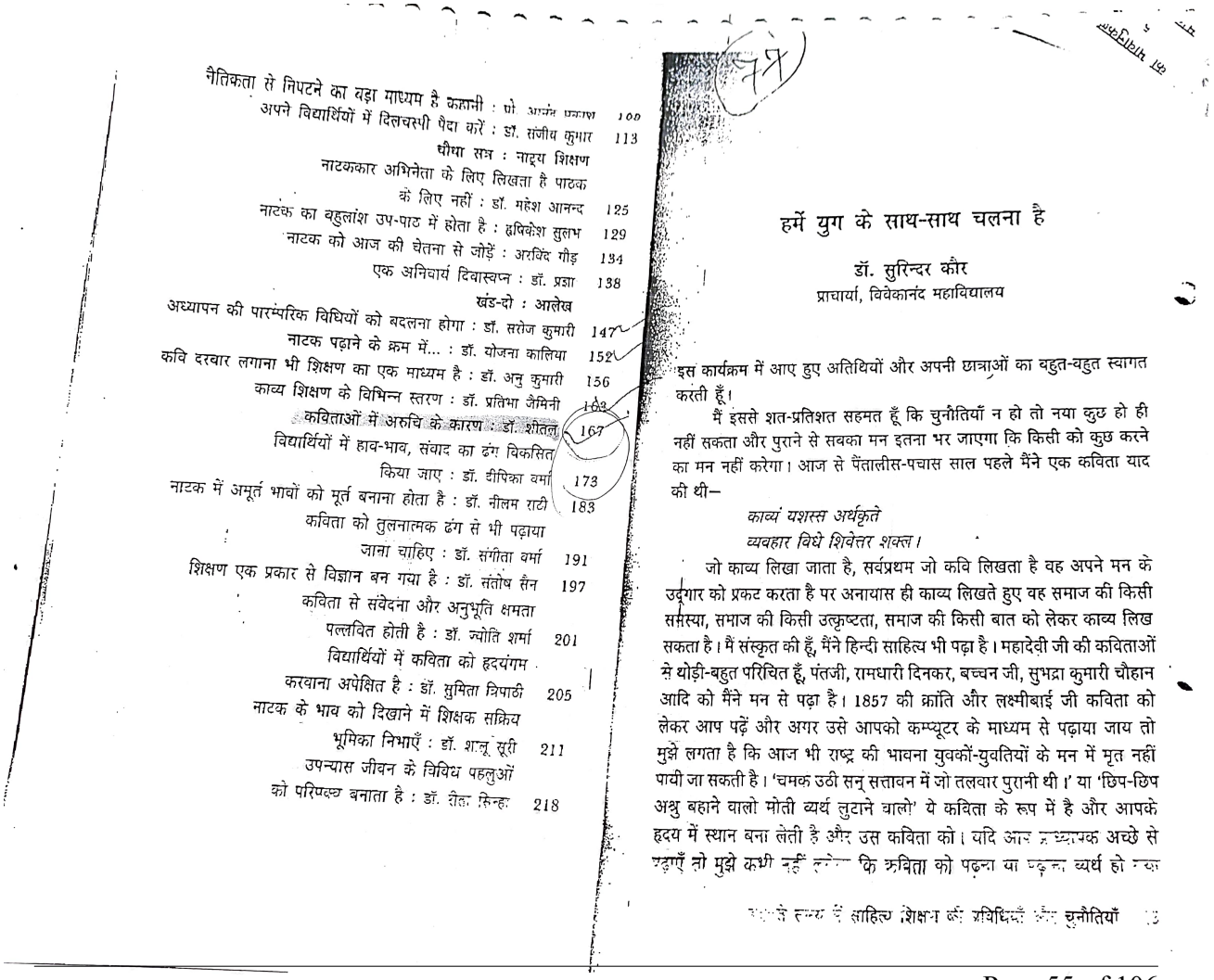

नैतिकता से निपटने का बड़ा माध्यम है कहानी : प्रो. आनंद प्रकाश 100
अपने विद्यार्थियों में दिलचस्पी पैदा करें : डॉ. संजीव कुमार 113
चौथा सत्र : नाट्य शिक्षण
नाटककार अभिनेता के लिए लिखता है पाठक के लिए नहीं : डॉ. महेश आनन्द 125
नाटक का बहुलांश उप-पाठ में होता है : हृषिकेश सुलभ 129
नाटक को आज की चेतना से जोड़ें : अरविंद गौड़ 134
एक अनिवार्य दिवास्वप्न : डॉ. प्रज्ञा 138
खंड-दो : आलेख
अध्यापन की पारम्परिक विधियों को बदलना होगा : डॉ. सरोज कुमारी 147
नाटक पढ़ाने के क्रम में... : डॉ. योजना कालिया 152
कवि दरबार लगाना भी शिक्षण का एक माध्यम है : डॉ. अनु कुमारी 156
काव्य शिक्षण के विभिन्न स्तरण : डॉ. प्रतिभा जैमिनी 163
कविताओं में अरुचि के कारण : डॉ. शीतल 167
विद्यार्थियों में हाव-भाव, संवाद का ढंग विकसित किया जाए : डॉ. दीपिका वर्मा 173
नाटक में अमूर्त भावों को मूर्त बनाना होता है : डॉ. नीलम राठी 183
कविता को तुलनात्मक ढंग से भी पढ़ाया जाना चाहिए : डॉ. संगीता वर्मा 191
शिक्षण एक प्रकार से विज्ञान बन गया है : डॉ. संतोष सैन 197
कविता से संवेदना और अनुभूति क्षमता पल्लवित होती है : डॉ. ज्योति शर्मा 201
विद्यार्थियों में कविता को हृदयंगम करवाना अपेक्षित है : डॉ. सुमिता त्रिपाठी 205
नाटक के भाव को दिखाने में शिक्षक सक्रिय भूमिका निभाएँ : डॉ. शालू सूरी 211
उपन्यास जीवन के विविध पहलुओं को परिपक्व बनाता है : डॉ. रीता सिन्हा 218

हमें युग के साथ-साथ चलना है

डॉ. सुरिन्दर कौर
प्राचार्या, विवेकानंद महाविद्यालय

इस कार्यक्रम में आए हुए अतिथियों और अपनी छात्राओं का बहुत-बहुत स्वागत करती हूँ।

मैं इससे शत-प्रतिशत सहमत हूँ कि चुनौतियाँ न हो तो नया कुछ हो ही नहीं सकता और पुराने से सबका मन इतना भर जाएगा कि किसी को कुछ करने का मन नहीं करेगा। आज से पैंतालीस-पचास साल पहले मैंने एक कविता याद की थी–

काव्यं यशस्स अर्थकृते
व्यवहार विधे शिवेत्तर शक्त।

जो काव्य लिखा जाता है, सर्वप्रथम जो कवि लिखता है वह अपने मन के उद्गार को प्रकट करता है पर अनायास ही काव्य लिखते हुए वह समाज की किसी समस्या, समाज की किसी उत्कृष्टता, समाज की किसी बात को लेकर काव्य लिख सकता है। मैं संस्कृत की हूँ, मैंने हिन्दी साहित्य भी पढ़ा है। महादेवी जी की कविताओं से थोड़ी-बहुत परिचित हूँ, पंतजी, रामधारी दिनकर, बच्चन जी, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि को मैंने मन से पढ़ा है। 1857 की क्रांति और लक्ष्मीबाई जी कविता को लेकर आप पढ़ें और अगर उसे आपको कम्प्यूटर के माध्यम से पढ़ाया जाय तो मुझे लगता है कि आज भी राष्ट्र की भावना युवकों-युवतियों के मन में मृत नहीं पायी जा सकती है। 'चमक उठी सन् सत्तावन में जो तलवार पुरानी थी।' या 'छिप-छिप अश्रु बहाने वालो मोती व्यर्थ लुटाने वालो' ये कविता के रूप में है और आपके हृदय में स्थान बना लेती है और उस कविता को। यदि आप अध्यापक अच्छे से पढ़ाएँ तो मुझे कभी नहीं लगेगा कि कविता को पढ़ना या पढ़ाना व्यर्थ हो गया

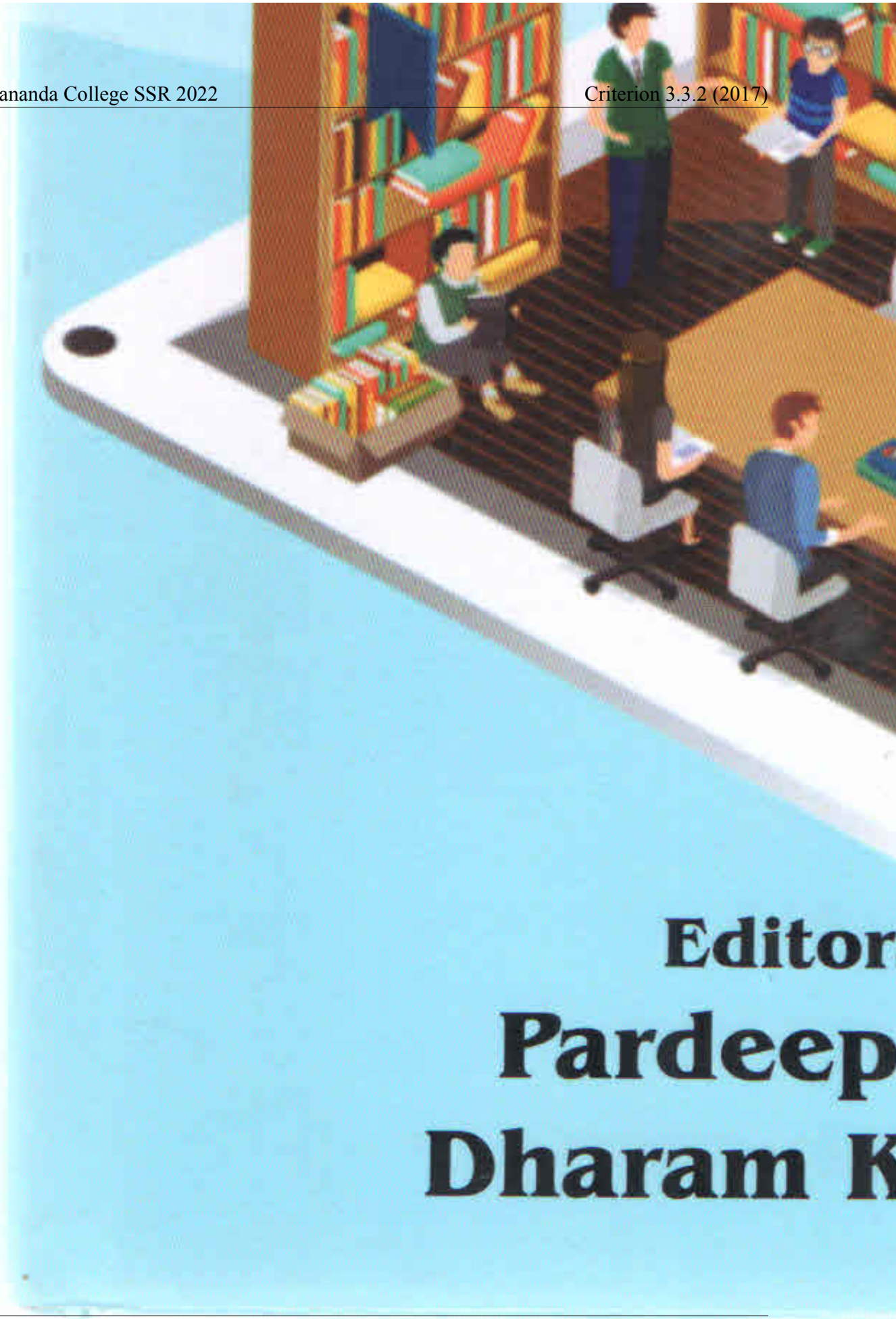
Editor
Pardeep
Dharam K

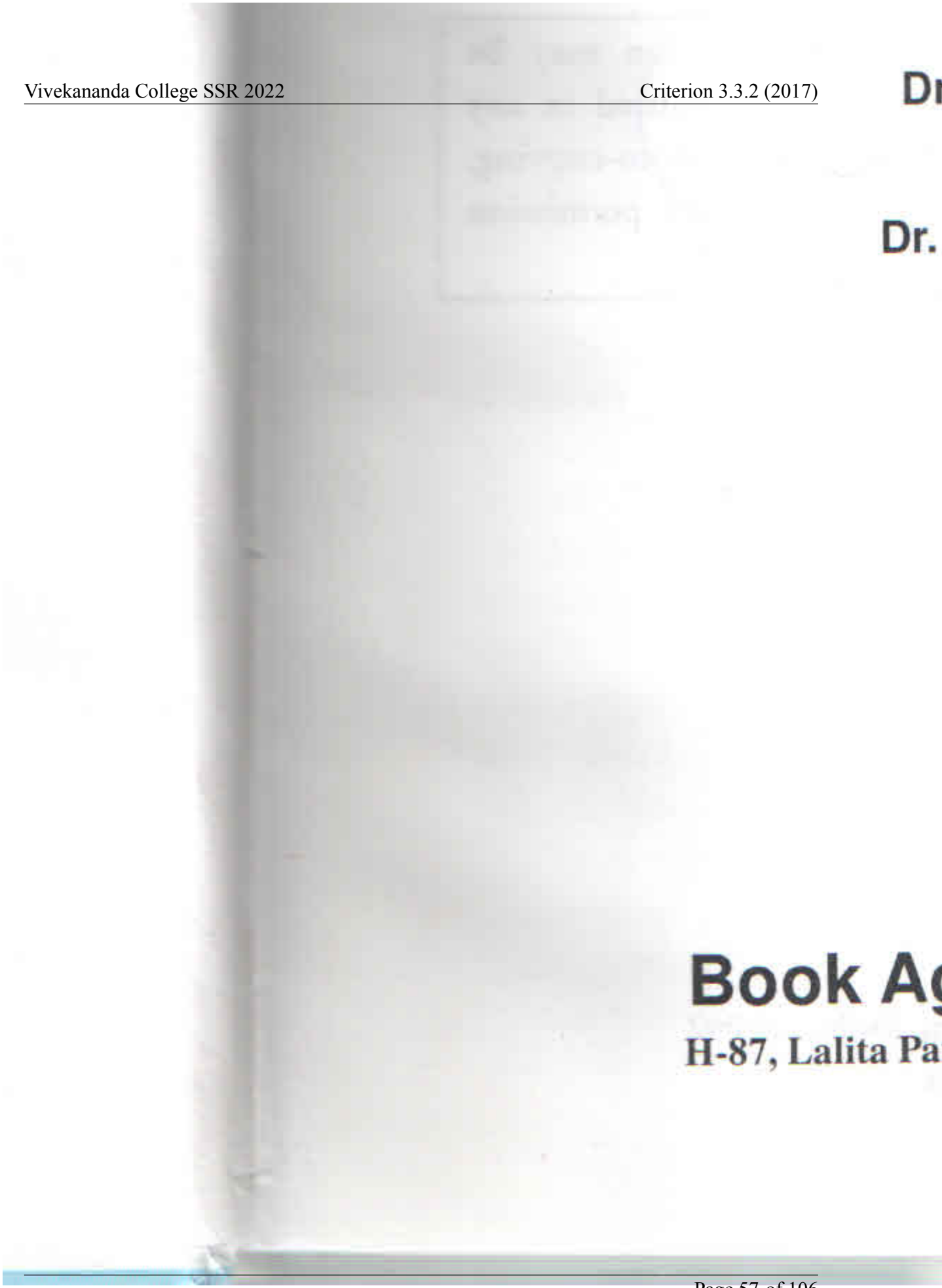

Dr

Dr.

Book Ag

H-87, Lalita Pa

All rights reserved. No part of
reproduced, stored in retrieval sys
form or by any means, electronic,
recording, or otherwise, without th
of the authors and the publishers.

First Edition 2017

© 2017, Author

ISBN: 978-93-83281-68-8

Price: ₹ 595

Laser typeset by MS Computers, Patparganj,
Printed at M.S. Indian Enterprises, Delhi

4. Information Literacy: An
—*Anila S. Bhardwaj and*

5. Ranganathan's Five Laws:
—*Niranjan Singh*

6. IIT's the Knowledge Hub:
—*Prem Kant Mishra and*

7. Technological Challenge to
Gears
—*Poonam Choudhary and*

8. Green Computing
—*Rajni Jindal*

9. Corporate Social Responsibi
Libraries
—*Shaifali*

10. Open Educational Resource
—*Sheela Kumar*

11. Web Scale Discovery Tools
—*O. Sivasankar Prasad*

impacts to use of computers, its manu
to be taken to reduce the harmful imp
is impossible to think of life without con
to learn to live with them in a less
production, and packaging to recycling
ended, a computer should be made in
it is environmentally responsible as we
have realized that going green not onl
in long term but also helps in marketi

Introduction

Green computing is the environment
use of **Computers** and their resourc
defined as the study of designing, man
disposing of **Computing** devices in a wa
impact.

As per International Federation o
(IFG), **Green computing** also referred
ICT or **ICT sustainability**, is the stud
sustainable computing or IT. **San Mu**

* Vivekananda College, (University of D

Green computing is commonly referred to a
are similar to green chemistry. Green IT strate

- Decreasing the quantity of pollutants exi
  i.e. reduce the use of hazardous material
- Maximize energy efficiency during the p
- Promote the recyclability or biodegradab
  and factory waste.
- Reduces power consumption and amoun
  the devices.
- Lessens the load on paper industry.
- Enhances the use of renewable means.
- Supports effective use of natural resour

It not supports us to go green only and bu
green. It is important for all classes of systems
systems to large-scale data centers. It will redu
human activity on the environment.

History of green computing and Initia

One of the earliest initiatives toward green comp
was the voluntary labelling program known

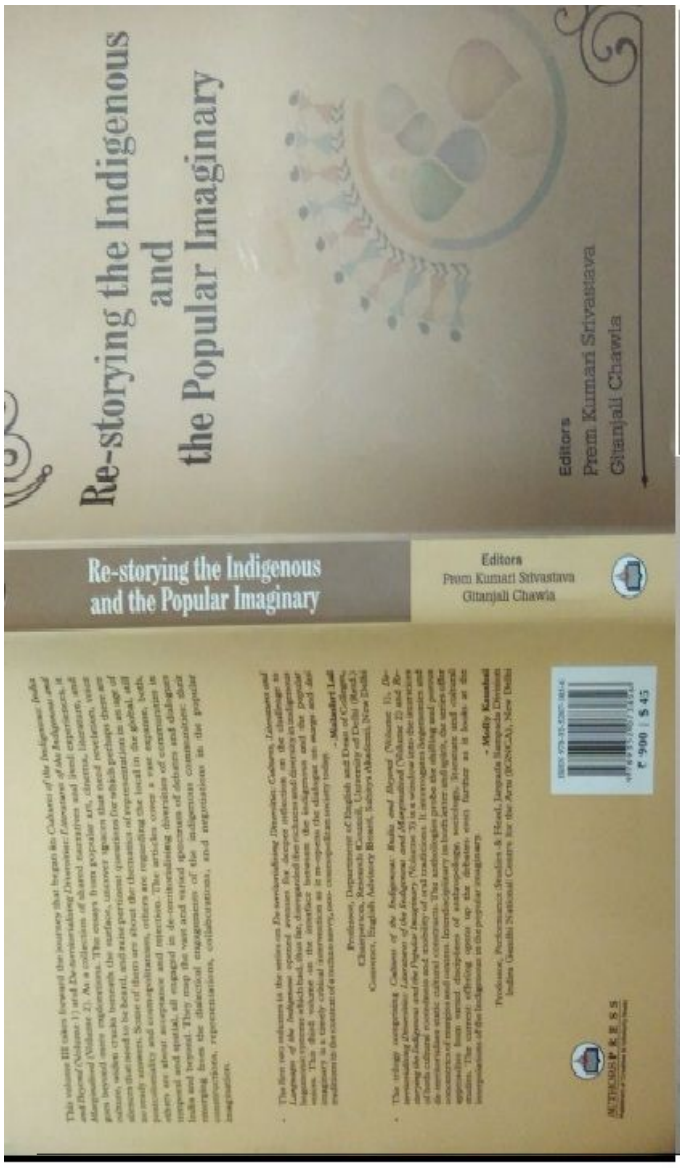

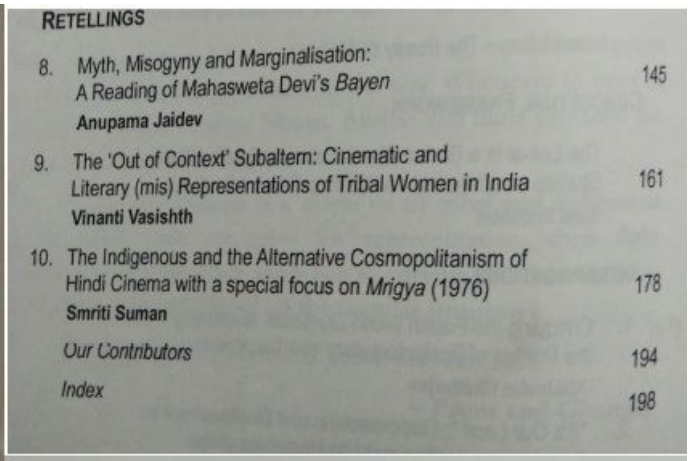

RETELLINGS

8. Myth, Misogyny and Marginalisation: A Reading of Mahasweta Devi's *Bayen* 145
Anupama Jaidev

9. The 'Out of Context' Subaltern: Cinematic and Literary (mis) Representations of Tribal Women in India 161
Vinanti Vasishth

10. The Indigenous and the Alternative Cosmopolitanism of Hindi Cinema with a special focus on *Mrigya* (1976) 178
Smriti Suman

Our Contributors 194

Index 198

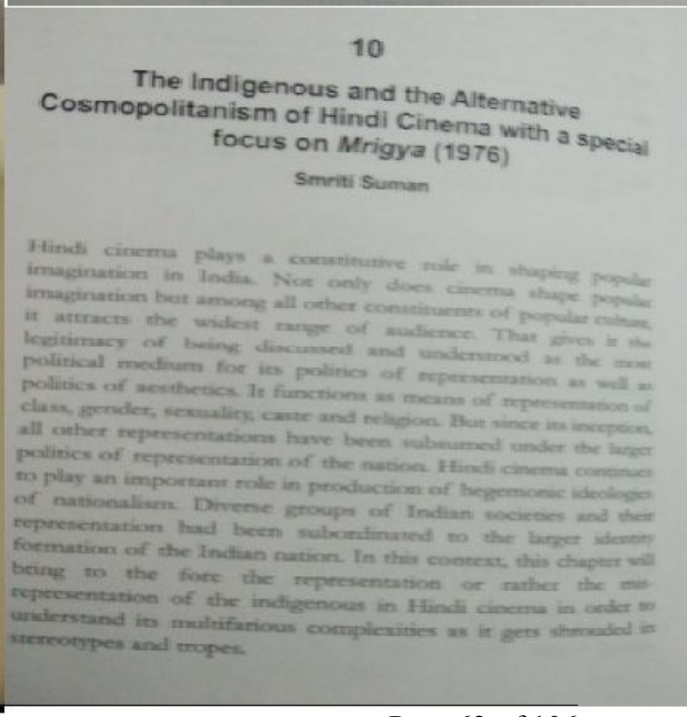

10

The Indigenous and the Alternative Cosmopolitanism of Hindi Cinema with a special focus on *Mrigya* (1976)

Smriti Suman

Hindi cinema plays a constitutive role in shaping popular imagination in India. Not only does cinema shape popular imagination but among all other constituents of popular culture, it attracts the widest range of audience. That gives it the legitimacy of being discussed and understood as the most political medium for its politics of representation as well as politics of aesthetics. It functions as means of representation of class, gender, sexuality, caste and religion. But since its inception, all other representations have been subsumed under the larger politics of representation of the nation. Hindi cinema continues to play an important role in production of hegemonic ideologies of nationalism. Diverse groups of Indian societies and their representation had been subordinated to the larger identity formation of the Indian nation. In this context, this chapter will bring to the fore the representation or rather the mis-representation of the indigenous in Hindi cinema in order to understand its multifarious complexities as it gets shrouded in stereotypes and tropes.

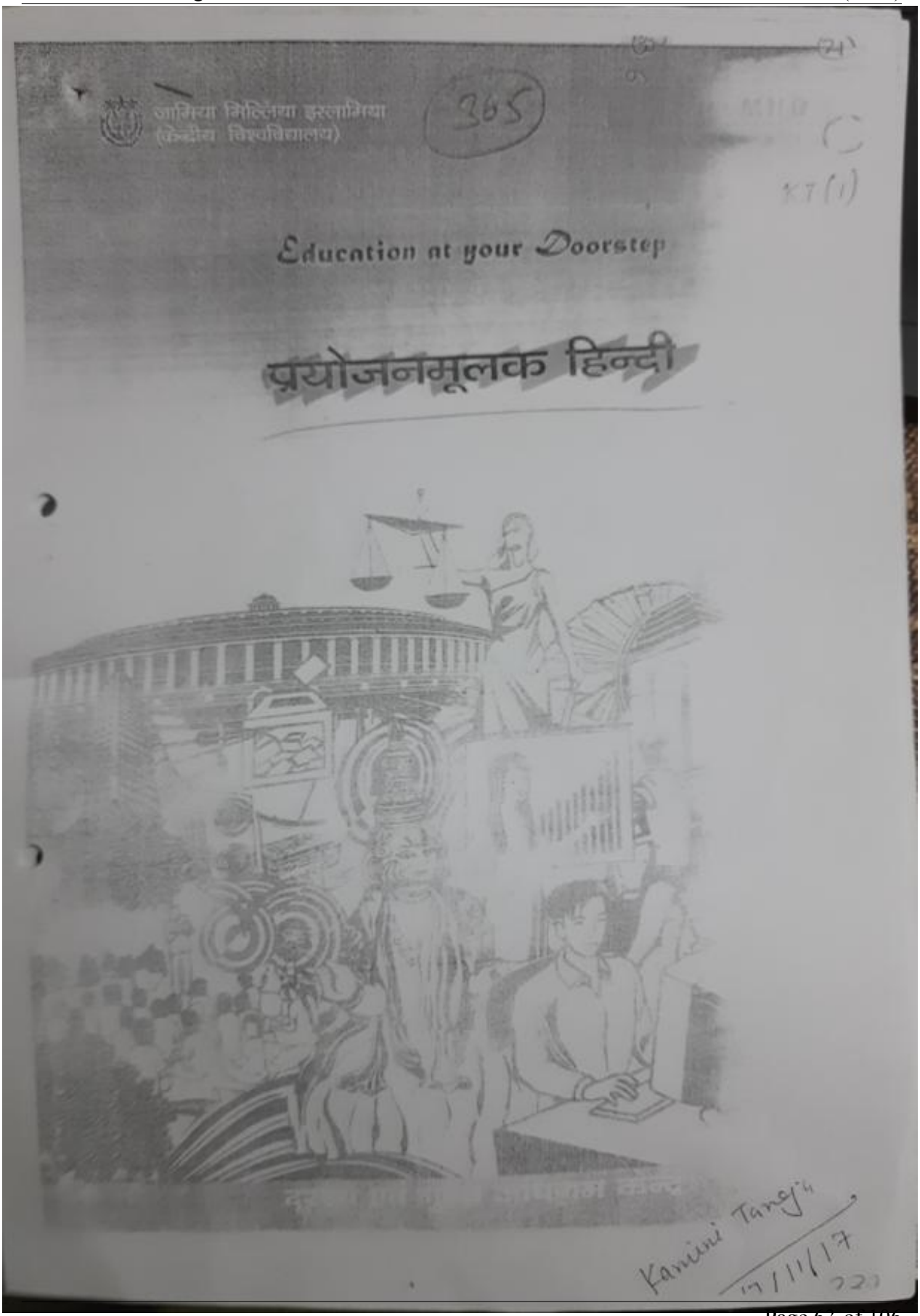
जामिया मिलिया इस्लामिया
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
365
Education at your Doorstep
प्रयोजनमूलक हिन्दी
Kanini Tangi
17/11/17

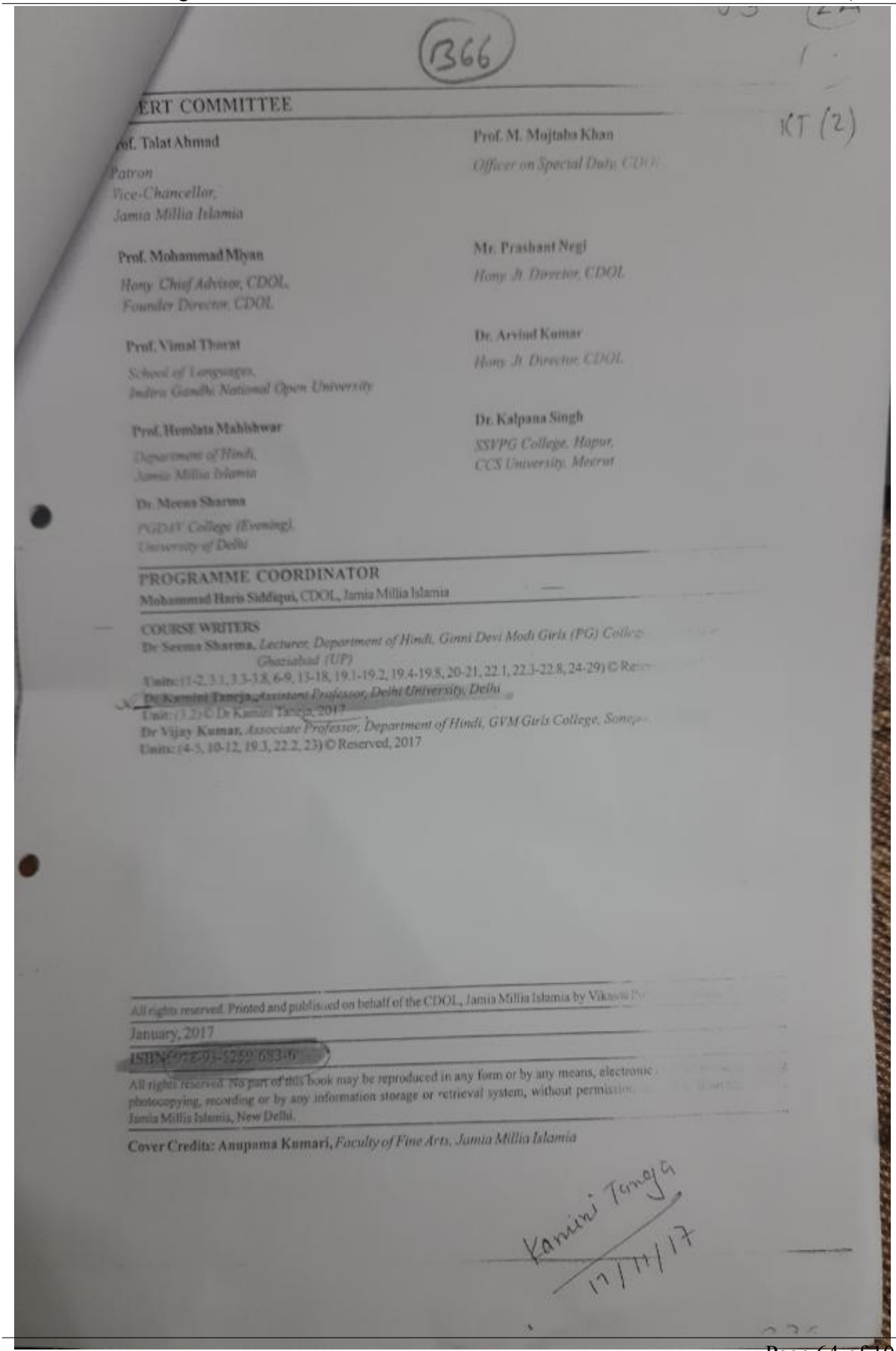

B66

KT (2)

ERT COMMITTEE

Prof. Talat Ahmad
Patron
Vice-Chancellor,
Jamia Millia Islamia

Prof. M. Mujtaba Khan
Officer on Special Duty, CDOL

Prof. Mohammad Miyan
Hony. Chief Advisor, CDOL,
Founder Director, CDOL

Mr. Prashant Negi
Hony. Jt. Director, CDOL

Prof. Vimal Thorat
School of Languages,
Indira Gandhi National Open University

Dr. Arvind Kumar
Hony. Jt. Director, CDOL

Prof. Hemlata Mahishwar
Department of Hindi,
Jamia Millia Islamia

Dr. Kalpana Singh
SSVPG College, Hapur,
CCS University, Meerut

Dr. Meena Sharma
PGDAV College (Evening),
University of Delhi

PROGRAMME COORDINATOR

Mohammad Haris Siddiqui, CDOL, Jamia Millia Islamia

COURSE WRITERS

Dr Seema Sharma, *Lecturer, Department of Hindi, Ginni Devi Modi Girls (PG) Colleg... Ghaziabad (UP)*
Units: (1-2, 3.1, 3.3-3.8, 6-9, 13-18, 19.1-19.2, 19.4-19.8, 20-21, 22.1, 22.3-22.8, 24-29) © Re...
Dr Kamini Taneja, *Assistant Professor, Delhi University, Delhi*
Unit: (3.2) © Dr Kamini Taneja, 2017
Dr Vijay Kumar, *Associate Professor, Department of Hindi, GVM Girls College, Sone...*
Units: (4-5, 10-12, 19.3, 22.2, 23) © Reserved, 2017

All rights reserved. Printed and published on behalf of the CDOL, Jamia Millia Islamia by Vikas...

January, 2017

ISBN 978-93-5259-683-6

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any means, electronic ... photocopying, recording or by any information storage or retrieval system, without permission ... Jamia Millia Islamia, New Delhi.

Cover Credits: Anupama Kumari, *Faculty of Fine Arts, Jamia Millia Islamia*

Kamini Taneja
17/11/17

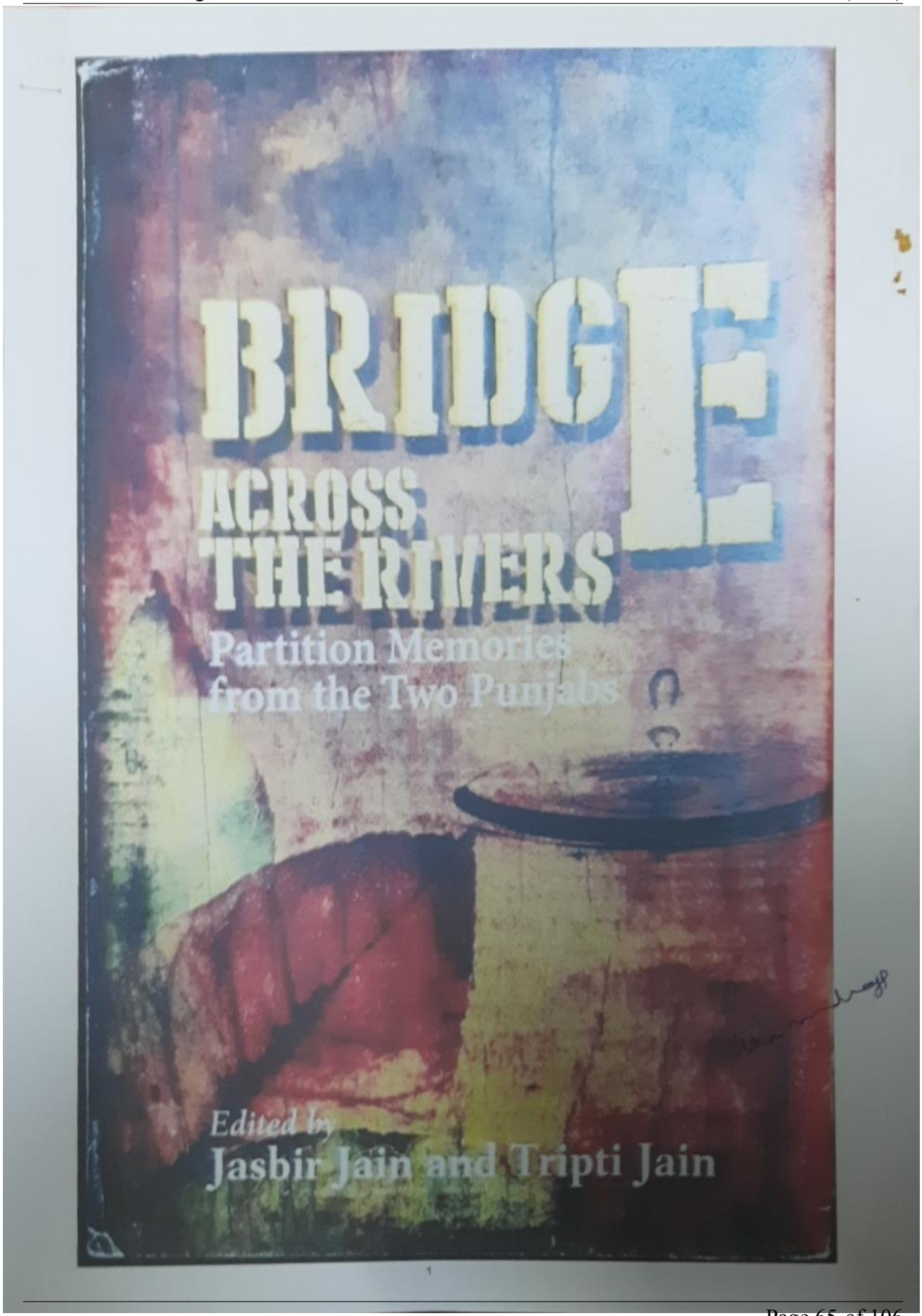
BRIDGE
ACROSS
THE RIVERS
Partition Memories
from the Two Punjabs
Edited by
Jasbir Jain and Tripti Jain

CONTENTS

Partition, Dislocated Homes and Homelands 07

THE HOMECOMING
- *Navtej Singh* 29

A DEFENDER OF HUMANITY
- *Mohinder Singh Sarna* 41

DAUGHTER'S DOWRY
- *Kulwant Singh Virk* 46

KHABAL ~ PERENNIAL GRASS
- *Kulwant Singh Virk* 51

GODS ON TRIAL
- *Gulzar Singh Sandhu* 58

OF ONE COMMUNITY
- *Mohinder Singh Sarna* 66

FATTU THE BARD
- *Gurbachan Singh Bhullar* 75

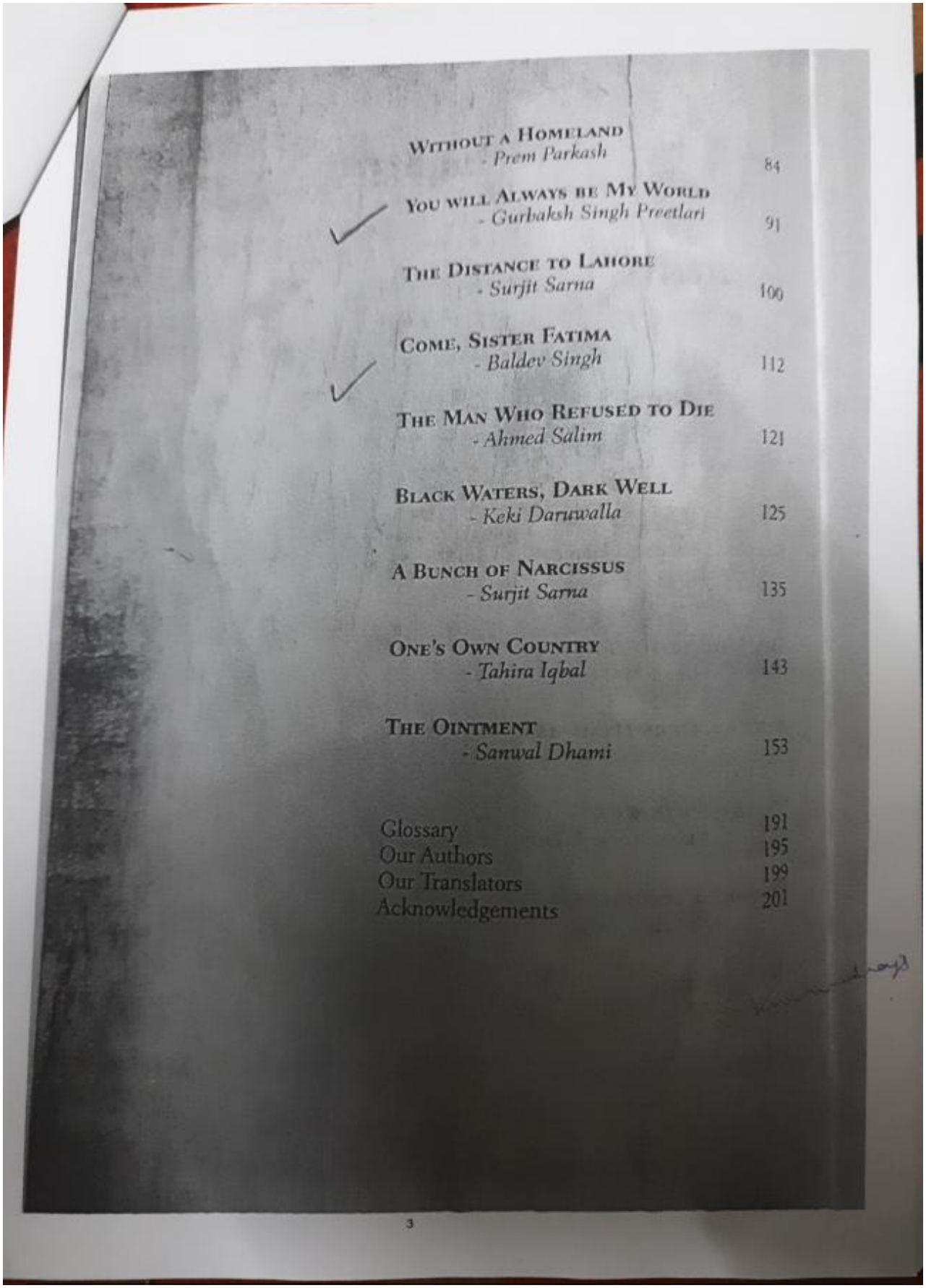

WITHOUT A HOMELAND
- Prem Parkash 84

YOU WILL ALWAYS BE MY WORLD
- Gurbaksh Singh Preetlari 91

THE DISTANCE TO LAHORE
- Surjit Sarna 100

COME, SISTER FATIMA
- Baldev Singh 112

THE MAN WHO REFUSED TO DIE
- Ahmed Salim 121

BLACK WATERS, DARK WELL
- Keki Daruwalla 125

A BUNCH OF NARCISSUS
- Surjit Sarna 135

ONE'S OWN COUNTRY
- Tahira Iqbal 143

THE OINTMENT
- Sanwal Dhami 153

Glossary 191
Our Authors 195
Our Translators 199
Acknowledgements 201

FATTU THE BARD

Gurbachan Singh Bhullar

One day when Fattu the bard, his wife, Kariman, his two sons, Yusuf and Hamida suddenly returned to the village from Pakistan, it became the sole topic of conversation in the entire village. The people went to meet Fattu and his family and Fattu visited every household in the village. He seemed to have an age-old, unquenchable thirst that he was trying to slake at every house. He would come out of one house and enter the next, saying, "Greetings, Chachi.... Sat Sri Akal, Brother Sohan Singh.... Bibi Dyal Kaur, is this Guddi? The blessed child has grown into a young woman behind my back."

He sat for ages with the elders of the village and chatted about joys and sorrows, home and the world, friends and relatives. A wave of affection rose in his breast when he met people and he would be overwhelmed. He wandered about in the streets of the village for many days. Kariman visited the older women of the village and talked about common concerns.

Fattu was the ancestral bard of Sukhwant's village. Before Pakistan was carved out, Sukhwant and Fattu's son, Yusuf, had been

for a few minutes, idly drawing pictures in the sand, as if he was swallowing something and trying to locate the lineaments of Basheera and Niyamat in the sand. Then, he took a grip on himself, and wiped the tears with the corner of his towel, "That, Prabha, was a storm... a black, thunderous storm. Everybody had lost his senses. Who is to blame? It was a catastrophe sent down by Allah. The storm came and died down; now what is the use of remembering it?"

Dissatisfied by this answer Sukhwant asked, "No, Chacha, whether you agree or not, you must have suffered in Pakistan. We've heard that the condition of the people there is even worse than that of the people here?"

"It's hardly any different from here, Prabha. One could get by," he said, combing the soil he had dug out with a blade of grass.

"Then... why? Where was the need? Once you had already been forced to abandon a prosperous household because of the birth of Pakistan. Now again you abandon the Pakistan that you had yourself created?"

Fattu looked down and was silent. Sukhwant kept staring at him, but didn't say anything. Then Fattu looked straight at him with his piercing, blazing eyes and said, "Prabha, it was hardly my house and land. We were not allowed to stay in Hindustan, and no one considered us Pakistanis. We were '*muhajirs*', 'refugees', 'poor souls'!"

And then he scooped up a fistful of sand and touched it to his forehead with his eyes closed, "Prabha, this is what pulled me back. This is what was missing there!"

Translation: Hina Nandrajog

YOU WILL ALWAYS BE MY WORLD

Gurbaksh Singh Preetlari

A jungle of tall rosewood trees flanked the wide sinuous canal. In the summer months, this jungle was a haven for birds, travellers and students studying for their examinations. Outside, the sunlight would scorch, the furnace would burn; inside, the fresh gusts of breeze, cooled as they rustled through the branches over the grassy green carpet, enticed one to forget the worries of the weather and the exams. Birds hopped and chirped musical notes in this green solitude, and amorous peacocks wooed their mates in all their splendour.

A tall, slim, well-built youth stepped off the pavement and hurried into the jungle. He sat down on a patch of thick, smooth grass. His turban proclaimed him to be Sikh, but when, after glancing all around, he took it off and placed it by his side, one could see that he did not have the long hair traditional to Sikhs. His chin was, as yet, innocent of any beard, but downy hair covered his upper lip. He had fine features and thoughtful, meditative eyes. Even at such a tender age, his wheat-complexioned face reflected a strange determination.

"No, Sohni, he won't go!"

"No, Maji, he won't stay!"

"Please control yourself. He's gone to your father's room, I'll persuade him."

"*He won't stay, Maji*—this village is his mother's murderer!" And Sohni began to cry, her hands shielding her eyes.

"Why, Kurban, have you made your decision?" The Sardar asked in an encouraging tone. Tears streamed down Kurban's cheeks. The Sardar clung to him but both were silent for a long time. Maji also came in and hugged Kurban.

"Yes, Bapuji," Kurban wiped his tears and answered. "I have decided! What a stone I have had to place on my heart to take this decision! I won't be able to tell you this, but believe me when I say that you, Maji and Sohni will always remain my world, even if I don't stay in your world."

Sardar had already written the letter. He handed it to Kurban; Kurban touched Maji's feet and then his eyes. Maji clasped him to her bosom and began to cry. Bapuji did not let him touch his feet but shook his hand hard.

Kurban left. He crossed the street. From the window, Sohni saw him leaving.

"But now he won't look back." Sohni sobbed.

He turned the corner.

Translation: Hina Nandrajog

COME, SISTER FATIMA

Baldev Singh

I am spring-cleaning the house as I do every year just before Diwali. I drag superfluous things out of the house to the courtyard. I want to make full use of Sunday. I have also managed to get the children to cooperate. They enjoy dragging out old shoes, empty bottles, used school books and notebooks, threadbare plastic webbing tape, defunct tubes, switches, broken toys, old bicycle tyres, and a whole lot of other junk. This is as engrossing as any game as far as they are concerned. I am amazed! God knows how much trash Bebe has thrown inside the store. "They may come in useful someday," she says to everyone.

Today Bebe is probably visiting someone in the neighbourhood, otherwise she would have got annoyed at this misdemeanour. She would have picked up sundry things and asked us, "Why are you throwing this? And this shoe? This is still in good condition. Does anyone ever discard toys that one's children have played with? Only the fortunate ones have these things...."

Things are piled haphazardly in the courtyard like a second-hand goods shop. The wife has emptied out the bag of dried up rotis from

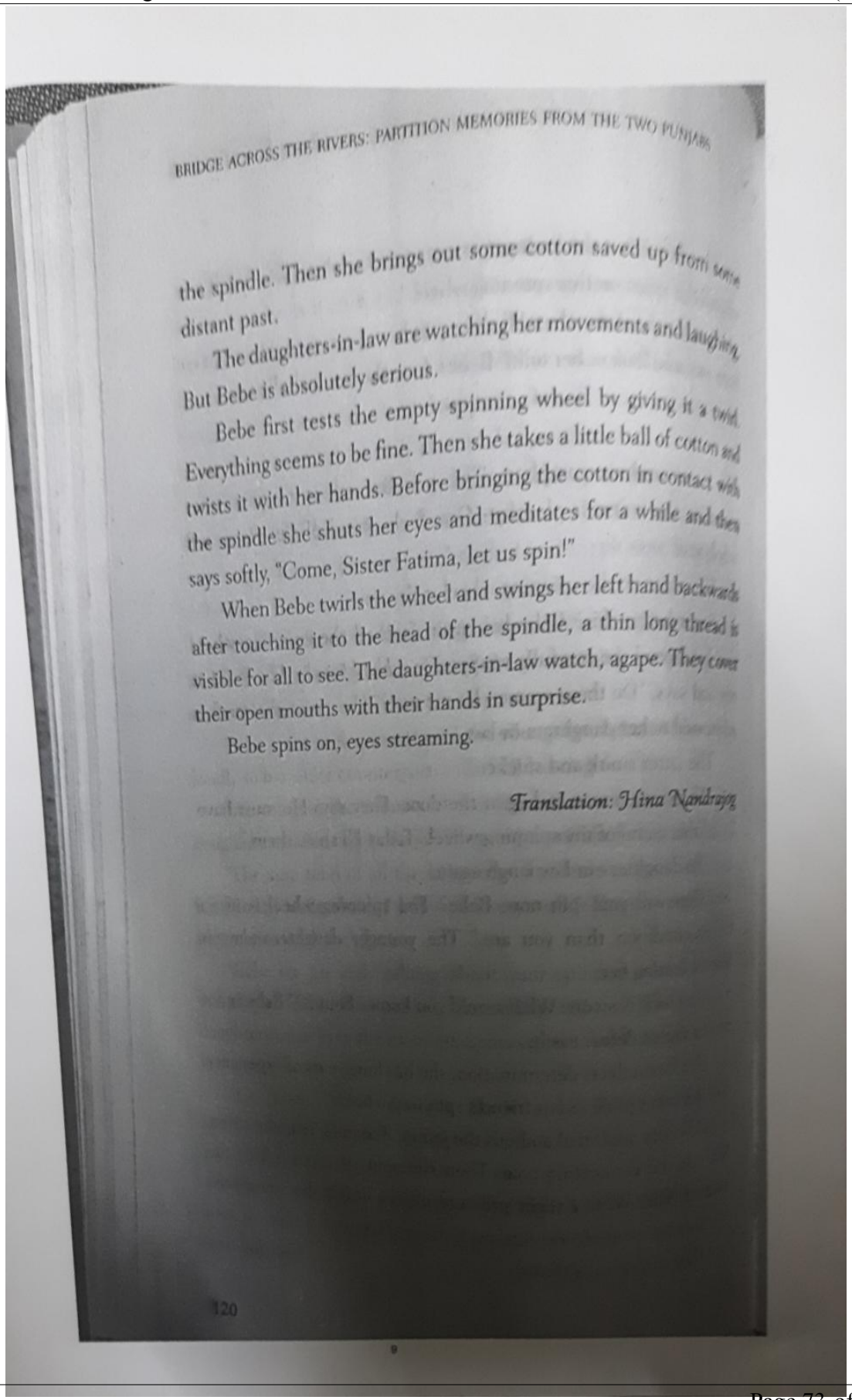

the spindle. Then she brings out some cotton saved up from some distant past.

The daughters-in-law are watching her movements and laughing. But Bebe is absolutely serious.

Bebe first tests the empty spinning wheel by giving it a twirl. Everything seems to be fine. Then she takes a little ball of cotton and twists it with her hands. Before bringing the cotton in contact with the spindle she shuts her eyes and meditates for a while and then says softly, "Come, Sister Fatima, let us spin!"

When Bebe twirls the wheel and swings her left hand backwards after touching it to the head of the spindle, a thin long thread is visible for all to see. The daughters-in-law watch, agape. They cover their open mouths with their hands in surprise.

Bebe spins on, eyes streaming.

Translation: Hina Nandrajog

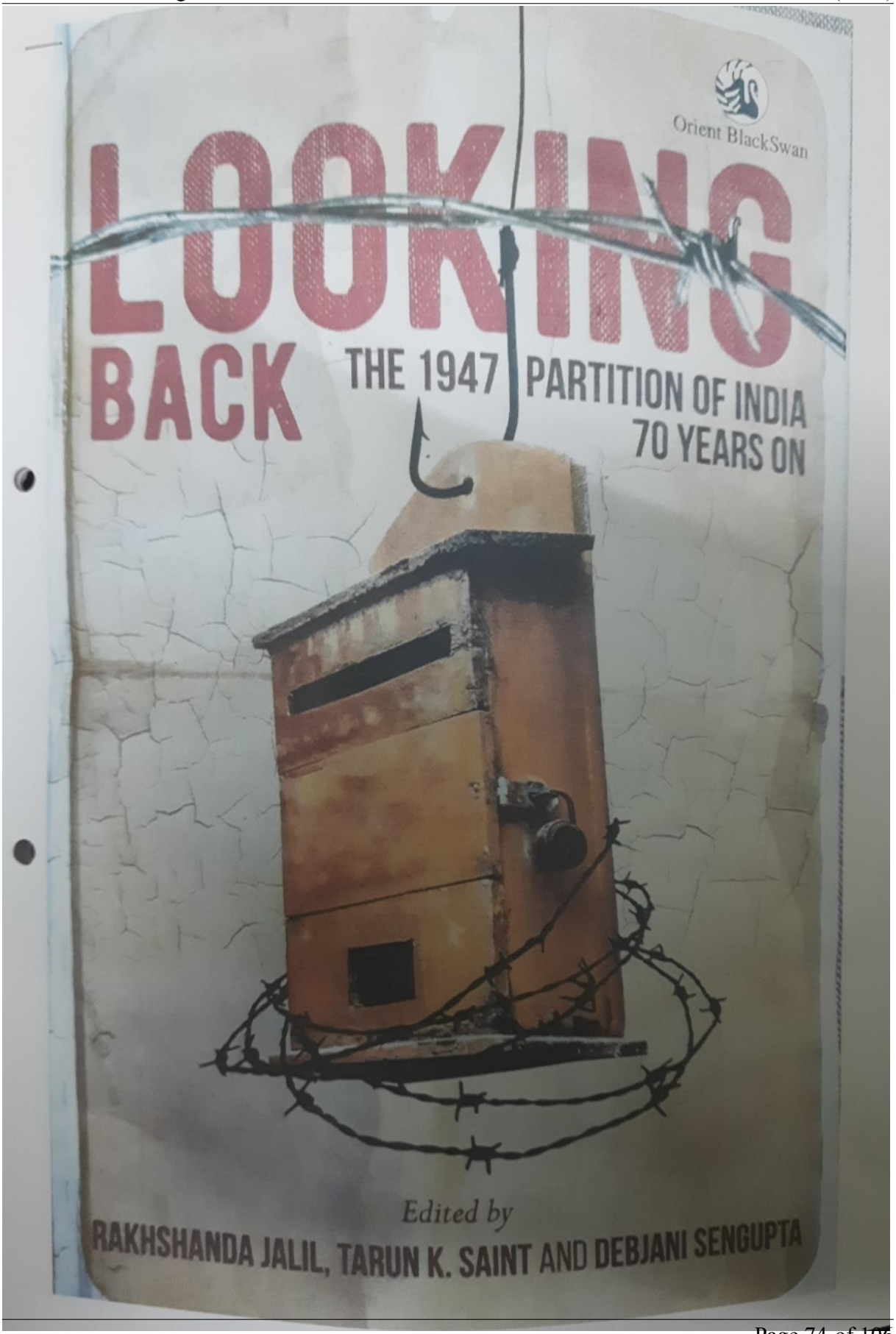
Orient BlackSwan
LOOKING BACK
THE 1947 PARTITION OF INDIA
70 YEARS ON
Edited by
RAKHSHANDA JALIL, TARUN K. SAINT AND DEBJANI SENGUPTA

LOOKING BACK: THE 1947 PARTITION OF INDIA, 70 YEARS ON

ORIENT BLACKSWAN PRIVATE LIMITED

Registered Office
3-6-752 Himayatnagar, Hyderabad 500 029, Telangana, India
e-mail: centraloffice@orientblackswan.com

Other Offices
Bengaluru, Bhopal, Chennai, Guwahati, Hyderabad, Jaipur, Kolkata, Lucknow, Mumbai, New Delhi, Noida, Patna, Vijayawada

© Orient Blackswan Private Limited 2017

ISBN 978-93-86689-56-6

025784

25072017

Typeset in
Adobe Jenson Pro 11.5/13.4
by Le Studio Graphique, Gurgaon 122 001

Printed in India at
Glorious Printers, Delhi

Published by
Orient Blackswan Private Limited
3-6-752, Himayatnagar, Hyderabad 500 029, Telangana, India
e-mail: info@orientblackswan.com

15. Orality of Silence 176
Manas Ray

16. Lahore Reporting 182
Vishwajyoti Ghosh

FICTION

17. Of Lost Stories 209
Anwar Ali
Translated from the Punjabi novel *Gwacchiyan Gallan*, to Urdu by Julien Columeau, and translated from the Urdu by Farha Noor

18. People of God 216
Gurmukh Singh Musafir
Translated from the Punjabi short story *Allah Wale*, by Hina Nandrajog

19. Nothing but the Truth 223
Meera Sikri
Translated from the Hindi short story *Saccho Sach*, by Tarun K. Saint

20. The Other Shore 230
Syed Muhammad Ashraf
Translated from the Urdu short story *Doosra Kinara*, by Rakhshanda Jalil

21. The Echo 237
Zakia Mashhadi
Translated from the Urdu short story *Sada-e Baazgasht*, by Zakia Mashhadi

22. Allah-ho Akbar 246
Amena Nazli
Translated from the Urdu short story *Allah-ho Akbar*, by Asif Aslam Farrukhi

18 People of God*

GURMUKH SINGH MUSAFIR

Respected Bhai Sahib,

I don't know if this pain-wracked prayer will reach you or not. Savinder has been found. At first I was happy when I came to know about it, but almost immediately my happiness changed into deep sorrow and anxiety. You know that I regard Savinder as a daughter. Now I am facing a great dilemma. My daughter is in the clutches of strangers somewhere close by, and I am powerless to free her! How terribly frustrating it is! Oh, Asmaan Singh, how difficult it must be for you and Bharjai to be able to sleep a wink at night! What festering wound must gnaw at your bosoms! Your very insides must be writhing on thorns. But if someone were to ask me about what lies in my heart, brother, I too am lying on embers. My heart would have wept even if Savinder had been found in another neighbourhood, but not so much. Now this is a matter of extreme shame for me. I used to have a pretty cordial relationship with the Khan of the North-West Frontier—and he's not a bad man—but an evil breeze seems to be blowing. I have been pursuing him, but he's proved elusive so far. These people have other girls as well. The moment they sense any danger, they have them sent to Pakistan. The good and the bad are all in cahoots

* Originally published in Punjabi as 'Allah Wale' in *Aalney de Bote* (Delhi: Sikh Publishing House, 1955). The title literally means 'People of God,' but another meaning of the word *alla* is raw or unhealed; it could also be seen as a metaphor for those whose wounds have not healed.

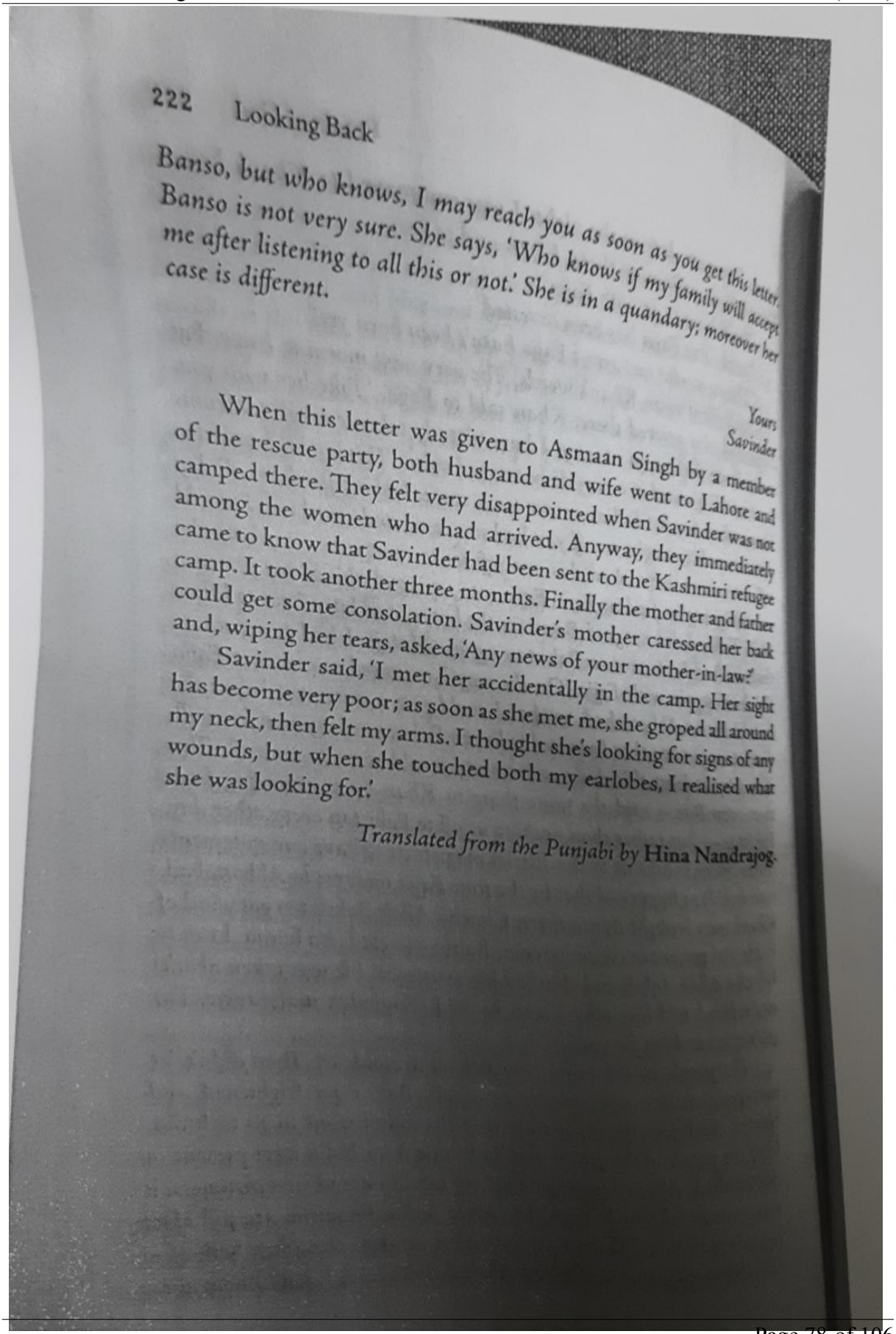

222 Looking Back

Banso, but who knows, I may reach you as soon as you get this letter. Banso is not very sure. She says, 'Who knows if my family will accept me after listening to all this or not.' She is in a quandary; moreover her case is different.

Yours
Savinder

When this letter was given to Asmaan Singh by a member of the rescue party, both husband and wife went to Lahore and camped there. They felt very disappointed when Savinder was not among the women who had arrived. Anyway, they immediately came to know that Savinder had been sent to the Kashmiri refugee camp. It took another three months. Finally the mother and father could get some consolation. Savinder's mother caressed her back and, wiping her tears, asked, 'Any news of your mother-in-law?'

Savinder said, 'I met her accidentally in the camp. Her sight has become very poor; as soon as she met me, she groped all around my neck, then felt my arms. I thought she's looking for signs of any wounds, but when she touched both my earlobes, I realised what she was looking for.'

Translated from the Punjabi by **Hina Nandrajog**

प्रकाशक :
[illegible]
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर -416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : 02328-224041, 222820
वेबसाईट : www.ycwm.ac.in
ई- मेल : ycwarana@yahoo.co.in

लेखक : प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर
सहयोगी प्राध्यापक एवं शोध निर्देशक,
हिंदी विभाग,
यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय,
वारणानगर 416113
तह.पन्हाला, जिला कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
संपर्क : भ्रमणध्वनि:- 9404264646
ई- मेल: prakashchikurdekar@yahoo.com

ISBN: 978-81-933230-1-4

प्रथम संस्करण : 2017

Printed By,
Shreekant Computers and Publishers,
Opp. Khare Mangal Karyalaya,
Shivaji University Road, Kolhapur Mob. 9890499466

संपादक मंडल: प्रा. डॉ. प्रकाश चिकुर्डेकर
प्रा. डॉ. मनोहर शिंदे
प्रा. डॉ. सुधाकर खोत

मूल्य : 250/- रुपये

"प्रस्तुत ग्रंथ में प्रकाशित साहित्य, विचार, कल्पना और शोध तथा शोध संदर्भ [illegible] जिम्मेदारी लेखकों की है। लेखक - संपादक, संपादक मंडल एवं संस्था तथा [illegible] सहमत हों यह आवश्यक नहीं है।"

"आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम"
(Adhunik Hindi Sahitya Mai Vaishamya ke Vividh Aayam)

ISBN : 978-81-933230-1-4

आधुनिक हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम

प्रा. डॉ. प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर

मुद्रक : [illegible] प्रिंटर्स, दिल्ली-110032

ISBN 978-81-933230-1-4
[illegible] हिंदी साहित्य में वैषम्य के विविध आयाम

अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शोध निबंध विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1.	आधुनिक हिंदी कविता में वैषम्य के विविध आयाम	[illegible] प्रकाश शंकरराव चिकुर्डेकर	1
2.	हिन्दी नाट्य साहित्य में विविध आयाम	डॉ. एम. डी. [illegible] मिया	5
3.	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटकों में अभिव्यक्त जातिगत वैषम्य तथा गांधीवादी दृष्टि	डॉ. गीता पाण्डेय	10
4.	आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में वैषम्य विविध आयाम	डॉ. किरण बी. [illegible]	14
5.	[illegible] के उपन्यासों में परिवेशगत [illegible] वैषम्यता	[illegible]	17
6.	[illegible] की कहानियों में [illegible] चेतना	[illegible]	20
7.	वैषम्यपूर्ण समाज में हिंदी नाटकों की [illegible] की प्रासंगिकता	[illegible]	23
8.	हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथाओं में [illegible] अभिव्यक्त आर्थिक वैषम्यताएँ	[illegible]	27
9.	आधुनिक हिंदी निबंध साहित्य [illegible]	[illegible]	30
10.	[illegible]	[illegible]	32
11.	आधुनिक हिंदी [illegible] में [illegible] वैषम्य	[illegible] कुमारी	35
12.	आधुनिक हिंदी कहानी साहित्य में वैषम्य [illegible]	[illegible]	38
13.	[illegible]	[illegible]	41
14.	[illegible]	[illegible] शैला भवानी	43
15.	टूटे हुए रास्ते कहानी फुटपाती जीवन के [illegible] परिप्रेक्ष्य में	डॉ. [illegible]	45
16.	आधुनिक हिंदी निबंध साहित्य में नारी जागरण की वैषम्यता	डॉ. [illegible] सरोजिनी	47
17.	शिक्षा क्षेत्र के वैषम्य का एक्स-रे : 'और [illegible] सिर्फ तितली'	डॉ. एकनाथ पाटील	49

7

डॉ. सरोज कुमारी
डॉ. योजना कालिया

स्त्री लेखन का दूसरा परिदृश्य

डॉ सरोज कुमारी /हिन्दी विभाग

Scanned with CamScanner

Stree Lekhan ka Doosra Pridrashya
by
Dr. Saroj kumari & Dr. Yojana Kaliya

I.S.B.N.: 978-81-7667-337-2
© डॉ. सरोज कुमारी / डॉ. योजना कालिया
मूल्य : 300.00 रुपये
प्रथम संस्करण : सन् 2017

प्रकाशक :-भावना प्रकाशन
109-A, पटपड़गंज, दिल्ली-110091
दूरभाष : 22756794, 9312869947

आवरण : नीरज
शब्द संयोजक : पंकज ग्रैफिक्स, दिल्ली-110092
मुद्रक : राधा ऑफसेट, दिलशाद गार्डन, दिल्ली।

Published by : **Bhavna Prakashan**, 109-A, Patparganj, Delhi-110091, INDIA
E-mail : bhavna_pub@rediffmail.com
web : www.bhavnaprakashan.com

समर्पण

वो स्त्रियों को जो तमाम बंदिशों के बावजूद प्रगति-पथ पर डटी रहीं

-डॉ. सरोज कुमारी

उन सभी पुरुष साथियों को समर्पित जो किसी परिस्थिति विशेष में स्वयं को स्त्री के हाथों शोषित अनुभव करते रहे।

-डॉ. योजना कालिया

स्त्री आंदोलन और साहित्य का अंत: संबंध
डॉ. योजना कालिया : 70

सर्वधर्म समभाव के परिप्रेक्ष्य में गांधी का स्त्री-दर्शन
डॉ. सरोज कुमारी : 75

मित्रो मरजानी की 'सुमिताबन्ती'
डॉ. योजना कालिया : 80

पत्रकारिता की दुनिया : दलित स्त्री के शोषण की व्यथा-कथा
डॉ. सरोज कुमारी : 83

साहित्य में बदलते स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध रूप
डॉ. योजना कालिया : 89

भूमंडलीकृत समाज और स्त्री
डॉ. सरोज कुमारी : 98

स्त्री लेखन में पुरुष संदर्भ
डॉ. योजना कालिया : 104

घरेलू हिंसा! आखिर कब तक
डॉ. सरोज कुमारी : 111

वर्तमान दलित साहित्य में स्त्री-विमर्श
डॉ. सरोज कुमारी : 117

भारत में स्त्री की दशा, दिशा और मानवाधिकार
डॉ. सरोज कुमारी : 124

संत कविता का स्त्री पक्ष

डॉ. सरोज कुमारी

सन्त कवियों के स्त्री विषयक दृष्टिकोण पर विचार करने से पहले यह जान लेना आवश्यक है कि स्त्री साहित्य क्या है? सन्त शब्द का प्रयोग भिन्न-भिन्न रूपों में किया गया है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने 'उत्तर-भारत की सन्त परंपरा' नामक पुस्तक में 'सन्त' के पाँच गुण बताये हैं -बुद्धिमान, पवित्रात्मा, सज्जन, परोपकारी, सदाचारी आदि। आचार्य चतुर्वेदी के मतानुसार 'सन्त' शब्द इसी का रूपान्तर है। बौद्धकाल के अनुसार 'धम्मपद' के अन्तर्गत 'सन्त' शब्द का प्रयोग शान्त प्रकृति के व्यक्ति के रूप में हुआ है। वास्तव में 'सन्त' शब्द संस्कृत के 'सन्त' शब्द का बहुवचन प्रतीत होता है। आचार्य परशुराम चतुर्वेदी के मतानुसार 'सन्त' शब्द भी अस भुवि (अस होना) धातु से बने हुए 'संत' का पुल्लिंग रूप है जो 'तृ' प्रत्यय लगाकर प्रस्तुत किया जाता है और जिसका अर्थ केवल 'होने वाला या रहने वाला हो सकता है।' इस प्रकार 'सन्त' शब्द का मौलिक अर्थ 'शुद्ध अस्तित्व' मात्र का ही बोधक है। अपने रूढ़ार्थ में 'सन्त' शब्द अत्यन्त व्यापक है और कालान्तर में इसके अर्थ में परिवर्तन होता रहा है। हिन्दी साहित्य में ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों के लिए 'सन्त शब्द' प्रयुक्त होता है। डॉ. बड़थ्वाल ने 'निर्गुणपंथी' अथवा 'निर्गुणिया' शब्द का भी प्रयोग किया है।

सन्त-काव्य से तात्पर्य उस काव्य से है जिसकी रचना निर्गुण भक्ति शाखा के ज्ञानमार्गी सन्त कवियों के द्वारा की गयी है। विद्वानों की मान्यता है कि यह संत कवि अक्खड़, फक्कड़ और मस्तमौला स्वभाव के थे। इसी अक्खड़पन की झलक संत कवियों के लगभग पूरे साहित्य में दिखाई देती है। सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार, [illegible] तथा सूक्तिपरक साहित्य इनके लेखन में था। इन्होंने आत्मा-परमात्मा तथा विभिन्न मत-मतान्तरों के दार्शनिक सिद्धान्तों की चर्चा भी अपने साहित्य में की। [illegible] सन्त कवि प्रायः बैरागी स्वभाव के थे और शून्यवाद के समर्थक। अक्षरज्ञान न [illegible] व्यावहारिक ज्ञान के बल पर इन सन्त कवियों ने ऐसे साहित्य की

अनुक्रम

संत कविता का स्त्रीपक्ष
डॉ. सरोज कुमारी : 17

स्त्री-विमर्श की पृष्ठभूमि में रीतिकाव्य की भूमिका
डॉ. योजना कालिया : 24

हिंदी कहानी : स्त्री का सच
डॉ. सरोज कुमारी : 29

स्त्री-पुरुष संबंधों को समझने की कुंजी: अर्द्धनारीश्वर
डॉ. योजना कालिया : 34

मीडिया, बाजार और स्त्री
डॉ. सरोज कुमारी : 42

हाशिए पर स्त्री
डॉ. योजना कालिया : 48

सामाजिक बदलाव और स्त्री-परिधि
डॉ. सरोज कुमारी : 53

समकालीन मीडिया-लेखन में बदलती स्त्री-छवि
डॉ. योजना कालिया : 59

समकालीन पत्रकारिता और स्त्री-प्रश्न
डॉ. सरोज कुमारी : 65

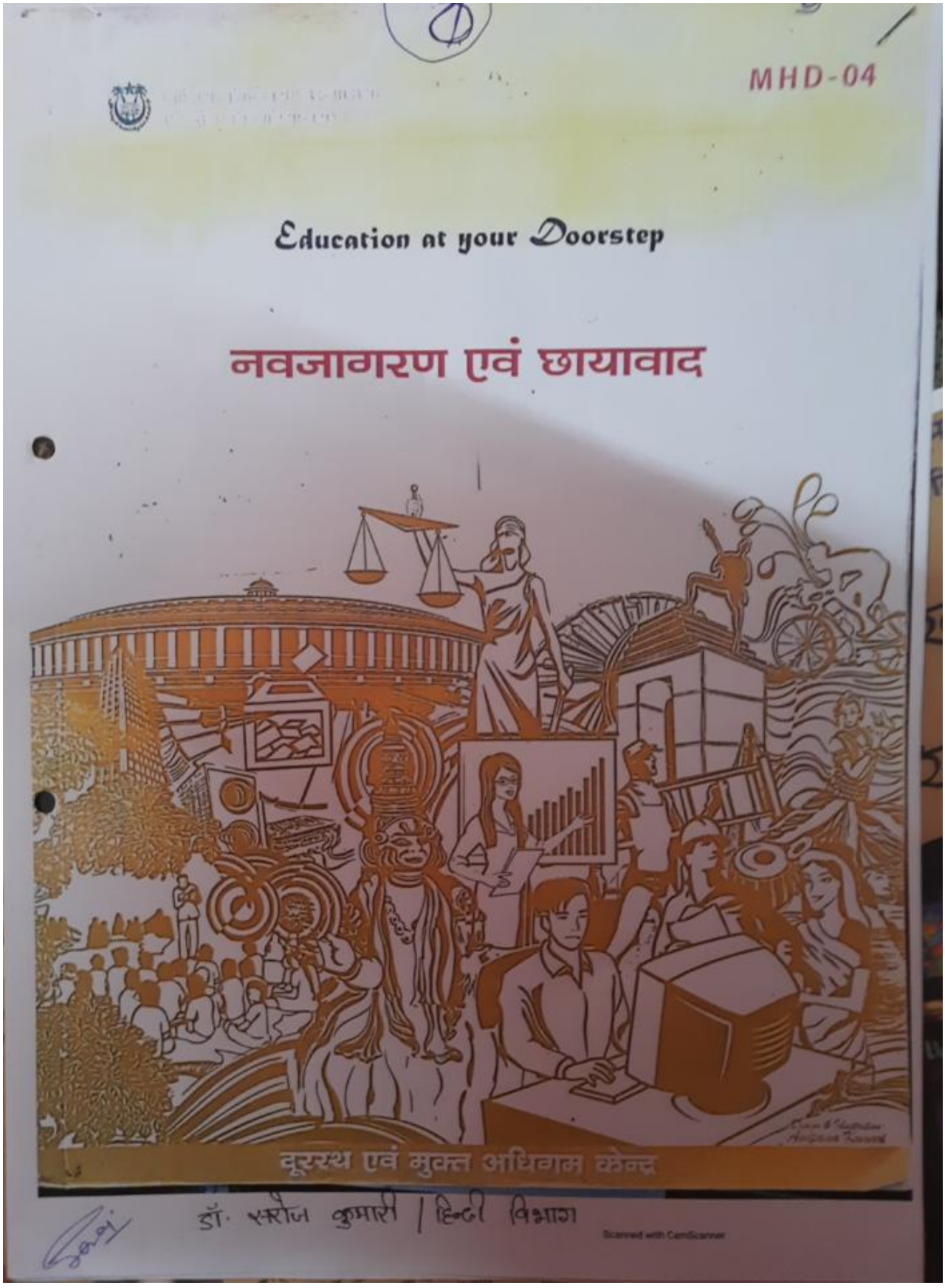
MHD-04
Education at your Doorstep
नवजागरण एवं छायावाद
दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम केन्द्र
डॉ. सरोज कुमारी / हिन्दी विभाग

EXPERT COMMITTEE

Prof. Talat Ahmad
Patron
Vice-Chancellor,
Jamia Millia Islamia

Prof. Mohammad Miyan
Hony. Chief Advisor, CDOL,
Founder Director, CDOL

Prof. Vimal Thorat
School of Languages,
Indira Gandhi National Open University

Prof. Hemlata Mahishwar
Department of Hindi,
Jamia Millia Islamia

Dr. Meena Sharma
PGDAV College (Evening),
University of Delhi

Prof. M. Mujtaba Khan
Officer on Special Duty, CDOL

Mr. Prashant Negi
Hony. Jt. Director, CDOL

Dr. Arvind Kumar
Hony. Jt. Director, CDOL

Dr. Kalpana Singh
SSVPG College, Hapur,
CCS University, Meerut

PROGRAMME COORDINATOR
Mohammad Haris Siddiqui, CDOL, Jamia Millia Islamia

COURSE WRITER
Dr Saroj Kumari, *Assistant Professor, Department of Hindi, Vivekanand College, University of Delhi*

Block I: (Units 1-5)
Block II: (Units 6-11)
Block III: (Units 12-13)
Block IV: (Units 14-15)
Block V: (Unit 16) ©Reserved, 2017

All rights reserved. Printed and published on behalf of the CDOL, Jamia Millia Islamia by Vikas® Publishing House, New Delhi

January, 2017

ISBN: 978-93-5259-677-5

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage or retrieval system, without permission in writing from the CDOL, Jamia Millia Islamia, New Delhi.

Cover Credits: Anupama Kumari, *Faculty of Fine Arts, Jamia Millia Islamia*

SYLLABI-BOOK MAPPING TABLE

नवजागरण एवं छायावाद

Syllabi	Mapping in Book
खण्ड–I नवजागरण का स्वरूप	इकाई–1 : नवजागरण की अवधारणा (पृष्ठ 3–10) इकाई–2 : पाश्चात्य नवजागरण (पृष्ठ 11–28) इकाई–3 : भारतीय नवजागरण (पृष्ठ 29–38) इकाई–4 : हिंदी नवजागरण और हिंदी साहित्य (पृष्ठ 39–52) इकाई–5 : छायावाद : काव्यात्मक संरचना (पृष्ठ 53–70)
खण्ड–II भारतेन्दु एवं द्विवेदी युगीन काव्य	इकाई–6 : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र : हिन्दी की उन्नति पर व्याख्यान (पृष्ठ 73–98) इकाई–7 : भारतेन्दु और नए जमाने की मुकरी (पृष्ठ 99–110) इकाई–8 : विजयिनी विजय पताका या वैजयंती (पृष्ठ 111–118) इकाई–9 : भारत वीरत्व (पृष्ठ 119–124) इकाई–10 : भारत दुर्दशा (पृष्ठ 125–136) इकाई–11 : मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम सर्ग) (पृष्ठ 137–174)
खण्ड–III छायावादी काव्य–1	इकाई–12 : जयशंकर प्रसाद (पृष्ठ 175–254) इकाई–13 : सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (पृष्ठ 255–288)
खण्ड IV छायावादी काव्य–2	इकाई–14 : सुमित्रानंदन पंत (पृष्ठ 289–318) इकाई–15 : महादेवी वर्मा (पृष्ठ 319–354)
खण्ड–V स्वाध्याय	इकाई–16 : स्वाध्याय (पृष्ठ 355–386)

छायावादोत्तर काव्य

MHD - 07

एम.ए. (हिन्दी)
(दूरस्थ माध्यम)

दूरस्थ एवं मुक्त अधिगम केन्द्र
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025

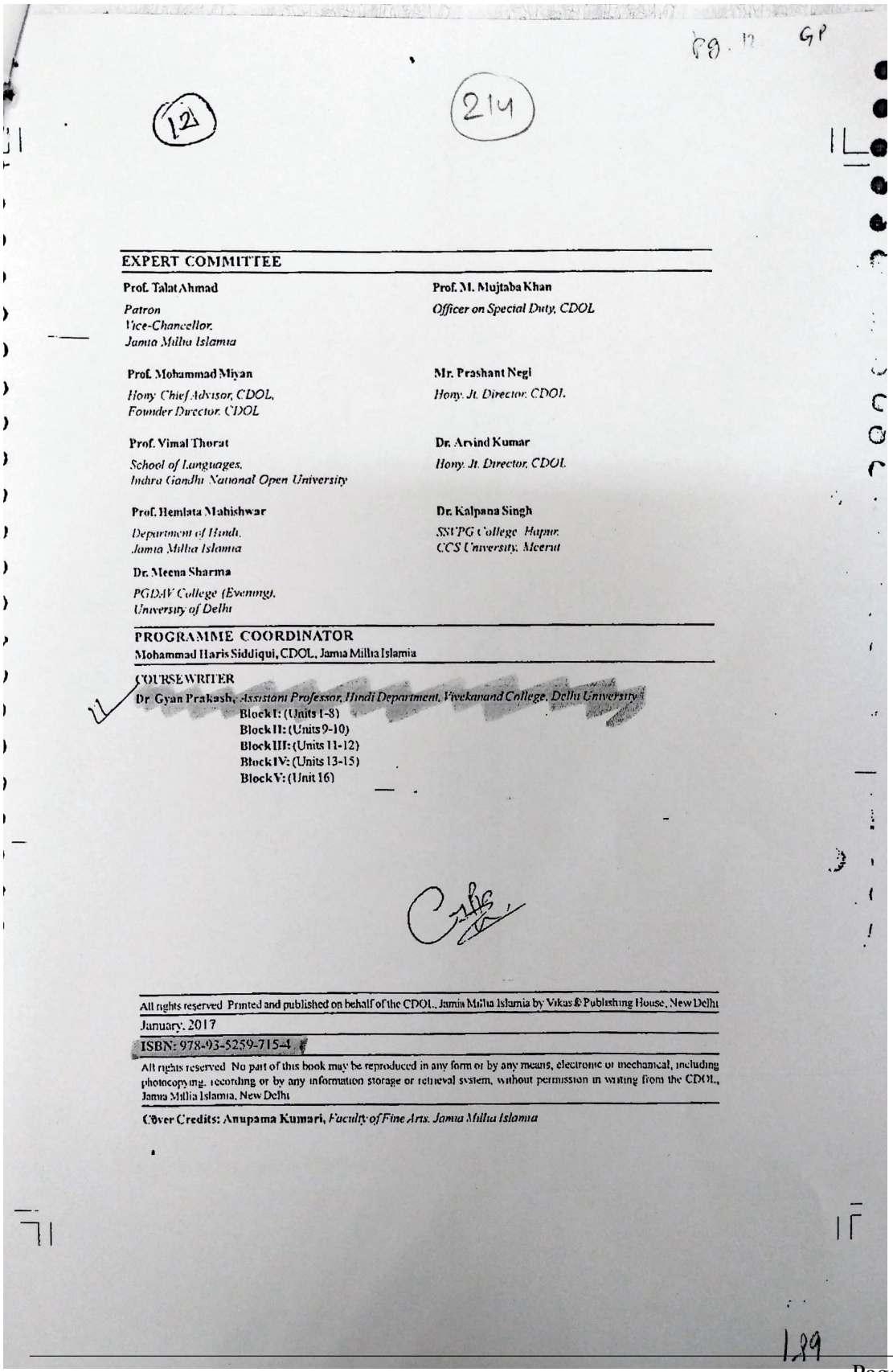

EXPERT COMMITTEE

Prof. Talat Ahmad
Patron
Vice-Chancellor,
Jamia Millia Islamia

Prof. M. Mujtaba Khan
Officer on Special Duty, CDOL

Prof. Mohammad Miyan
Hony. Chief Advisor, CDOL,
Founder Director, CDOL

Mr. Prashant Negi
Hony. Jt. Director, CDOL

Prof. Vimal Thorat
School of Languages,
Indira Gandhi National Open University

Dr. Arvind Kumar
Hony. Jt. Director, CDOL

Prof. Hemlata Mahishwar
Department of Hindi,
Jamia Millia Islamia

Dr. Kalpana Singh
SSVPG College, Hapur,
CCS University, Meerut

Dr. Meena Sharma
PGDAV College (Evening),
University of Delhi

PROGRAMME COORDINATOR
Mohammad Haris Siddiqui, CDOL, Jamia Millia Islamia

COURSEWRITER
Dr. Gyan Prakash, *Assistant Professor, Hindi Department, Vivekanand College, Delhi University*
Block I: (Units 1-8)
Block II: (Units 9-10)
Block III: (Units 11-12)
Block IV: (Units 13-15)
Block V: (Unit 16)

All rights reserved. Printed and published on behalf of the CDOL, Jamia Millia Islamia by Vikas® Publishing House, New Delhi

January, 2017

ISBN: 978-93-5259-715-4

All rights reserved. No part of this book may be reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording or by any information storage or retrieval system, without permission in writing from the CDOL, Jamia Millia Islamia, New Delhi

Cover Credits: Anupama Kumari, *Faculty of Fine Arts, Jamia Millia Islamia*

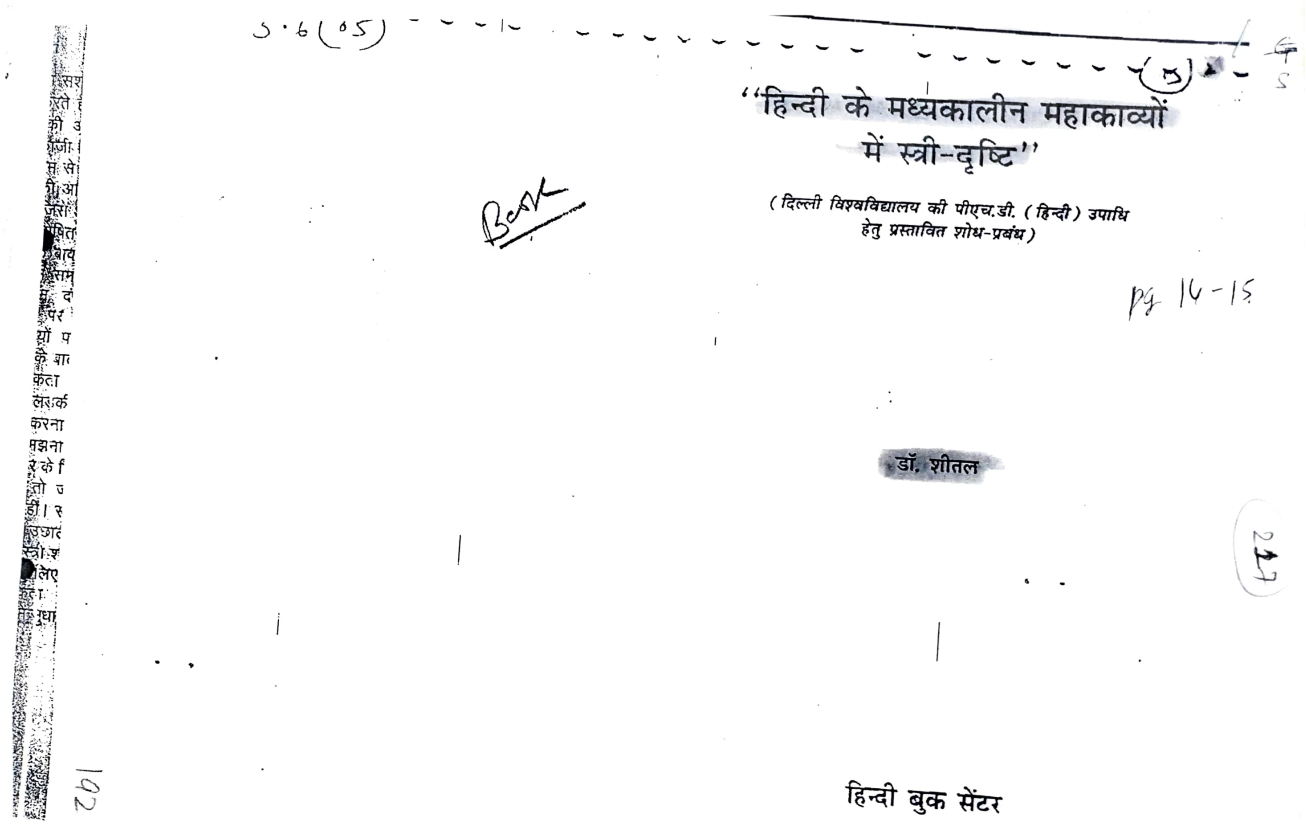

"हिन्दी के मध्यकालीन महाकाव्यों में स्त्री-दृष्टि"

(दिल्ली विश्वविद्यालय की पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध-प्रबंध)

डॉ. शीतल

हिन्दी बुक सेंटर

The publication was financially supported by the ICSSR
The responsibility for the facts states, opinions expressed, or conclusions reached, is entirely that of the author and that the ICSSR accepts no responsibility for them.
The work was evaluated by Prof. Rajesh Kumar Paswan, Jawahar Lal University, New Delhi on behalf of the ICSSR.

© डॉ. शीतल

ISBN No. : 978-93-8389441-3

मूल्य : 368.00

प्रथम संस्करण : 2017

प्रकाशक :
हिन्दी बुक सेंटर
4/5 बी, आसफ अली रोड
नई दिल्ली–110 002

लेज़र कम्पोज़िंग :
आर. एस. प्रिंट्स, नई दिल्ली–110 049

मुद्रक :
लाहुति प्रैस, नई दिल्ली

भूमिका

हिन्दी साहित्य का मध्ययुग भाव और विचार सम्पन्नता तथा कलात्मक सौष्ठव के कारण बहुत महत्वपूर्ण है। इस युग में जन-भाषाओं की प्रतिष्ठा ने साहित्य को जन-जीवन के निकट सम्पर्क में ला दिया तथा जनता की भावनाओं के अधिकांश पक्ष इस साहित्य में उन्मुक्त रूप से अभिव्यक्त हुए। भक्ति एवं अध्यात्म की कलापूर्ण अभिव्यक्ति तथा उद्देश्य की उदात्तता ने सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को परिष्कृत और परिमार्जित रूप में जनता तक पहुँचाया।

काव्य का पूर्ण उत्कर्ष महाकाव्यों में मिलता है। महाकाव्य युग-धर्म, युग-जीवन तथा युग-पुरुष का विराट् फलक पर अंकन करता है, प्राचीन एवं नवीन प्रतिमानों को, सांस्कृतिक संदर्भों को युगानुकूलता में नियोजित करता है। किसी भी उन्नतिशील जाति या देश की समग्र चेतना को समझने में महाकाव्य हमारी बड़ी सहायता करते हैं।

हिन्दी का मध्ययुग (भक्तिकाल और रीतिकाल) महाकाव्यों की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इस युग में अनेक प्रेमपरक, पौराणिक तथा ऐतिहासिक महाकाव्यों की रचना हुई। इन महाकाव्यों में नायक के साथ-साथ नायिका एवं अन्य स्त्रियों का भी वर्णन हुआ है। साहित्य के क्षेत्र में स्त्री हमेशा से ही चर्चा का विषय रही है। हम जानते है कि स्त्री विमर्श का मुख्य लक्ष्य हाशिये पर पड़ी स्त्री को समाज की मुख्यधारा में लाना है।

वास्तव में नारीवाद अपने व्यापक अर्थ में मानवीय चिंता है, एक मांग है आधी दुनियाँ को मानव-समाज में उसके न्यायपूर्ण स्थान पर स्थापित करने की, अर्थात् औरत को उसके मानवीय रूप में देखे जाने की। मानवीय आधारों पर यह एक आग्रह है सृष्टि के दोनों घटकों को समरूपता में देखे जाने का।

जैसा कि कहा जा चुका है कि साहित्य में स्त्री पहले से ही मौजूद थी चाहे वह कोई भी काल हो। आदिकाल में या फिर उसके बाद अब तक के साहित्य में स्त्री की पहचान आज एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। कृष्ण-काव्य-धारा को छोड़कर भक्तिकालीन साहित्य में जहां नारी उपेक्षित रही तथा

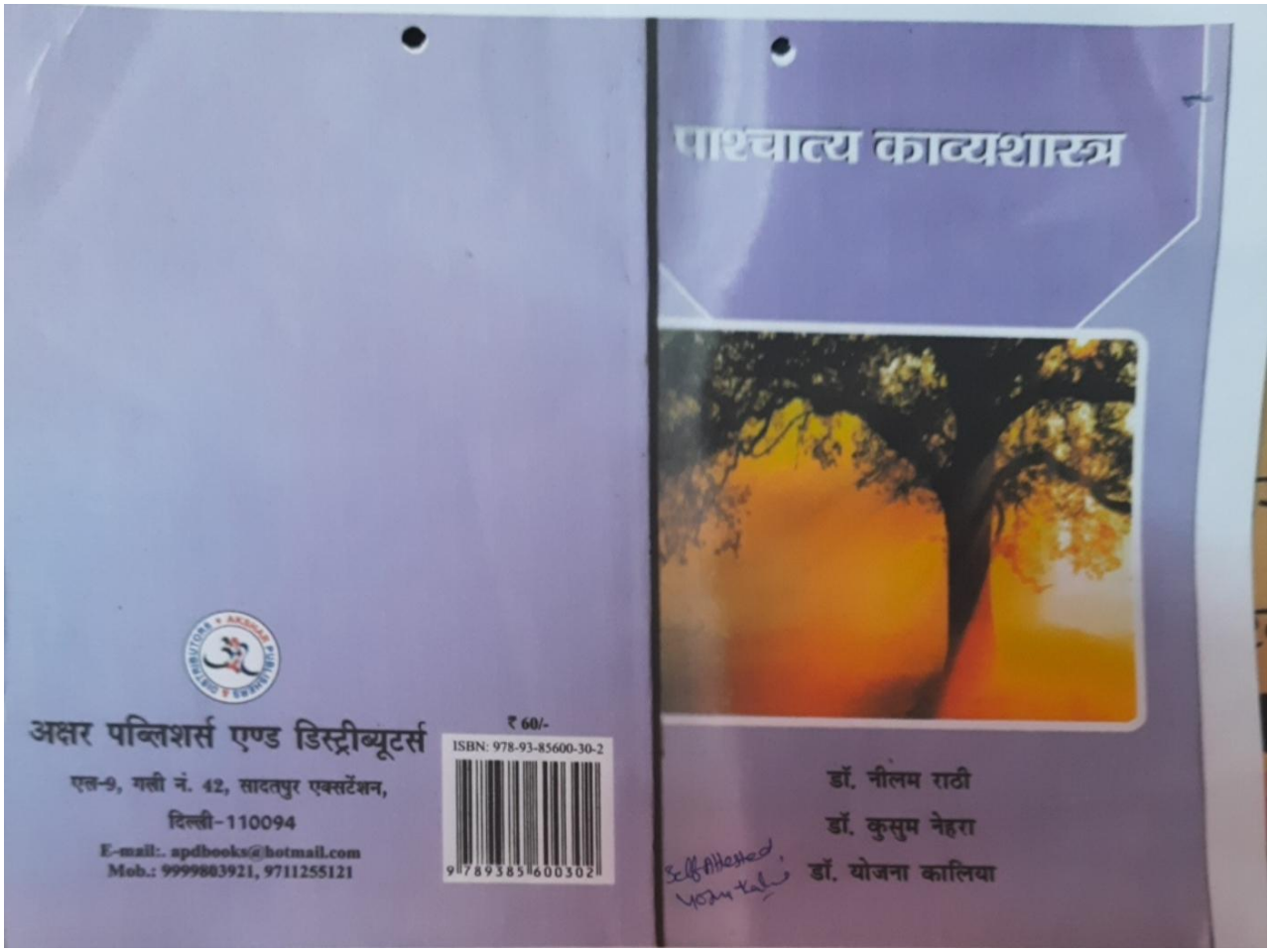
पाश्चात्य काव्यशास्त्र
डॉ. नीलम राठी
डॉ. कुसुम नेहरा
डॉ. योजना कालिया
अक्षर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
एल-9, गली नं. 42, सादतपुर एक्सटेंशन,
दिल्ली-110094
E-mail:. apdbooks@hotmail.com
Mob.: 9999883921, 9711255121
₹ 60/-
ISBN: 978-93-85600-30-2
9 789385 600302

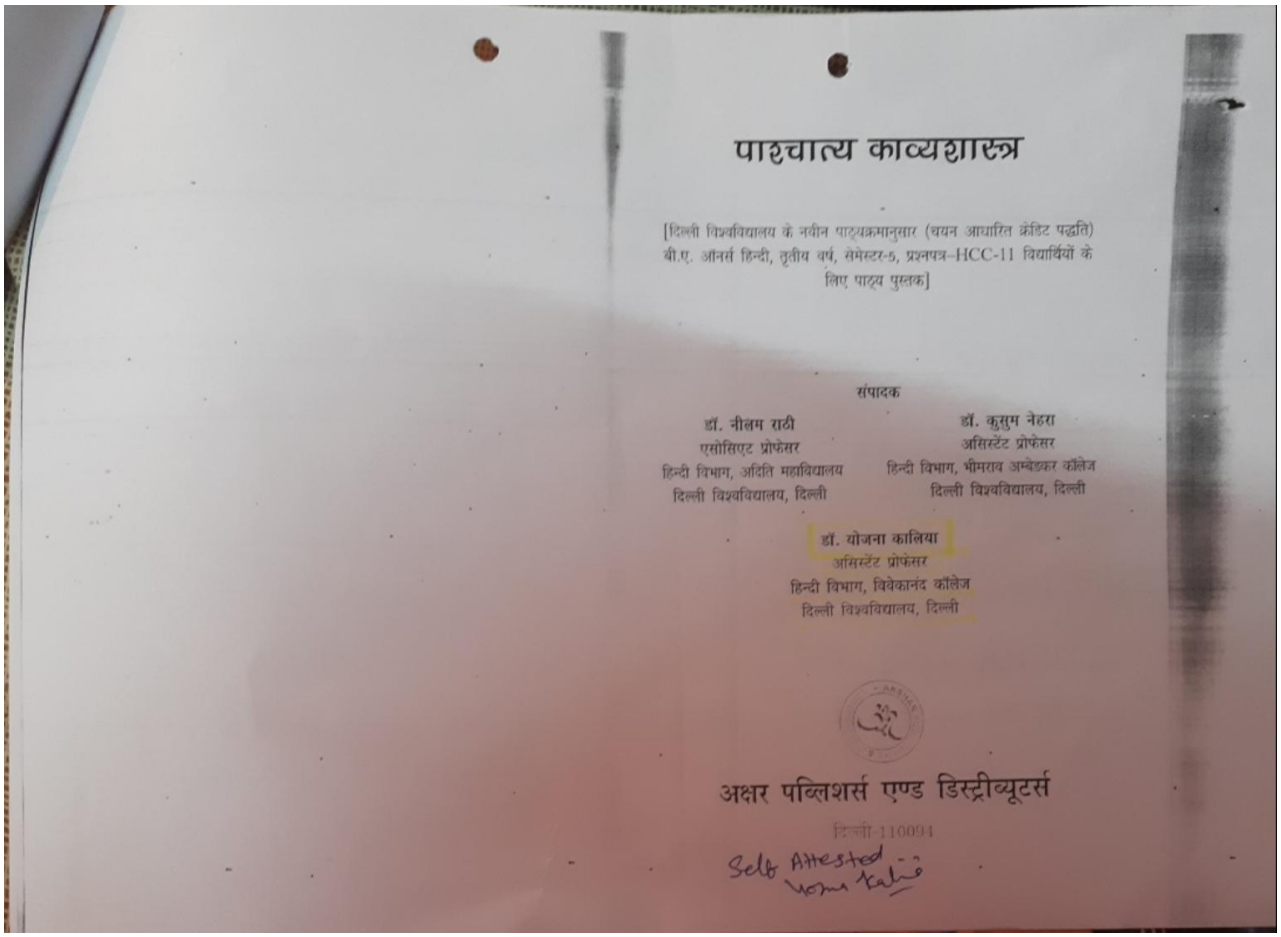

पाश्चात्य काव्यशास्त्र

[दिल्ली विश्वविद्यालय के नवीन पाठ्यक्रमानुसार (चयन आधारित क्रेडिट पद्धति) बी.ए. ऑनर्स हिन्दी, तृतीय वर्ष, सेमेस्टर-5, प्रश्नपत्र–HCC-11 विद्यार्थियों के लिए पाठ्य पुस्तक]

संपादक

डॉ. नीलम राठी
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. कुसुम नेहरा
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, भीमराव अम्बेडकर कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. योजना कालिया
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग, विवेकानंद कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

अक्षर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

दिल्ली 110094

Selb Attested

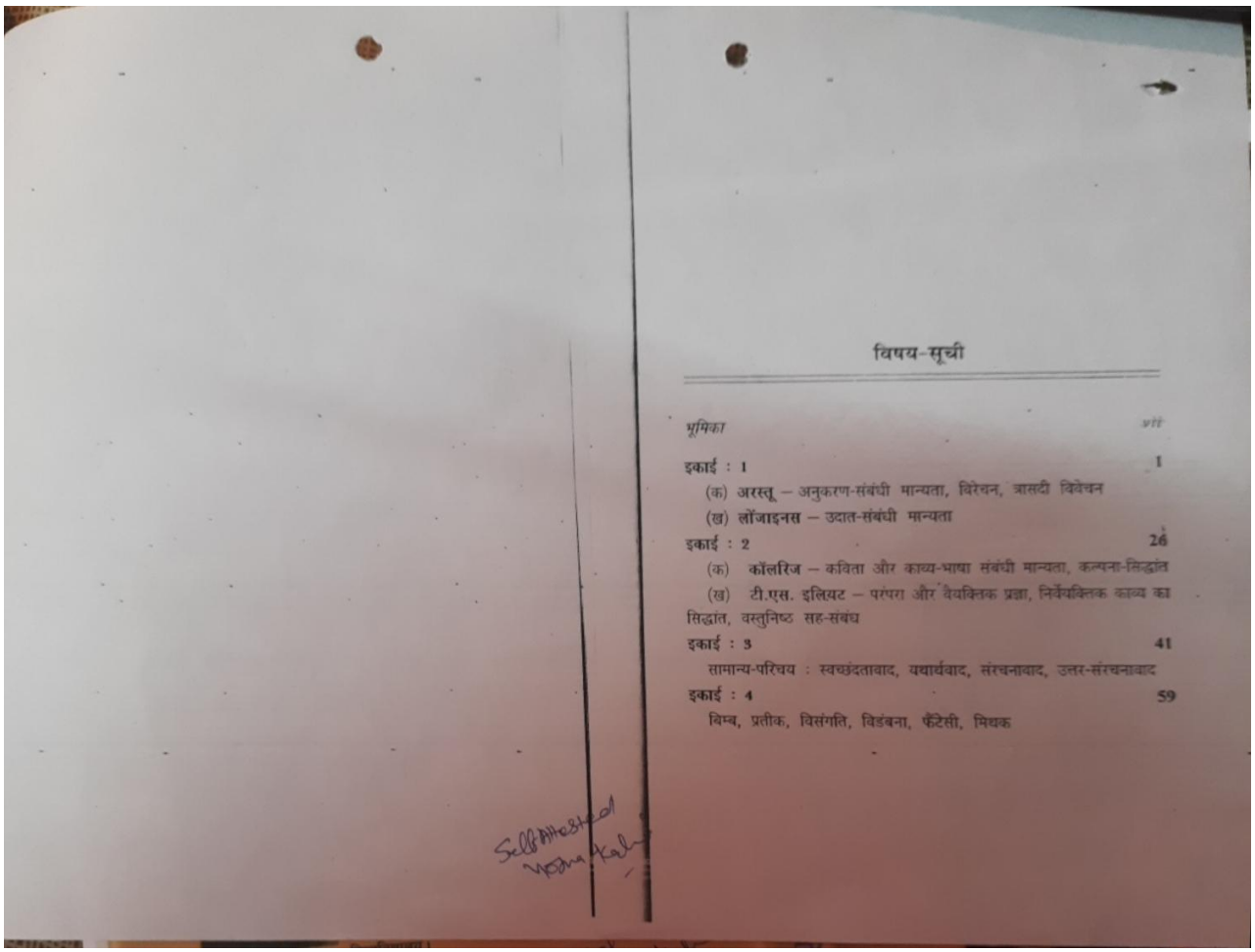

विषय-सूची

भूमिका vii

इकाई : 1 1

(क) अरस्तू – अनुकरण-संबंधी मान्यता, विरेचन, त्रासदी विवेचन

(ख) लोंजाइनस – उदात-संबंधी मान्यता

इकाई : 2 26

(क) कॉलरिज – कविता और काव्य-भाषा संबंधी मान्यता, कल्पना-सिद्धांत

(ख) टी.एस. इलियट – परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिक काव्य का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सह-संबंध

इकाई : 3 41

सामान्य-परिचय : स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद

इकाई : 4 59

बिम्ब, प्रतीक, विसंगति, विडंबना, फैंटेसी, मिथक

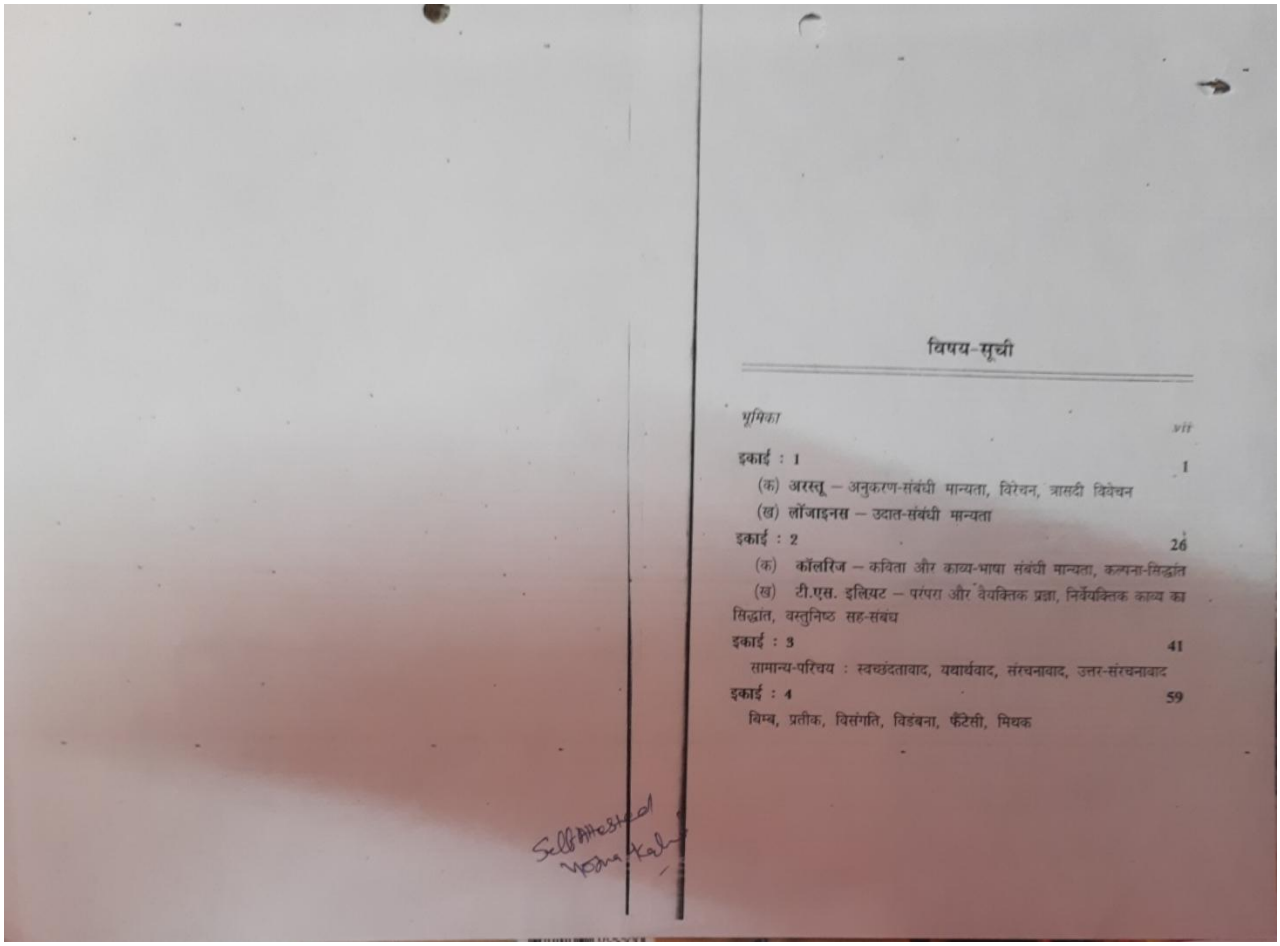

विषय-सूची

भूमिका vii

इकाई : 1 1

(क) अरस्तू – अनुकरण-संबंधी मान्यता, विरेचन, त्रासदी विवेचन

(ख) लॉंजाइनस – उदात-संबंधी मान्यता

इकाई : 2 26

(क) कॉलरिज – कविता और काव्य-भाषा संबंधी मान्यता, कल्पना-सिद्धांत

(ख) टी.एस. इलियट – परंपरा और वैयक्तिक प्रज्ञा, निर्वैयक्तिक काव्य का सिद्धांत, वस्तुनिष्ठ सह-संबंध

इकाई : 3 41

सामान्य-परिचय : स्वच्छंदतावाद, यथार्थवाद, संरचनावाद, उत्तर-संरचनावाद

इकाई : 4 59

बिम्ब, प्रतीक, विसंगति, विडंबना, फैंटेसी, मिथक

हिन्दी नाटक और एकांकी

संकलन/संपादन
डॉ. शीतल
सुमिता त्रिपाठी

श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली-110053

श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली-110053

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गामड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 011-22941694

ISBN: 978-93-81350-68-9

© संपादक

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 150-00 रुपये

शब्द संयोजन : डी. के. ग्राफिक्स, दिल्ली-110093

मुद्रक : सलमान ऑफसेट प्रेस, दिल्ली-110053

भूमिका

हिन्दी गद्य में नाट्य विधा का विकास वास्तविक रूप से भारतेन्दु युग से शुरू होता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र रंगमंच को ध्यान न रखते हुए नाटकों की रचना की। भारतेन्दु के नाटकों की मूल चिंता वही है जो भारतीय नवजागरण की है। भारतेन्दु ने अनेक नाटकों की रचना की जैसे– अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा, नीलदेवी आदि। इस युग के अन्य नाटककारों में प्रताप नारायण मिश्र, लाला श्रीनिवासदास, किशोरीलाल गोस्वामी आदि प्रमुख हैं। भारतेन्दु के बाद द्विवेदी युग नाट्य रचना की दृष्टि से अंधकार का काल रहा। मध्यवर्ग के उदय और शिक्षा प्रसार के कारण द्विवेदी युग की सर्जनात्मकता अन्य विधाओं में दिखाई देती है।

भारतेन्दु के बाद जयशंकर प्रसाद को दिशा प्रवर्तक नाटककार के रूप में जाना जाता है। प्रसाद ने हिन्दी नाटक के अवरुद्ध विकास को पुनः गति प्रदान किया। प्रसाद के नाटकों की विषय वस्तु ऐतिहासिक है पर वे जिन मूल्यों और समस्याओं को उठाते हैं वें समकालीन समाज से जुड़ जाते हैं। ध्रुवस्वामिनी, चन्द्रगुप्त, स्कन्दगुप्त आदि प्रमुख नाटक हैं। नाटक को रंगमंच से जोड़ने में उपेन्द्रनाथ अश्क, जगदीशचन्द्र माथुर, भुवनेश्वर प्रसाद आदि ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उपेन्द्रनाथ अश्क पहले नाटककार हैं जिन्होंने हिन्दी नाटक को रोमांस के कठघरे से निकालकर काफी हद तक आधुनिक सामाजिक भावबोध से जोड़ा। पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, जय पराजय आदि इनके प्रमुख नाटक हैं।

स्वाधीन भारत के नाट्य साहित्य में जगदीशचन्द्र माथुर का नाम प्रमुख है। इनका रंग विधान बहुत सघन है। इतिहास की कथाओं के माध्यम से इन्होंने व्यक्ति मन के तनावों और द्वंद्वों को व्यक्त करने की कोशिश की है। कोणार्क, पहला राजा, शारदीया आदि इनके प्रमुख नाटक हैं। इसी परंपरा में धर्मवीर भारती का 'अंधायुग' भी प्रमुख नाटक है युद्ध की त्रासदी और उससे पैदा होने वाली विकृतियों को उभारने की कोशिश इस नाटक में किया गया है।

मोहन राकेश स्वाधीन भारत के सबसे सफल नाटककार हैं उन्होंने ऐतिहासिक कथानक पर आधारित अपनी नाट्य कृतियों को समकालीन बोध से बड़ी ही कुशलतापूर्वक जोड़ा है आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे उनके तीन नाटक हैं। आधे-अधूरे स्वातंत्र्योत्तर भारत का पहला हिंदी नाटक है जिसमें टूटते हुए पारिवारिक मूल्यों को यथार्थ ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

मोहन राकेश की ही परंपरा के महत्वपूर्ण नाटककार सुरेन्द्र वर्मा हैं। समस्या की धार की और भाषिक संरचना का विकसित रूप इनके नाटकों में दिखायी देता

डॉ. सरोज कुमारी
डॉ. योजना कालिया
स्त्री लेखन का दूसरा परिदृश्य
Self Attested
Yojna Kalia

अनुक्रम

संत कविता का स्त्रीपक्ष
डॉ. सरोज कुमारी : 17

स्त्री-विमर्श की पृष्ठभूमि में रीतिकाव्य की भूमिका
डॉ. योजना कालिया : 24

हिंदी कहानी : स्त्री का सच
डॉ. सरोज कुमारी : 29

स्त्री-पुरुष संबंधों को समझने की कुंजी: अर्द्धनारीश्वर
डॉ. योजना कालिया : 34

मीडिया, बाजार और स्त्री
डॉ. सरोज कुमारी : 42

हाशिए पर स्त्री
डॉ. योजना कालिया : 48

सामाजिक बदलाव और स्त्री-परिधि
डॉ. सरोज कुमारी : 53

समकालीन मीडिया-लेखन में बदलती स्त्री-छवि
डॉ. योजना कालिया : 59

समकालीन पत्रकारिता और स्त्री-प्रश्न
डॉ. सरोज कुमारी : 65

Self Attested,
Yojna Kalia

स्त्री आंदोलन और साहित्य का अंतः संबंध
डॉ. योजना कालिया : 70

सर्वधर्म समभाव के परिप्रेक्ष्य में गांधी का स्त्री-दर्शन
डॉ. सरोज कुमारी : 75

मित्रो मरजानी की 'सुमिताबन्ती'
डॉ. योजना कालिया : 80

पत्रकारिता की दुनिया : दलित स्त्री के शोषण की व्यथा-कथा
डॉ. सरोज कुमारी : 83

साहित्य में बदलते स्त्री-पुरुष संबंधों के विविध रूप
डॉ. योजना कालिया : 89

भूमंडलीकृत समाज और स्त्री
डॉ. सरोज कुमारी : 98

स्त्री लेखन में पुरुष संदर्भ
डॉ. योजना कालिया : 104

घरेलू हिंसा! आखिर कब तक
डॉ. सरोज कुमारी : 111

वर्तमान दलित साहित्य में स्त्री-विमर्श
डॉ. सरोज कुमारी : 117

भारत में स्त्री की दशा, दिशा और मानवाधिकार
डॉ. सरोज कुमारी : 124

Self Attested
Yojna Kalia

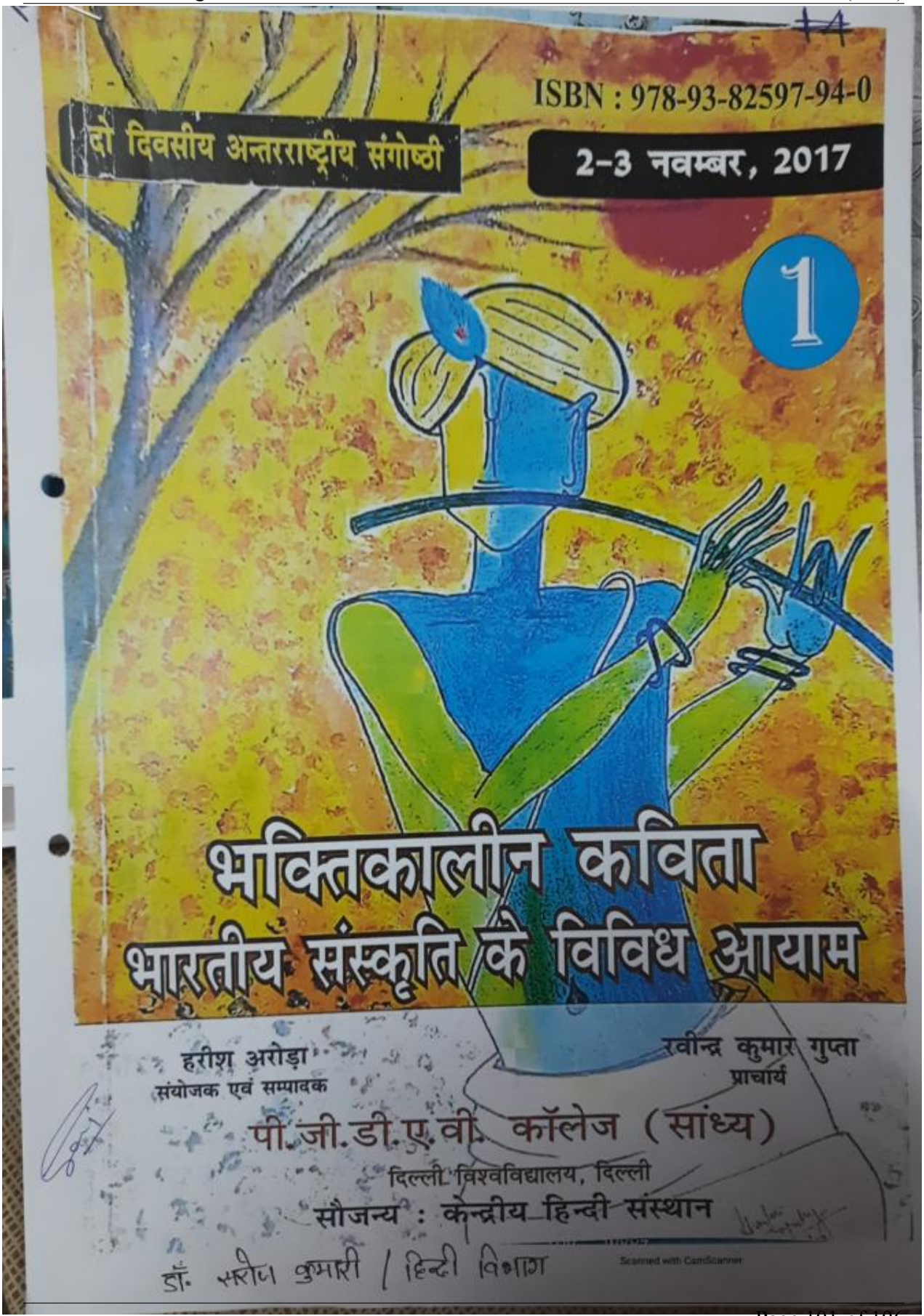
ISBN : 978-93-82597-94-0
दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी
2-3 नवम्बर, 2017
1
भक्तिकालीन कविता
भारतीय संस्कृति के विविध आयाम
हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं सम्पादक
रवीन्द्र कुमार गुप्ता
प्राचार्य
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सौजन्य : केन्द्रीय हिन्दी संस्थान
डॉ. सरोज कुमारी / हिन्दी विभाग
Scanned with CamScanner

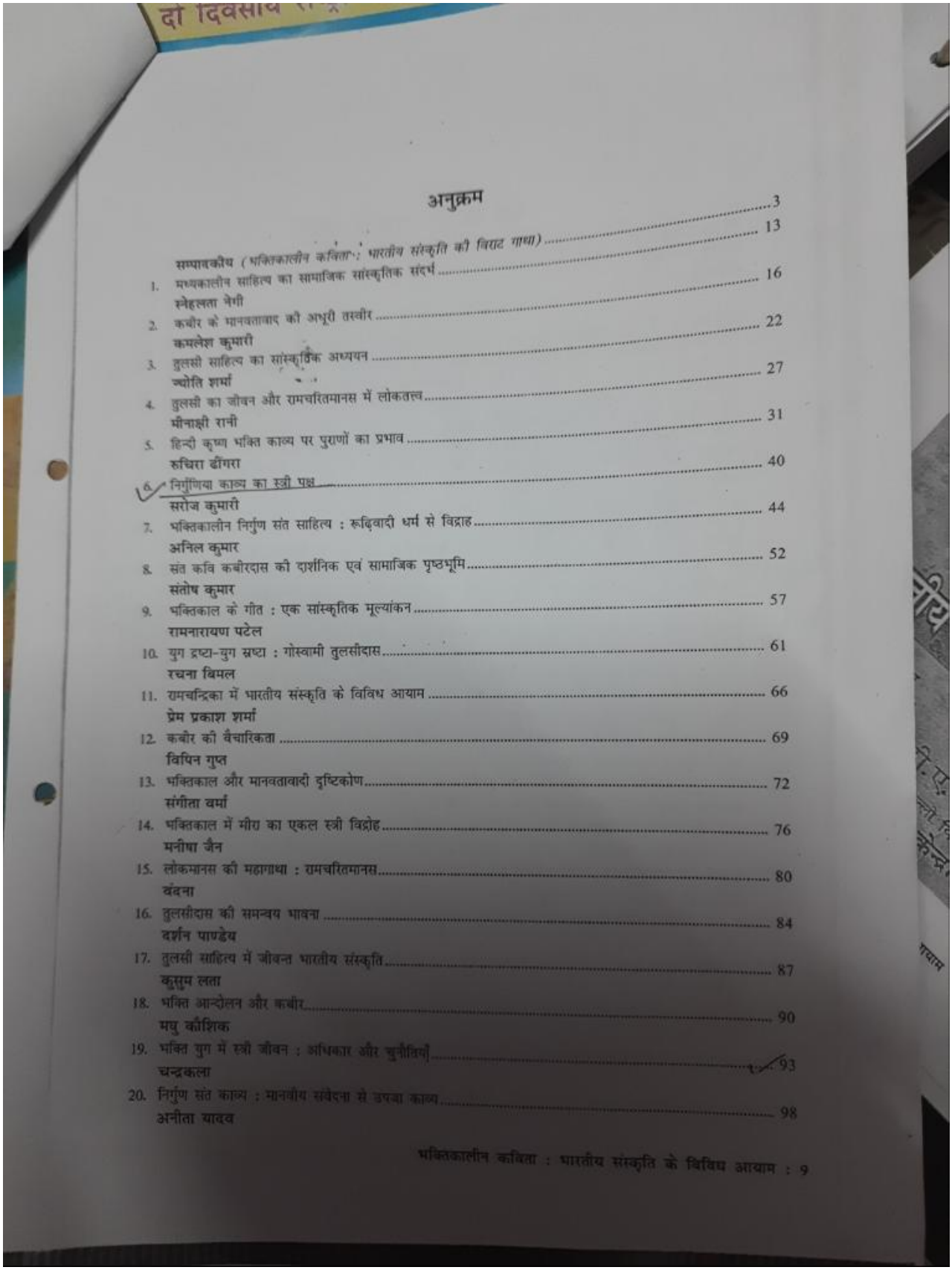

दो दिवसीय

अनुक्रम

सम्पादकीय (भक्तिकालीन कविता : भारतीय संस्कृति की विराट गाथा) 3

1. मध्यकालीन साहित्य का सामाजिक सांस्कृतिक संदर्भ 13
स्नेहलता नेगी
2. कबीर के मानवतावाद की अधूरी तस्वीर 16
कमलेश कुमारी
3. तुलसी साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन 22
ज्योति शर्मा
4. तुलसी का जीवन और रामचरितमानस में लोकतत्त्व 27
मीनाक्षी रानी
5. हिन्दी कृष्ण भक्ति काव्य पर पुराणों का प्रभाव 31
रुचिरा डींगरा
6. निर्गुणिया काव्य का स्त्री पक्ष 40
सरोज कुमारी
7. भक्तिकालीन निर्गुण संत साहित्य : रूढ़िवादी धर्म से विद्राह 44
अनिल कुमार
8. संत कवि कबीरदास की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि 52
संतोष कुमार
9. भक्तिकाल के गीत : एक सांस्कृतिक मूल्यांकन 57
रामनारायण पटेल
10. युग द्रष्टा-युग स्रष्टा : गोस्वामी तुलसीदास 61
रचना बिमल
11. रामचन्द्रिका में भारतीय संस्कृति के विविध आयाम 66
प्रेम प्रकाश शर्मा
12. कबीर की वैचारिकता 69
विपिन गुप्त
13. भक्तिकाल और मानवतावादी दृष्टिकोण 72
संगीता वर्मा
14. भक्तिकाल में मीरा का एकल स्त्री विद्रोह 76
मनीषा जैन
15. लोकमानस की महागाथा : रामचरितमानस 80
वंदना
16. तुलसीदास की समन्वय भावना 84
दर्शन पाण्डेय
17. तुलसी साहित्य में जीवन्त भारतीय संस्कृति 87
कुसुम लता
18. भक्ति आन्दोलन और कबीर 90
मधु कौशिक
19. भक्ति युग में स्त्री जीवन : अधिकार और चुनौतियाँ 93
चन्द्रकला
20. निर्गुण संत काव्य : मानवीय संवेदना से उपजा काव्य 98
अनीता यादव

निर्गुणिया काव्य का स्त्री पक्ष

डॉ. सरोज कुमारी
विवेकानंद कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय

हिंदी साहित्य में भक्ति आंदोलन का उदय मनुष्य के ईश्वर के प्रति श्रद्धा भाव तक ही सीमित नहीं है। यह आंदोलन तत्कालीन समय और समाज की विशेष परिस्थितियों की उपज है। यह भक्ति आंदोलन जितना विस्तृत, बहु आगामी है उतना ही जटिल भी। जटिल इस अर्थ में कि इसको किसी एक या दो विचारधाराओं की परिधि में नापा जाना संभव नहीं है, यह विभिन्न भाव, विचार, दर्शन, धर्म और पद्धतियों में गुथा हुआ है। ''भारतीय धर्मसाधना के इतिहास में भक्ति आंदोलन का उदय और विस्तार एक विलक्षण घटना है। इस अर्थ में कि यह त्याग अपरिग्रह, सादगी, सच्चाई आदि मानवीय गुणों के सार से युक्त है। भक्त और भगवान के बीच यह किसी मध्यस्थता को स्वीकार नहीं करता। वह चाहे निर्गुण भक्त हो या सगुण। मानवीय पीड़ा का संज्ञान इसका केंद्रीय तत्व है।''[1] भक्तिकाव्य के हर पहलू पर अपनी पैनी नजर रखने वाले प्रो0 गोपेश्वर सिंह के अनुसार भक्ति आंदोलन का केंद्रीय भाव मानवीय पीड़ा का संज्ञान है। यह भक्ति आंदोलन का केंद्रीय भाव मानवीय पीड़ा का संज्ञान है तो संत साहित्य में नारी निंदा का काला अध्याय क्यों लिखा गया ? संत समाज सुधारक थे, वे अक्खड़, फक्कड़ और मस्त मौला स्वभाव के थे सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार, उपदेश, समाज सुधार, बाह्य आडंबरों का विरोध, एकेश्वरवाद आदि इनके साहित्य में केंद्र में थे। अधिकांश संत कवियों के केंद्र में नारी निंदा का पाठ भी अनिवार्य रूप से मिलता है, फिर प्रो. गोपेश्वर की उक्त टिप्पणी फीकी पड़ जाती है। नारी को समाज के हित के लिए बाधक मानकर कोई भी विचार धारा मानव पीड़ा की संवाहक नहीं मानी जा सकती। इस आलेख में मेरा उद्देश्य संत कवियों के नारी विषयम दृष्टि कोण पर विचार करना नहीं है अपितु संत साहित्य में स्त्री रचनाकारों के योगदान को प्रकाश में लाना है जिन्हें हिंदी साहित्य में पुरोधाओं के द्वारा उस रूप में नहीं याद किया गया जिस रूप में किया जाना चाहिए था। प्रो0 गोपेश्वर सिंह ने अपनी पुस्तक 'भक्ति आंदोलन और काव्य' में स्त्री रचनाकारों के योगदान को सराहते हुए लिखा है – 'भक्ति काव्य को नया आयाम मिलता है स्त्री भक्त कवयित्रियों से और उनका भक्ति काव्य सौंदर्य को द्विगुणित कर देता है। यह अजीब विरोधाभास है कि जिस भक्ति काव्य में स्त्रियों के प्रति कड़े कड़वे विचार है उसी काल में भक्ति क्षेत्र में अविरल भारतीय स्तर पर बड़ी संख्या में स्त्रियाँ दाखिल होती है। पुरुष धर्माचार्यों एवं संत कवियों के विचार स्त्रियों के प्रति अनुदार ही है।'[2] उन्होंने स्पष्ट रूप से यह स्वीकार किया है कि ''कबीर के विचार स्त्रियों के संबंध में अत्यंत कड़वे हैं। वे संवेदना के स्तर पर नारी विरह के अनूठे गीत रचते हैं किंतु चेतना के स्तर पर किसी भी रूप में नारी को स्वीकार नहीं करते। नारी उनके लिए माया, नरक की खान आदि न जाने क्या-क्या है?''[3] फिर हम उन्हें समाज सुधारक के रूप में कैसे स्वीकार कर सकते हैं। समूचे निर्गुण संप्रदाय में दादू आदि कबीर ने नारी के लिए सर्वथा अशोभनीय शब्द कहे हैं। सूरदास आदि नानक के यहाँ इसके उलट है, उन्होंने नारी के सौंदर्य आदि प्रेम की ऐसी झाँकी प्रस्तुत की है जिसको पढ़कर मार्यादावादी आलोचक भी अपना रास्ता भूल जाते हैं किंतु साहित्य लेखन परंपरा में निर्गुण पंथीय धरातल पर निर्गुण स्त्री रचनाकारों को योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। भक्ति काव्य में बिना किसी गुरु आदि शिष्य परंपरा के मीराबाई का आगमन किसी बड़ी घटना के बराबर है तथा न ही उनका कोई गुरु था और न ही शिष्य। फिर उनकी भक्ति भावना के गीत जन गीत बनकर आप भी लोगों के कंठाहार बने हुए है। उनकी कविता में कदम-कदम पर विष की चर्चा हुई है। उनका विषदान मध्यकालीन नारी का विषदान है आदि विषाद मध्यकालीन नारी का विषाद। उनका विद्रोह मध्यकालीन नारी के अस्तित्व की लड़ाई है एवं अपनी जमीन तलाशती नारी का विद्रोही स्वर है। ''छाँदि दई कुल मानि'' कहकर संघर्ष का बिगुल बजाती स्त्री की पहल है। प्रो. गोपेश्वर सिंह का कथन है – ''उनका काव्य संप्रदाय-निरपेक्ष भक्ति का श्रेष्ठ उदाहरण है। वे कृष्ण की भक्त हैं किंतु उनके काव्य में सगुण-निर्गुण, सामाजिक मार्यादा आदि के परे भक्ति काव्य को नया सौंदर्य और उत्कर्ष प्रदान करती है। मीरा संप्रदाय, परिवार, समाज आदि की मर्यादाओं का अतिक्रमण करती है। अतिक्रमण का यह साहस भरा काम बगैर दीवानगी के संभव नहीं। ये दीवानापन मीरा के काव्य का सबसे आकर्षक पक्ष है, उनकी कविता की आत्मा है। उनके इस पक्ष की उपेक्षा हुई – उनके समय में भी और बाद में भी।''[4]

मीरा काव्य आज किसी परिचय का मोहताज नहीं, यह साहित्य में स्त्री रचनाकारों के योगदान का पूर्ण रूप से खिला हुआ पुष्प है जिसकी सुगंध मध्यकालीन साहित्य से होती है, वर्तमान साहित्य में भी महसूस की जा सकती है। साहित्य इतिहासकारों, मर्मज्ञों और विचारकों ने निर्गुण पंथी धारा में प्राय संतों द्वारा लिखे गए साहित्य को ही सराहा है, ठीक विपरीत निर्गुण पंथी कवयित्रियों द्वारा रचित उत्कृष्ट साहित्य को पूर्णतः अनदेखा कर दिया गया है। ''संतों द्वारा की जाने वाली प्रबल नारी-निंदा के

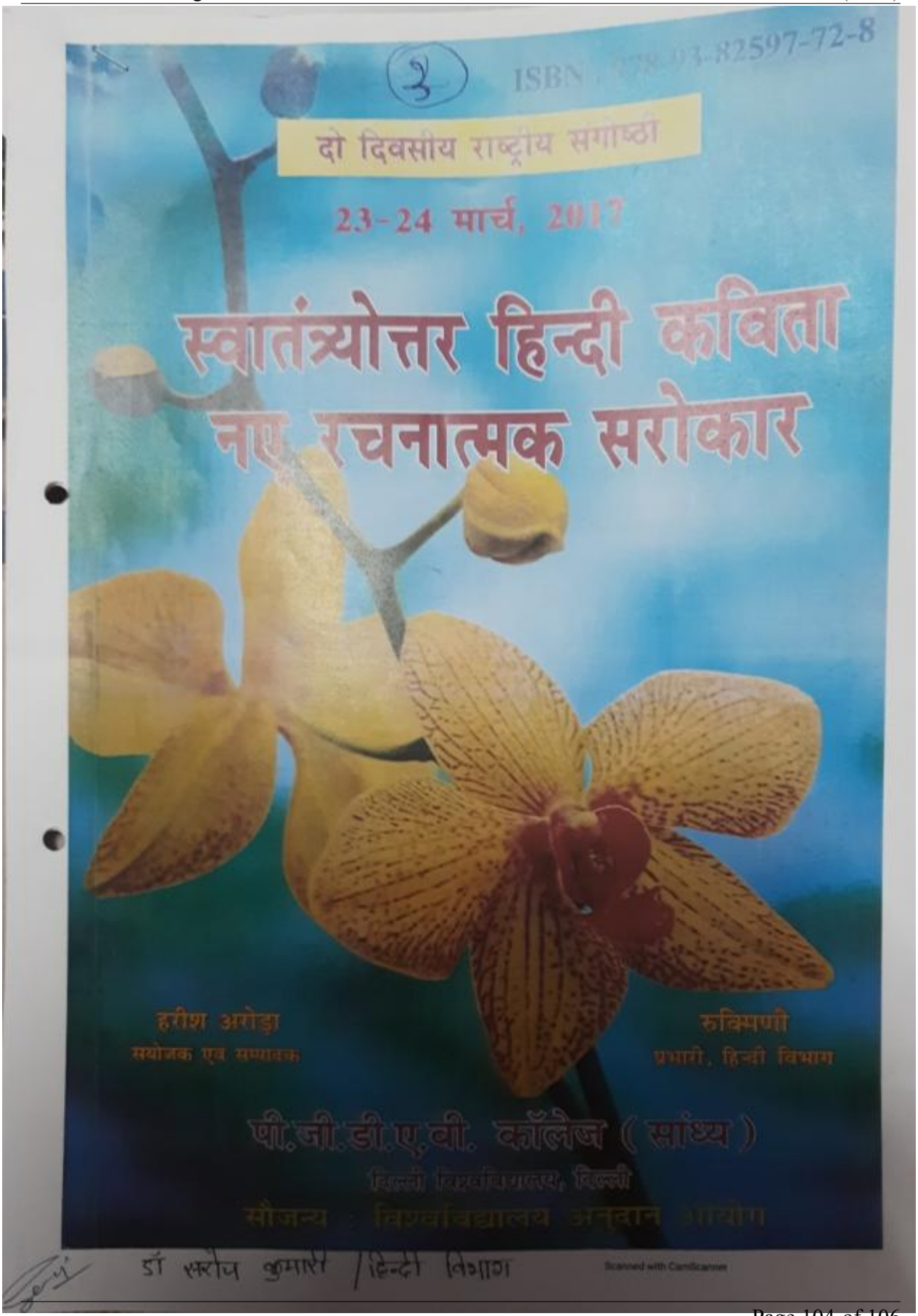
3
ISBN 978-93-82597-72-8
दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
23-24 मार्च, 2017
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता
नए रचनात्मक सरोकार
हरीश अरोड़ा
संयोजक एवं संपादक
रुक्मिणी
प्रभारी, हिन्दी विभाग
पी.जी.डी.ए.वी. कॉलेज (सांध्य)
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
सौजन्य : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
डॉ सरोज कुमारी /हिन्दी विभाग
Scanned with CamScanner

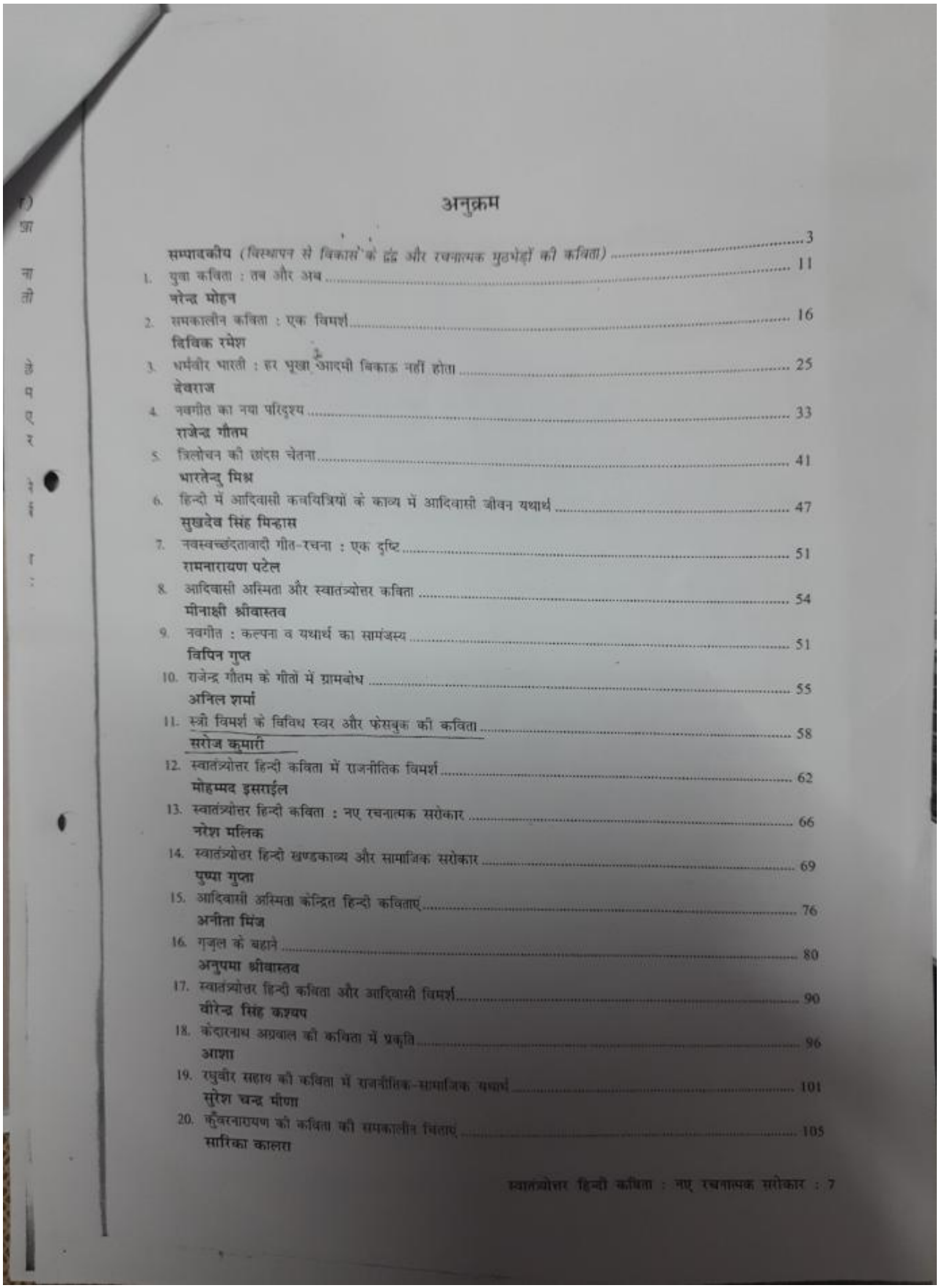

अनुक्रम

सम्पादकीय *(विस्थापन से विकास के द्वंद्व और रचनात्मक मुठभेड़ों की कविता)* 3

1. युवा कविता : तब और अब 11
नरेन्द्र मोहन
2. समकालीन कविता : एक विमर्श 16
दिविक रमेश
3. धर्मवीर भारती : हर भूखा आदमी विकाऊ नहीं होता 25
देवराज
4. नवगीत का नया परिदृश्य 33
राजेन्द्र गौतम
5. त्रिलोचन की छांदस चेतना 41
भारतेन्दु मिश्र
6. हिन्दी में आदिवासी कवयित्रियों के काव्य में आदिवासी जीवन यथार्थ 47
सुखदेव सिंह सिद्धास
7. नवस्वच्छंदतावादी गीत-रचना : एक दृष्टि 51
रामनारायण पटेल
8. आदिवासी अस्मिता और स्वातंत्र्योत्तर कविता 54
मीनाक्षी श्रीवास्तव
9. नवगीत : कल्पना व यथार्थ का सामंजस्य 51
विपिन गुप्त
10. राजेन्द्र गौतम के गीतों में ग्रामबोध 55
अनिल शर्मा
11. स्त्री विमर्श के विविध स्वर और फेसबुक की कविता 58
सरोज कुमारी
12. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता में राजनीतिक विमर्श 62
मोहम्मद इसराईल
13. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता : नए रचनात्मक सरोकार 66
नरेश मलिक
14. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी खण्डकाव्य और सामाजिक सरोकार 69
पुष्पा गुप्ता
15. आदिवासी अस्मिता केन्द्रित हिन्दी कविताएं 76
अनीता मिंज
16. गज़ल के बहाने 80
अनुपमा श्रीवास्तव
17. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कविता और आदिवासी विमर्श 90
वीरेन्द्र सिंह कश्यप
18. केदारनाथ अग्रवाल की कविता में प्रकृति 96
आशा
19. रघुवीर सहाय की कविता में राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ 101
सुरेश चन्द्र मीणा
20. कुँवरनारायण की कविता की समकालीन चिंताएं 105
सारिका कालरा

स्त्री विमर्श के विविध स्वर और फेसबुक की कविता

डॉ. सरोज कुमारी
हिंदी विभाग
विवेकानन्द कॉलिज, दिल्ली।

समाज के प्रत्येक वर्ग से सीधे जुड़े होने के कारण फेसबुक सोशल मीडिया का सर्वाधिक प्रयोग में लाना जाने वाला महत्वपूर्ण हिस्सा है। मानव जीवन के प्रत्येक पक्ष की झाँकी बड़ी यहाँ देखी जा सकती है। इतना ही नहीं फेसबुक ने अभिव्यक्ति के लिए एक बड़ा मंच दिया है। अब कविता हो या कहानी या कोई विचार पत्र-पत्रिकाओं या पत्रकारों की मंशा का मोहताज नहीं। वह समय बहुत पीछे चला गया जन रचनाकार अपनी रचना के प्रकाशन के लिए पत्र-पत्रिकाओं की प्रतिक्रिया की बाट-जोहता था। महीने, दो महीने और कभी-कभी छः महीने का समय भी उसके प्रकाशन में गुजर जाता था और जब रचना प्रकाशित होती थी तो विषय अपनी प्रासंगिकता खोता नजर आता था और हद तो तब हो जाती थी जब वह रचना क्षमा प्रार्थना के साथ बिना प्रकाशित हुए लेखक को वापस मिल जाती थी।

फेसबुक ने अभिव्यक्ति का नाम आगाम विकसित किया है। यहाँ प्रत्येक वर्ग अभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र है। फिर वह पुरुष हो या स्त्री। खासतौर से फेसबुक स्त्रियों की चाहरदीवारी में बन्द दुनिया में एक ऐसा झरोखा है जहाँ वह अपनी स्वतंत्रता की साँस ले रही है, अब उनकी रचनाएँ डायरी के पन्नों में दम नहीं तोड़ती। आज वह स्वतंत्र रुप से सोशल मीडिया में हस्तक्षेप कर रही है, अपनी बात रख रही है, इसका सबसे बड़ा खतरा पुरुष समाज को उठाना पड़ा है।

फेसबुक पर कवि की दुनिया उसकी मुट्ठी में होती है क्योंकि इस तरह वह एक कुएँ से निकलकर समन्दर की सैर करने लगा हो। कवि की कोई रचना विशेष क्षमा प्रार्थना के साथ वापस आती है, तब उसे कितनी ग्लानि होती है, यह कोई ओर नहीं समझ सकता। जो कविताएँ डायरी और अस्वीकार की पीड़ा में दम तोड़ रही होती हैं वे फेसबुक वॉल से ब्लागों और ब्लागों से पत्रिकाओं का सफर सहज ही पूरा कर लेती है। फेसबुक के इस अभिव्यक्ति परक मंच ने कविता को डायरी से निकालकर जन सामान्य तक पहुँचा दिया। धीरे-धीरे यह मंच अभिव्यक्ति का विशेष मंच बन गया। यहाँ कविता, कहानी, आलोचना, रचनाकार की लेखिनी से सीधे निकलकर जन सामान्य के बीच में होती है।

स्त्री लेखन का व्यापक परिदृश्य किसी विशेष मंच का मोहताज नहीं। स्त्री लेखन आज का लेखन नहीं, वह शाश्वत है, मनुष्य अपने जीवन की पहली कविता अपनी माँ से सुनता है। चाहे वह अनपढ़ हो या पढ़ी लिखी। हर स्त्री में कवि हृदय छुपा होता है, हँसते-गाते, गुनगुनाते स्त्री की सहज भावाभक्ति का सीधा संचरण फेसबुक पर आम बात हो गयी है। यहाँ तक की ग्रामीण परिवेश की स्त्रियाँ भी बड़ी बेबाकी से अपनी बात कह रही हैं। मैंने पूर्व में लिखा है कि फेसबुक पर उभरते स्त्री-स्वरों का सबसे बड़ा झटका पुरुष वर्ग को लगा, जो बात स्त्रियों के आपसी वार्तालाप, घर-परिवार की चाहरदीवारी और ज्यादा-से-ज्यादा उसकी डायरी के पन्नों में सिमटे हुए थे। वे फेसबुक पर पुरुषों की बनायी दुनिया निखारने लगे। यहाँ तक की फेसबुक के जनक मार्क जुकर बर्ग को भी यह बात नहीं पता थी कि उनके इस आविष्कार का प्रभाव इतना गहरा होगा। फेसबुक एक चारागाह के सामान है जहाँ तमाम तरह की नस्लें है, उन्हीं में एक नस्ल है स्त्री-जो अब पूरी चारागाह में अपना पूरा हस्तक्षेप रखती है। स्त्री की अभिव्यक्ति का रास्ता उसके परिवार के द्वारा बचपन में ही रोक दिया जाता है, इतनी जोर से मत हँसो, ऐसा मत बोलो, ऐसे मत चलो, ऐसे मत बैठो। इस मानसिकता का व्यापक प्रभाव उसकी अभिव्यक्ति पर पड़ता है। वह दूसरे परिवार में जाकर भी अपनी बात नहीं कह पाती। जॉन स्टुअर्ट मिल के अनुसार -"पुरुष अपनी स्त्रियों को एक बाहय गुलाम की तरह नहीं बल्कि एक इच्छुक गुलाम की तरह रखना चाहते हैं, सिर्फ गुलाम ही नहीं, बल्कि पसंदीदा गुलाम इसलिए उनके मस्तिष्म को बंदी बनाए रखने के लिए उन्होंने सारे संभव रास्ते अपनाएँ हैं।"